वेद का तत्वज्ञान : सही अर्थ

चंद्रशेखर चिपळुणकर

यह किताब जगद्गुरूत्तम श्री कृपालुजी महाराजजी (१९२२ - २०१३)
द्वारा दिये गये उपदेश पर आधारित है।
लेकिन ईस्लाम से तुलना और कुछ उदाहरण लेखक ने अपनी ओर से दिये है।

बहुत से लोग पूछते हैं 'कौन सा बेहतर धर्म है? हिंदू या इस्लाम? '

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp+ 91 9423209132

यहा ये जानना आवश्यक है कि ईश्वरीय शक्ति आपको नियंत्रित करती है और वह ईश्वरीय शक्ती सार्वभौम है। वह ईश्वर परम स्वतंत्र है। वह आपकी सोच के अनुसार नही चलता बल्कि उसके कानून के अनुसार हमे चलना होता है। आपकी सोच आपके ऊपर निर्भर है। आपका धर्म क्या कहता है, आपके धर्म पर निर्भर है।

ईश्वरीय कानून कोई मनुष्य, समुदाय या धर्म से निर्धारित परिभाषा से मान्य होने की अपेक्षा नही रखता। कोई भी अपने नियमों में ईश्वर को नही बांध सकता । हमे ईश्वर के नियम समझने पडेंगे। यदि कोई धर्म ईश्वरीय कानून के विपरित शिक्षा देता है तो उसके अनुयायीयों का धर्म में विश्वास काम नही देगा। बल्कि ईश्वरीय कानून के अनुसार सजा भुगतानी पडेगी।

ईसलिए 'वही धर्म बेहतर है जो सार्वभौमिक ईश्वरीय कानूनों को अधिक सही ढंग से परिभाषित करता है।'
इस प्रकार यदि दो धर्म विरोधी मत प्रस्तुत करते हैं, तो आपको चुनाव करना होगा।

उदाहरण के लिए कहें कि एकमात्र धर्म जो पुनर्जन्म का दावा करता है वह हिंदू है। इस्लाम का दावा है कि कोई पुनर्जन्म नहीं होता। क्या सही है? दोनों सही नहीं हो सकते। और यदि कोई सही है तो दूसरों के अनुयायियों को गलत दर्शन से प्रभावित होने का एक बड़ा खतरा है, जो उस धर्म के धर्मग्रंथों के दावों के बावजूद गलत धर्म के अनुयायियों को असंख्य दुख पहुंचाएगा। वे दावे

ईश्वरीय दायरे से समर्थित नहीं हैं और इसलिए वे दावे कोई मायना नही रखते।

आपको चुनाव करना होगा, विश्वास में बदलाव कभी भी किसी पेनल्टी से युक्त नहीं होगा बशर्ते कि बदलाव गलत से सही दिशा में होऔर न कि उल्टी दिशा में हो। एक बुनियादी समझ यह है कि आप अपने झुग्गी को एक आधुनिक फ्लैट के बदले छोड़ देंगे। आप यह तर्क नहीं देंगे कि 'मैं झुग्गी में पैदा हुआ था, इसलिए मैं अपना पूरा जीवन झुग्गी में गुजारुंगा'।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

यह तय करने के लिए कि पुनर्जन्म मौजूद है या नहीं, हमें दो पहलुओं पर विचार करने की आवश्यकता है। एक ईश्वर से संबंधित है और दूसरा आधुनिक विज्ञान से संबंधित है जो कहता है कि ऐसे व्यक्तित्व की कोई आवश्यकता नहीं है.

आइए पहले ईश्वर से संबंधित पहलुओं पर विचार करें।

ईश्वर के पास असंख्य शक्तियाँ और विशेषताएँ हैं। यह उसे अद्वितीय चरित्र प्रदान करता है। उसके बराबर या उससे श्रेष्ठ कोई नहीं है। इसलिए वह अपनी तरह का अकेला है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

ईश्वर के कुछ महत्वपूर्ण गुण हैं
1. सर्वव्यापी - हर जगह मौजूद
2. सर्वज्ञ - सब कुछ जानता है
3. सर्वव्यापी - सभी शक्तिशाली
4. अनंत सुख, अनंत जीवन, अनंत ज्ञान से परिपूर्ण।

इस प्रकार होने के कारण वह कोई अन्याय नहीं कर सकता क्योंकि कोई भी उसे धोखा नहीं दे सकता है और क्योंकि उसे किसी से किसी चीज की आवश्यकता नहीं है या कोई भी उसे किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुंचा सकता है; वह सबके साथ बराबर व्यवहार करता है।

अब, कुछ सवाल हैं।
1. कुछ अमीर दूसरे गरीब क्यों हैं?
2. कुछ अधिक सक्षम और अन्य कम सक्षम क्यों हैं?
3. कुछ को अच्छे अवसर क्यों मिलते हैं और दूसरों को नहीं?
4. कुछ मुसलमान, कुछ हिंदू क्यों हैं?

5. क्यों, क्यों, क्यों ..... कई क्षेत्रों में .....
यदि आप पुन: जन्म पर विचार नहीं करते हैं, तो सारा दोष ईश्वर पर होगा और वह
नीचे के रूप में दिखाई देगा ।
1. पक्षपाती
2. निर्दयी
3. अन्यायी
जो सत्य नहीं है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

और यदि आप पुनर्जन्म पर विचार करते हैं, तो सारा दोष आत्मा पर होगा।

आपको जो मिलता है वह पहले के जीवन में आपके स्वयं के कार्यों का परिणाम है। आपकी बुरी स्थिति का तात्पर्य है कि आपने पहले के जीवन में दूसरों के साथ अन्याय किया है। पुनर्जन्म एक सरल कहावत के साथ सब कुछ समझाता है 'जैसी करनी वैसी भरनी।'

इस प्रकार भगवान के सभी गुण बरकरार हैं।

अब इस्लाम को सवाल है -
'भगवान या खुदा के सभी गुणों को कैसे उचित ठहराया जा सकता है जबकी इस दुनिया में मौजूद अन्याय, अत्याचार, असमानता, पीड़ाओं को हम देखते हैं?'

इस्लाम के पास कोई जवाब नहीं है। हिंदू जबाब देताहै। क्या पुनर्जन्म सिर्फ जीवन की विविधता की व्याख्या करता है या इसके समर्थन करने के लिए कोई अंतर्निहित सिद्धांत है?

कृष्ण कहते हैं, 'कोई भी मौजूदा तत्व कभी भी अस्तित्वहीन नही हो सकता और कोई भी गैर-मौजूदा तत्व कभी भी अस्तित्व में नहीं आ सकता।'

ये सिद्धांत अधुनिक ऊर्जा तथा द्रव्य संरक्षण के सिद्धांत से मिलता जुलता है। अंतर इतना है कि हिंदु सिद्धांत ऊर्जा तथा द्रव्य इन जड पदार्थों के साथ चैतन्य तत्व का भी समावेश करता है। माया (प्रकृति)ऊर्जा तथा द्रव्य का संग्रह है अतएव जड है। भगवान और जीव चैतन्य तत्व है। जड़ पदार्थ तो हम जानते है - जैसे पत्थर आदि। चैतन्य तत्व वे होते है जो खुद जीवित रहते तथा जब तक रहते है तब तक जड़ शरीर को भी चैतन्य प्रदान करते है। जब जीव शरीर से निकल जाता है तो हिलने डुलने वाला शरीर अपनी मूल जड़ अवस्था को प्राप्त हो जाता है जिसे हम शव कहते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

ईसी प्रकार ईश्वर, जीव और प्रकृति (माया, निसर्ग) ये जो तीन मौजूदा तत्व हैं, कभी भी अस्तित्वहीन नहीं हो सकते। इसलिए भी जीव का पुनर्जन्म उचित है। इसमें ईश्वर एक तथा माया एक और जीव अनंत संख्या में है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि ईश्वर सभी शक्तियों का घर है। ईश्वर इस जटिल ब्रह्मांड को बनाने के लिए प्रकृति या माया (निसर्ग) को शक्ति प्रदान करता है। संक्षेप में दुनिया का निर्माण माया द्वारा होता है। माया जो ईश्वर द्वारा सशक्त होती है वह निम्नलिखित क्रम से दुनिया का निर्माण करती है ।

1.->अहंकार -> २.पंच तन्मात्रा (आकाश, वायु, अग्नि, जल, भूमि के बीज) ->३. आकाश ->४. वायु-> ५.अग्नि

-> ६. जल -> ७. भूमि

इस्लाम विश्वके निर्माण के लिये कोइ भी सिद्धांत प्रदान नहीं करता है जबकि हिंदू करता है।

डिक टेरी एक जानेमाने लेखक है। वे द गॉड पार्टिकल सहित विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बारे में लिखे गये कई पुस्तकों के लेखक तथा सह-लेखक हैं। वह ओमनी पत्रिका के कोफ़ाउंडर हैं और उन्होंने डिस्कवर, द न्यूयॉर्क टाइम्स पत्रिका और द अटलांटिक मंथली के लिए लिखा है। कहते हैं -

"भारतीय (हिंदू) कॉस्मोलॉजिस्ट (शास्त्रों में), पृथ्वी की आयु का अनुमान बतानेमें सबसे पहले कामयाब रहे है। हिंदू शास्त्र पृथ्वी की आयु 4 अरब से अधिक वर्षोंकी बताते है जोकि अधुनिक अनुमान से मिलती है। वे परमाणुवाद, क्वांटम भौतिकी और अन्य वर्तमान सिद्धांतों के आधुनिक विचारों के सबसे करीब आए। भारत ने बहुत जल्दी, स्थायी रूप से द्रव्य के परमाणु सिद्धांत का विकास किया था। संभवतः ग्रीक परमाणुवादी विचार भारत द्वारा प्रभावित था। फारसी सभ्यता द्वारा भारतीय सिद्धांत ग्रीसतक पहुँचा था। "

इस्लाम का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है, हिंदू विज्ञानयुक्त है ।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

अब अधुनिक विज्ञान से जुड़े पहलूओं पर विचार करे ...

विज्ञान तो सब घटनाओंके लिए कुछ ना कुछ कारण देने की कोशिश करता है, लेकिन यह नहीं जानता कि किसी व्यक्ति की स्थिति के बारे में सवालों के जवाब देने के लिए कैसे आगे बढ़ें। ऐसा क्यूं है कि किसी को अमीर घर में जन्म मिलता है तो किसीको गरीब घर में। विज्ञान के पास ऐसी कोई मशीन नही है जो ये बता सके की एक जीव गधा तो दूसरा कुत्ता क्यूं है? यदि विज्ञान ये मानता है कि बिना कारण के कार्य नही हो सकता तो उपर्युक्त बातों का भी कोई कारण होना जरुरी है। लेकिन इन सब विषयों में विज्ञान की कोई गती नही है।

विज्ञान किसी भी भावनाओं से रहित, खाने, पीने, देखने आदि जैसी सभी घटनाओं का विश्लेषण करता है। विज्ञान भावनाओं पर विचार किए बिना जैविक क्रियाओं पर विचार करता है , जबकि भावनाएं क्रियाओं का मूल हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इसका अर्थ है कि विज्ञान मूल कारण को संबोधित नहीं कर रहा है, बल्कि मूल कारण के परिणामों को संबोधित कर रहा है।

यदि आप देखें कि ब्रह्मांड के कारण के बारे में शोधकार्य की दिशा वस्तुओं से यौगिकों ओर, यौगिकों से अणुओं की ओर, अणुओं से परमाणुओं की ओर, परमाणुओं से न्यूक्लियॉन की ओर फिर न्यूक्लियॉन के उपखंडों से लेकर ईश्वर के कण तक पहुँचती हैं।

इसका मतलब है कि सृष्टी के मूल कारण की खोज में

विज्ञान स्थूल वस्तुओंस से सूक्ष्म कणों की ओर आगे बढ़ रहा हैं। सूक्ष्म तत्व स्थूल तत्व का गठन करते हैं।

भावनाएं इतनी सूक्ष्म हैं कि कोई भी उन्हें देखने में सफल नहीं है। मन जो इच्छाएं उत्पन्न करता है वह प्रेक्षणों से परे है। केवल मूर्ख ही मन की उपस्थिति को अस्वीकार करेंगे क्योंकि सभी वैज्ञानिक खोजें मानव मन का परिणाम हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

अहंकार, मैं की भावना, अभी तक ज्ञात नहीं है। अहंकार सभी के लिए महत्वपूर्ण है। विज्ञान भौतिक रूप से इसका निरीक्षण नहीं कर सकता।

विज्ञान मृत्यु के अपने विश्लेषण पर निर्भर रहता है। लेकिन मन के संबंध से जीवित कार्य कैसे संपन्न होते है ये बताने में विफल रहता है।

विज्ञान मस्तिष्क के भीतर विभिन्न सूचनाओं के हस्तांतरण को समझने में विफल रहता है। वह इकाई मन है जो विभिन्न केंद्रों पर प्राप्त सभी सूचनाओं का समन्वय करती है। अन्यथा, उदाहरण के लिए, आप जो देखते हैं वह मस्तिष्क में दृष्टि केंद्र पर रहेगा और आप जो देखते हैं उसके आधार पर कोई कार्रवाई संभव नहीं होगी क्योंकि अन्य केंद्रों के कार्यों के लिए संवाद करने का कोई तरीका नहीं है। यह संवाद मन के कारण ही संभव है।

अगर वह मन है, तो मन को किससे ऊर्जा मिलती है?

क्योंकि मन भौतिक ऊर्जा को नियंत्रित करता है। भौतिक ऊर्जा स्वयं वांछित कार्यों में तब्दील नहीं हो सकती है। अन्यथा ऊर्जा का कोई भी स्रोत एक जीवित प्राणी के रूप में व्यवहार करेगा।

इसका मतलब ये है कि जीवित रहने के लिए और भौतिक ऊर्जा पर नियंत्रण करने के लिये एक चेतन ऊर्जा का होना जरूरी है। ऐसी ऊर्जा को हम जीवन शक्ति कहते हैं। यह महत्वपूर्ण ऊर्जा मन में उत्पन्न इच्छाओं के अनुसार भौतिक ऊर्जा को निर्देशित करती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इस महत्वपूर्ण ऊर्जा का स्रोत आत्मा है। जब आत्मा मन, बुद्धी के साथ शरीर छोड़ती है , तो जीवन शक्ति खो जाती है। दिल सहित दिमाग आदि निष्क्रिय हो जाते है। एक जीवित शरीर मृत अवस्था को प्राप्त होता है। इस प्रकार शरीर को जीवित रखने के लिए आत्मा की नितांत आवश्यकता है।

एक बार आत्मा की आवश्यकता स्थापित हो जाने के बाद, पुनर्जन्म स्वयं सिद्ध हो जाता है।

चूंकि आत्मा इच्छा होने पर भी ब्रह्मांड का निर्माण नही कर सकती, इसलिए एक सर्वसमर्थ परमात्मा का होना अनिवार्य है। जरूरी है वो भगवान जो अपनी इच्छा के अनुसार ब्रह्मांड का निर्माण करेगा।

अतएव ईश्वर जैसा व्यक्तित्व अवश्य अस्तित्व में है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

भगवान के अस्तित्व को नकारने का एक और सैद्धांतिक आधार डार्विन का विकासवाद का सिद्धांत है। आइये अब इस पर विचार करे...

1. डार्विन का सिद्धांत केवल शारीरिक संरचना पर आधारित है।इसका मतलब डार्विन यह मानता है कि जीवित व्यक्ति के पास केवल शरीर है। जीवित व्यक्ति के पास मन, बुद्धि आदि कुछ नहीं है। और विडंबना यह है कि डार्विन का सिद्धांत डार्विन के बुद्धि की ऊपज है।

2. डार्विन का सिद्धांत सरल से जटिल तक शरीर की संरचना के क्रमांकन पर आधारित है। महान! हमारे पास लोहे की बहुत सरल संरचना है - पिन। लेकिन पिन से जटिल लोहे की संरचना अपनेआप बन गयी ऐसा सोचना मुर्खता है। इसके पीछे मनुष्य की बुद्धि एवं परिश्रम है। दोनों में इस्तमाल किये गये लोहे की उत्पत्ति एक ही है- पृथ्वी की पपड़ी। फिर इस बात कैसे जोर दिया जा सकता है कि जटिल जीवित संरचनाएं सरल से अपनेआप विकसित हुईं। यह क्यों संभव नहीं है कि वे एक ही स्रोत से उत्पन्न हुई हो और इसके पीछे भगवान का दिमाग हो?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

3. इस सिद्धांत का समर्थन करने वाले जीवाश्म के कालानुक्रम का तर्क देते है। यह तर्क मानता है कि पृथ्वी की परतें अब भी पृथ्वी पर उसी क्रम से बरकरार हैं जैसे वे जीवन की शुरुआत से थी। लेकिन क्या भूगर्भीय उथल-पुथल इन परतों को अरबों वर्षों तक बरकरार रखेगी? असंभव!

4. फिर मानव जाति और अन्य प्रजाति में जमीन आसमान का अंतर है। और किसी भी प्रजाति के प्राणी

मनुष्यों का कोई मुकाबला नही कर सकते। मानव जाति अंतरिक्ष की खोज कर रही है, जबकि बंदर जो मानव जाति के सबसे करीब हैं, अभी भी जंगलों की खोज कर रहे हैं !! वे घरों का निर्माण नहीं कर सकते, उनके पास कपड़े नहीं हैं और उनके पास यात्रा करने के लिए बैलगाड़ी भी नहीं है। क्या ये क्रमिक विकास है?

क्यों एक तरफ मानव जाति की मस्तिष्क क्षमताओं और दूसरी तरफ जानवरों की मस्तिष्क क्षमताओं में इतना जबरदस्त अंतर है? मस्तिष्क की क्षमताओं का क्रमिक विकास क्यों नहीं है? डार्विन के पास इस का कोई जवाब नहीं है!

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जबाब हिंदु दर्शन देता है। भगवान ने इस दुनिया को बनाया है या प्रकट किया है और केवल मानव जाति को ऐसे कर्म करने का अधिकार दिया है जिसका फल कर्म करने वाले भोगना पडता है। अन्य प्रजातियों को ऐसे कर्म करने का अधिकार नहीं है। वे प्रजाति मानव रूप में किए गए कार्यों के परिणामों को भोगने के लिए हैं।

मनुष्य योनी कर्म योनी है और बाकी सब भोग योनी है। इसलिए मनुष्यों को कर्म करने से पहले इस ज्ञान की आवश्यकता है कि सही क्या है गलत क्या है। अच्छा क्या है बुरा क्या है। पाप क्या है पुण्य क्या है। इसीलिए विशेष बुद्धि का होना अनिवार्य है। और बाकी सब प्रजाति के जीवों को केवल मानव जन्म में किये हुए कर्मों के अनुसार सुख दुःख भोगना होता है। इसके लिये कोई विशेष क्षमता की जरुरत जरूरत नही पडती। इसीलिए उनकी बुद्धि मनुष्यों की तरह विकसित नही होती।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

बहुत से लोग हिंदू धर्म की जाति व्यवस्था पर आपत्ति करते हैं और उस आधार पर भेदभाव के लिए धर्म को दोषी मानते हैं।

प्रारंभिक काल में जाति संरचना की उपयोगिता थी जो अब विभिन्न क्षेत्रों और भूमिकाओं के बढ़ने के कारण कम हो रही है। यह जाती संरचना तेजी से ढह रही है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस प्रकार का समाज हिंदू धर्मग्रंथों में वर्णित है और इसलिए जातिरहित समाज व्यवस्था का स्वीकार किया जाता है।

हिंदू धर्म में जोर भौतिकवादी लाभ पर नहीं बल्कि आध्यात्मिक लाभ पर था।भौतिकवादी लाभ तो केवल एक जन्मकाल (100 साल) तक साथ देता है। और फिर अरबों साल तक कष्ट तथा यातनाएँ सहन करनी पडती है। जबकि आध्यात्मिक लाभ इन सब कष्ट तथा यातनाओं से हमेशा के लिये छुट्टी दिलाकर दिव्यानंद का अनुभव करवा सकता है।

वेद व्यास जिनके द्वारा माना जाता है कि वेदों का संकलन किया गया है, कहते है, "शूद्र आध्यात्मिक दृष्टि से बेहतर स्थिति में है क्योंकि ब्राह्मण अत्यधिक कठोर अनुष्ठानों के माध्यम से जो हासिल करते हैं, शूद्र अपनी आसान दैनिक दिनचर्या से ही हासिल करते है ।"

यदि आप भारत के संतों या भक्तों की जाँच करते हैं तो उसमें ब्राह्मण कम हैं। और भगवान कृष्ण गीता में कहते हैं, 'मेरा भक्त, चाहे सबसे निचली जातियों में से क्यों न हो, वह किसी भी प्रकार के किसी भी उच्च जाति के ब्राह्मण से बहुत बड़ा है और ऐसा भक्त मुझे बहुत प्रिय है।'

भगवान कृष्ण ने वृंदावन की गोपियों को आध्यात्मिक क्षेत्र में सर्वोच्च पद पर रखा। और ये गोपियाँ सभी तथाकथित नीचली जाति से थी।

इस प्रकार हिंदू धर्म को दोष देने का कोई मतलब नहीं है कि यह जाति व्यवस्था पर आधारित है क्योंकि जाति व्यवस्था अब ढह रही है और हिंदू धर्म में ऐसा समाज स्वीकार्य है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

नास्तिक

चलो अविश्वास और उसके निपटने की परिभाषा पर विचार करें।

इस्लाम धर्म ईश्वर में विश्वास और इस्लाम में विश्वास के बीच एक तीव्र रेखा नहीं खींचता है। बहुत से मुस्लिम लोग अविश्वास के इस अर्थ से भ्रमित हैं कि कोई भी जो मुस्लिम नहीं है वो काफिर या अविश्वासी या नास्तिक है। हिंदू कहते हैं कि जो भगवान के किसी भी रूप को नहीं मानता वह नास्तिक है। एक बिंदु पर हिंदू दर्शन कहता है कि कोई भी अविश्वास करने वाला या नास्तिक बहस करने वाला नहीं हो सकता है। जैसा कि हर कोई खुशी चाहता है, हर कोई खुशी की उपस्थिति को स्वीकार करता है और इसलिए भगवान को स्वीकार करता है क्योंकि भगवान और खुशी ये दोनो पर्यायवाची हैं। असीम अनंत चिरकाली खुशी का दूसरा नाम भगवान है ।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

अनंत को कभी भी सीमित नहीं किया जा सकता है, लेकिन इस्लाम ईश्वर पर कुछ सीमाएं लगाता है जैसे 'ईश्वर किसी भी दृश्य रूप में नहीं हो सकता'। वास्तव में ईश्वर सर्व शक्तिमान है और जब शक्तिहीन आत्मा रूप धारण कर सकती है, तो यह कल्पना करना विडंबना होगी कि ईश्वर किसी भी रूप को धारण नहीं कर सकता। यह स्वीकार करने योग्य है कि भगवान इस्लाम में वर्णित निराकार रूप का है या ऊसका रूप नहीं है, लेकिन यह केवल अनंत विकल्पों में से एक है। इसका मतलब यह नहीं है कि भगवान किसी अन्य रूप से

मौजूद नहीं हो सकते।

इस्लाम लगभग अविश्वासियों की हत्याओं की सलाह देता है और संपूर्ण आतंकवाद इसका परिणाम है। हिंदू कहते हैं कि अविश्वासियों को नजरअंदाज किया जाना चाहिए। कारण मन दोनों ही तरीकों से जुड़ा हुआ है। प्यार और नफरत, दोस्ती और दुश्मनी। ईश्वर की तलाश के लिए वैराग्य चाहिए। इस प्रकार आप दूसरों को घृणा से मारकर भगवान को प्रसन्न करने में कभी सफल नहीं होंगे। इसलिए आतंकवाद के लिए हिंदु कोई धार्मिक समर्थन नहीं देता।

बेशक आपको बचाव करने का अधिकार है। ऐसे मामलों में हत्याएं और युद्ध में और सजा के रूप में हत्या की अनुमति दी जाती है, लेकिन ऐसे मामलों में जब झूठे बहाने पर हत्या का आदेश दिया जाता है, तो गंभीर दैवीय सजा होगी क्योंकि हत्या को महान पापों में से एक माना जाता है।
लेकिन जब कर्ण ने कृष्ण से कहा, 'मुझे मारना अन्याय है क्योंकि मेरे हाथ में हथियार नहीं है।' तो कृष्ण ने उत्तर दिया, 'अन्याय के अपराधी को अन्यायपूर्ण तरीके से मारना न्याय है।'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

बहुत से लोग हिंदू धर्म की जाति व्यवस्था पर आपत्ति करते हैं और उस आधार पर भेदभाव के लिए धर्म को दोषी मानते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

प्रारंभिक काल में जाति संरचना की उपयोगिता थी जो अब विभिन्न क्षेत्रों और भूमिकाओं के बढ़ने के कारण कम हो रही है। यह जाती संरचना तेजी से ढह रही है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस प्रकार का समाज हिंदू धर्मग्रंथों में वर्णित है और इसलिए जातिरहित समाज व्यवस्था का स्वीकार किया जाता है।

हिंदू धर्म में जोर भौतिकवादी लाभ पर नहीं बल्कि आध्यात्मिक लाभ पर था।भौतिकवादी लाभ तो केवल एक जन्मकाल (100 साल) तक साथ देता है। और फिर अरबों साल तक कष्ट तथा यातनाएँ सहन करनी पडती है। जबकि आध्यात्मिक लाभ इन सब कष्ट तथा यातनाओं से हमेशा के लिये छुट्टी दिलाकर दिव्यानंद का अनुभव करवा सकता है।

वेद व्यास जिनके द्वारा माना जाता है कि वेदों का संकलन किया गया है, कहते है, "शूद्र आध्यात्मिक दृष्टि से बेहतर स्थिति में है क्योंकि ब्राह्मण अत्यधिक कठोर अनुष्ठानों के माध्यम से जो हासिल करते हैं, शूद्र अपनी आसान दैनिक दिनचर्या से ही हासिल करते है ।"

यदि आप भारत के संतों या भक्तों की जाँच करते हैं तो उसमें ब्राह्मण कम हैं। और भगवान कृष्ण गीता में कहते हैं, 'मेरा भक्त, चाहे सबसे निचली जातियों में से क्यों न हो, वह किसी भी प्रकार के किसी भी उच्च जाति के ब्राह्मण से बहुत बड़ा है और ऐसा भक्त मुझे बहुत

प्रिय है।'

भगवान कृष्ण ने वृंदावन की गोपियों को आध्यात्मिक क्षेत्र में सर्वोच्च पद पर रखा। और ये गोपियाँ सभी तथाकथित नीचली जाति से थी।

इस प्रकार हिंदू धर्म को दोष देने का कोई मतलब नहीं है कि यह जाति व्यवस्था पर आधारित है क्योंकि जाति व्यवस्था अब ढह रही है और हिंदू धर्म में ऐसा समाज स्वीकार्य है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

आइए देखते हैं कि हिंदू और इस्लाम में विवाह को कैसे संबोधित करते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

हिंदू विवाह को एक पवित्र बंधन मानता हैं और इसे समाप्त करने की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ता। तलाक की कोई प्रक्रिया नहीं है।

दूसरी ओर, इस्लाम इसे एक भौतिक संबंध के रूप में संबोधित करता है और एक तरफा ट्रिपल तलाक के माध्यम से तोड़ने की अनुमति देता है।

हिंदू महिलाओं को उनकी वैवाहिक स्थिति के बारे में पूरी सुरक्षा देता है जबकि इस्लाम उन्हे पति की इच्छा पर छोड़ देता है।

बाहरी कपड़ों और उपस्थिति के बारे में भी हिंदू अधिक लचीला है।

ऐसा कोई उदाहरण नहीं हैं कि कोई हिन्दू महिला कार्यालय में 'घूँघट' पहनने के लिये लड रही हों।

लेकिन हमें कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहां मुस्लिम महिलाएं हिजाब और बुरखा पहनने के लिए लड़ती हैं। मुस्लिम पुरुष दाढ़ी रखने के लिए लड़ते हैं।

यह मज़ेदार है क्योंकि पहली जगह में सभी धर्मों के महिला और पुरुष अपने धर्म की अवज्ञा कर रहे हैं जब वे विदेश में काम करने के लिए जाने का फैसला करते हैं या जब महिला और पुरुष एक दुसरे से घुलमिल जाते है। कोई कोई तो शराब आदि का सेवन भी करते है। इन

गतिविधियों में से कोई भी शास्त्रों में वर्णित नहीं है। फिर बाहरी पहेराव से शास्त्रों को मानने का पाखंडी दिखावा क्यों किया जाए? वे किसे धोखा दे रहे हैं? परमेश्वर को?

वास्तव में बोलना, बाहरी पहेराव महत्वपूर्ण नहीं है। बाहर का पहेराव, रहन सहन में सादगी होना जरूरी है। भगवान का स्मरण अंदर से करना मायना रखता है। भगवान को मन से अपना मान कर उससे प्यार करना महत्वपूर्ण है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

स्वर्ग और परमेश्वर का लोक इनके बीच क्या अंतर है? क्या वे समान हैं?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

स्वर्ग आपके अच्छे और परोपकारी कार्यों के लिए या पुण्य कर्मों के लिए एक पुरस्कार है। चाहे पुण्य कर्म हो या पाप कर्म हो, हर मायिक कर्म का फल सीमित होता है। इसीलिये स्वर्ग परीमित दायरे में आता है।

स्वर्ग में आपको विभिन्न प्रकार के कामुक सुख प्राप्त होंगे। हालांकि, अंत में, अपने इनाम का उपभोग करने पर, आप को इस दुनिया में वापस फेक दिया जाता हैं; वो भी कुत्ते, बिल्ली, गधे आदि योनी में जाना पडता है। यह कोई स्थायी समाधान नहीं है।

हिंदू स्वर्ग की अत्यंत निर्भत्सना करता है। कृष्ण कहते है जो लोग स्वर्ग के लिए प्रयास करते हैं वे महामूर्ख है।

ईश्वर का लोक अनंत क्षेत्र में है। एक बार मिलने पर हमेशा के लिए मिल जाता है।

इस्लाम जन्नत (स्वर्ग) और ईश्वर के लोक के बीच स्पष्ट भेद नही देता।

एक और तर्क जो इस्लाम से नहीं आ रहा है, वह ये कि इस दुनिया की आवश्यकता क्या थी? परमेश्वर ने कैसे अपने बच्चों को इस तरह की दयनीय अवस्था में रखा?

हिंदू से जवाब आता है - 'भगवान ने कभी इस दुनिया को नहीं बनाया। यह दुनिया अनादि काल से अस्तित्व में

है। ये कोई नई रचना नहीं है। कोई नई रचना हो ही नहीं सकती। वही दुनिया ईश्वर के अंदर से प्रकट होती है ताकि आत्माएं असीम ईश्वरीय सुख की तलाश करें। एक बार अपनी उपयोगिता खो जाने पर वही दुनिया ईश्वर में वापस लीन हो जाती है। फिर से इस दुनिया को भगवान में विश्वास के उपयुक्त वातावरण के साथ प्रकट किया जाता है। इस प्रकार दुनिया के बनने बिगडने का क्रम अनंत काल तक चलता रहेगा ।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

यह सच है कि हिन्दू एवं ईस्लाम दोनों धर्मों के आध्यात्मिक साधक उचित आध्यात्मिक मार्ग का पालन करने पर ईश्वर के दिव्य जगत में प्रवेश प्राप्त करेंगे और हमेशा के लिए ईश्वरीय आनंद परिपूर्ण होकर पूरी तरह से संतुष्ट हो जाऐगे।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

यहां फिर से इस्लाम दिव्य ईश्वरीय जगत का विवरण नहीं देता। ईश्वरीय आनंद व्यापक रूप से तीन प्रमुख वर्गों में वर्गीकृत किया गया हा।
1. ब्रह्मानंद (निराकार भगवान के साथ आत्मा की एकता से)
2. परमात्मिक आनंद। (साकार भगवान को देखने से)
3. प्रेमानंद। (साकार भगवान से प्यार के संबंध से)

इस्लाम केवल पहले एक की चर्चा करता है। जबकि हिंदू तीनों की बात करता है। सभी विकल्प अनंत प्रदान करते हैं, कभी भी खुशी समाप्त नहीं होगी लेकिन रस की गुणवत्ता अलग-अलग होगी।

प्रत्येक खंड में कई कक्षाएं हैं। लेकिन ऊपर दिया हुआ व्यापक वर्गीकरण यह तय करने में मदद करेगा कि आप आध्यात्मिक क्षेत्र में कहां जाना चाहते हैं।

यदि आप भगवान के साथ आत्मा के विलय के माध्यम से भगवान के साथ आत्मा की एकता में रूचि रखते हैं तो पहला विकल्प आपका लक्ष्य होना चाहिए। ब्रह्मानंद के इस विकल्प में आपका मन मृत अवस्था में रहता है और आप बिना किसी इंद्रियों के केवल आत्मा के रूप में रहते हैं। मन अनंत खुशी लाने में बाधा है। इसे मारकर समस्या हल हो जाती है। इस तरह आप दिव्य प्रकाश के

माध्यम से पूर्ण शांति एवं आनंद का अनुभव करते हैं।

यदि आप अपने शरीर और मन को बरकरार रखना चाहते हैं और उन्हें प्राकृत से दिव्य बनाना चाहते हैं तो आप दूसरे और तीसरे विकल्प का चयन कर सकते हैं।

तीसरा विकल्प सबसे अच्छा है क्योंकि जब हमारा भगवान के साथ कोई रिश्ता जुड जाता है तो हम भगवान के साथ वैसा ही व्यवहार कर सकते है जैसा कि हम इस जगत में राजा, स्वामी, मित्र, बेटा, प्रियतम के साथ व्यवहार करते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इस प्रकार भगवान के साथ आत्मा का विलय एक विनाशकारी तरीका है जिसमें मन बुद्धि को मार दिया जाता हा जबकि भक्ति एक रचनात्मक तरीका है जिसमें मायिक मन बुद्धि को दिव्य बनाया जाता है।

यह पहले से ही कहा गया है कि तीनों विकल्प अनंत खुशी से युक्त है लेकिन रस की गुणवत्ता विभिन्न है। हिंदू सबसे ऊपर प्यार के माध्यम से मिलनेवाले प्रेमानंद को रखता है। और सबसे नीचे सबसे नीचे के निराकार भगवान के साथ एकता से मिलनेवाला ब्रम्हानंद। आप जो पसंद करते हो उसके लिए प्रयास कर सकते हो।

ये अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के लिए महत्वपूर्ण है। इनकी अनुपस्थिति में आध्यात्मिक उम्मीदवार के मन की शंकाओं का निरसन नही होगा और वह भगवान की ओर नही चल पाएगा।

हिंदू और इस्लाम के बीच एक विरोधाभास मांसाहार के बारे में है। इस्लाम इसे अनुमति देता है जबकि हिंदू इसे तामस टैग के तहत रखता है और इसके परिणाम के रूप में नरक घोषित करता है। हमारा सिद्धांत ये है कि भगवान निष्पक्ष है और इसलिए धर्म के आधार पर उसके निर्णय में अंतर नहीं आ सकता। इसलिए हमें चर्चा करने की आवश्यकता है। मांसाहार अनिवार्य रूप से उसको दर्द से प्रभावित करता है जिसे मारा जाता है। दूसरों को दर्द देना पाप है और हर पाप दंडनीय है। इस प्रकार मांसाहार करना ये किसी भी धर्म के किसी भी सिद्धांत के बावजूद दंडनीय है। फल और सब्जियों के कोई दर्द नहीं है। इसलिए मांसाहार दंडनीय है और शाकाहारी दंडनीय नहीं है। इस मामले में भी हिंदू आपके लिये फायदेमंद है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

आध्यात्मिकता की समस्या जटिल है क्योंकि खुशी के लिए सबकुछ किया जाता है और हमें भगवान के अलावा सब में खुशी मिलती है, हमें भगवान को याद रखने में कोई खुशी नहीं होती है, इसलिए हम उसे याद नहीं करते हैं। बिना भगवान को याद किये खुशी की समस्या हल नही हो सकती।

इस पहेली को कैसे हल करें? उत्तर है - 'उचित निर्णय लेने के माध्यम से'। हम दिन में कई चीजें करते हैं जो हमें पसंद नहीं होती है। छात्र परीक्षा के दिनों में कड़ी मेहनत करते हैं, भले ही उस दिन उनका सबसे मनपसंद खेल की मैच हो या कोई अन्य ऐसी घटना हो जो उनको बहुत अच्छी लगती हो। लेकिन बुद्धी का ये निर्णय कि अध्ययन अधिक महत्वपूर्ण है, उन्हें मन की खुशी के खिलाफ अध्ययन करवाता है जो अपना पसंदीदा

कार्यक्रम का आनंद लेता चाहता है।

इसी तरह अगर हमारी बुद्धी ये भलीभाँती समझ ले कि भगवान को याद रखना बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आपको सभी प्रकार के दुःख तथा मृत्यु आदि से छुटकारा देकर असीम आनंद से सदा के लिये मालामाल कर देगा तो मन अवश्य भगवान को याद करेगा। स्मरण किसी भी भावना से जुड़ा हो सकता है - क्रोध, ईर्ष्या, लालच, प्रलोभन, प्यार, घृणा आदि। चूँकि भगवान शुद्ध है उन्हे चाहे किसी भी तरीके से मन में लाओ वे उस अशुद्ध मन को शुद्ध करेंगे। लेकिन प्रवाहित होनेवाली अनंत खुशी की गुणवत्ता भावना के अनुसार बदल जाएगी। हिंदू कहता हैं कि प्यार से भगवान को याद रखना ये सर्वोच्च कक्षा का शाश्वत आनंद पाने का सबसे अच्छा तरीका है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इसके अलावा, हिंदू पूरी तरह से समझता है कि आध्यात्मिक अभ्यास को मजबूरी से नहीं करवाया जा सकता है क्योंकि व्यक्ति केवल बाहरी क्रियाओं को बल से बदल सकता है, मन की आंतरिक सोच को नहीं। और आध्यात्मिक अभ्यास पूरी तरह से मन पर निर्भर करता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

एक बार, भगवान राम ने अयोध्या के सभी निवासियों को अपने प्रवचन के लिए आमंत्रित किया। शुरुआत में उन्होंने कहा कि मैं चाहता हूं कि आपको कुछ सलाह दें। लेकिन यह मत सोचो कि मेरी शक्ति या राजा के रूप में मेरी श्रेष्ठता स्थिति के कारण आप मेरी सलाह मान लें । कोई जबदस्ती नहीं है। मानना या न मानना यह पूरी तरह से आप पर निर्भर है। मैं जो उपदेश देता रहा हूं यदि आप इसे पसंद करते हैं, तो इसे स्वीकार करें अन्यथा इसे छोड़ दें और जो भी आपको सही लगे उसे करें। भगवान राम तब कहा, देखिये, मैं ही आपका सच्चा रिश्तेदार हूँ। मैं आपका सच्चा पिता, माता, भाई, पति, पुत्र और अन्य सभी संबंधी हूं। आप अपने आप को मुझे समर्पित करो।

इस प्रकार हिंदू धर्म में बल का कोई प्रयोग नहीं है। लोग निराकार ईश्वर की या ईश्वर के किसी भी रूप की पूजा करने के लिए स्वतंत्र हैं। इसीलिए भारत में आपको सभी प्रकार के उपासक मिल जाएंगे। लोग विभिन्न भगवान की पूजा करते हैं और जानते हैं कि एक ही भगवान के अलग-अलग रूप हैं। यही कारण है कि आज सभी उपासक एक साथ शांति से रह रहे हैं।

इसीलिए यदि कोई मुस्लिम कृष्ण की पूजा करता है या

कोई मुस्लिम हिंदू भक्ति गीत इत्यादि गाता है तो भय और बल का कोई उपयोग नहीं होना चाहिए।

दुर्भाग्य से, भारत में, हिंदू से संबंधित किसी भी धार्मिक अभ्यास करने वाले किसी भी मुस्लिम को मुस्लिम समुदाय से मार्च, फतवे और दमन के अन्य उपायों का जबरदस्त विरोध मिलता है। ये सभी लोग अल्लाह की ओर जानेवाले व्यक्ति को रोकने का या उस व्यक्ति को परेशान करने का अपराध कर रहे हैं जो भगवान की महिमा गाना चाहता है।

चूँकि ईश्वर और अल्लाह एक ही हैं, ये लोग वास्तव में किसी को अल्लाह के पास जाने से रोक रहे है और इसलिए ये सभी तथाकथित इस्लाम के स्वयंभू संरक्षक मरने के बाद तेज तलवार पर यात्रा करते समय जोजक (नर्क) में गिरते हुए पाएंगे। उस समय उन्हें एहसास होगा कि हिंदुओं ने भी अपने तरीके से अल्लाह की पूजा की।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

कृष्ण बेहद आकर्षक और मनभावन रूप में अल्लाह ही हैं।

जीते जी इसे समझले तो बेहतर है, अन्यथा जीवन समाप्त होने के बाद, दु: ख, पीड़ा और पश्चाताप का कोई अंत नहीं होगा।

जो भी सुधार किए जाने हैं वे तभी किए जा सकते हैं जब व्यक्ति के पास मानव रूप में जीवन बचा हो। ईश्वर को याद करने में जीवन बिताएं और किसी भी धर्म के खिलाफ लड़ने में जीवन व्यतीत न करें क्योंकि सभी धर्म एक ही ईश्वर या अल्लाह या भागवान की ओर इशारा

उन सभी धर्मों पर विचार करें जो दावा करते हैं कि भगवान मूर्ति में नहीं हो सकते हैं। ठीक है।
अगर हम उनसे पूछते हैं,' क्या आपका धर्म स्वीकार करता है कि भगवान हर जगह मौजूद है? '
जवाब है, 'निश्चित रूप से हाँ!'
हिंदू भी कहता है कि ऐसी भी जगह या वस्तु नही है जहा भगवान मौजूद न हो। भगवान सबकुछ व्याप्त करता है।
'लेकिन यह चर्चा मूर्ति के बारे में है, है ना?
'क्या मूर्ति सब कुछ में शामिल नहीं है? सबकुछ! सबकुछ का मतलब है सबकुछ! मूर्ति सबकुछ में शामिल है!'
'चूँकि ईश्वर हर जगह मौजूद है और मूर्तियों को हर जगह शामिल किया जाता है, इसका मतलब है कि यह स्वीकार करने में कोई समस्या नहीं है कि ईश्वर मूर्ति में है।'
'लेकिन भगवान की मूर्ति नहीं हो सकती'।
'यह विरोधाभास है। अगर ईश्वर मूर्ति में मौजूद है, तो मूर्ति बहुत अच्छी तरह से भगवान का प्रतिनिधित्व कर सकती है। समस्या कहां है? '
www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132
'मक्का, मदीना, यरूशलेम क्या है?'
'पवित्र शहर!'
'कुछ धर्मों का कहना है कि किसी को इन शहरों के लिए तीर्थयात्रा क्यों लेनी चाहिए?'
भगवान को एक शहर में क्यों सीमित करना चाहिए और मस्जिदों , चर्चों , प्रार्थनास्थलों का क्या प्रयोजन?
'भगवान इन शहरों तक ही सीमित नहीं है, ल
वह हर जगह मौजूद है ।'
'ओह! यदि वह हर जगह मौजूद है, तो वह आपके घर में भी मौजूद है। क्या आपके घर में भगवान मौजूद है पवित्र शहरों में मौजूद भगवान से अलग है? '

' 'नहीं, एक ही भगवान हर जगह मौजूद है!'
'अगर घर में भगवान मौजूद हैं, तो बताइएं कि हज करना अनिवार्य क्यों है? घर में भगवान की पूजा क्यों नहीं की जा सकती? क्यों? '
'ताकि हम ईश्वर को कम से कम सोचें कि हम भगवान के शहर में है।'
'तब समस्या क्या है जब हिंदू कहता है कि जब आप मूर्ति देखते हैं तो आप ईश्वर को सोचते हैं कि भगवान मूर्ति में मौजूद है? मूर्ति पत्थर की या किसी और चीज से बनी हो। हिंदू का कहना है कि मूर्ति सिर्फ बाह्य उत्तेजना है जो हमे भगवान की याद दिलाती है। '

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इस चर्चा से यह पता चलता है कि
1. भगवान हर जगह मौजूद है, इसलिए वह मूर्ति में मौजूद है।
2. चूंकि ईश्वर मूर्ति में मौजूद है, इसलिए मूर्ति पूजा सभी धर्मों के लिए स्वीकार्य है, जो अनुयायी इसके विपरीत दावा करते हैं वे अपने धर्म के खिलाफ बोल रहे है क्यूंकि हर धर्म कहता है कि भगवान हर जगह मौजूद है। ऐसे लोग धर्म के पवित्र पुस्तकों में लिखे गए उस वाक्यों के खिलाफ बोल रहे हैं जो कहते है कि ऐसा एक भी परमाणु नहीं है जिसमें भगवान मौजूद नही हैं। उन्हें दंड मिलेगा क्योंकि वे अपने अल्लाह या भगवान का अनादर करने का गंभीर पाप कर रहे हैं।

अब सवाल उठता है, 'भगवान, अल्लाह हर जगह मौजूद है और इसलिए वह सभी जीवित प्राणियों में भी मौजूद है। क्या इसका मतलब यह है कि किसी भी पुरुष या महिला या कोई अन्य जीवित प्राणी भगवान या अल्लाह का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं?'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

अगर कोई 'नहीं!' कहता है, तो वह अपने धर्म के विपरीत बोल रहा है क्योंकि वह पवित्र धर्मग्रंथों के इस बयान को स्वीकार नहीं कर रहा है कि अल्लाह, भगवान हर जगह मौजूद है और सब चीज में मौजूद है।

इसलिए जवाब बड़ा है हाँ! सतयुग वगैरा में ऐसे उदाहरण हैं जहां पत्नी ने संसारी पति को भगवान के रूप में पूजा करके दिव्य आनंद प्राप्त किया। क्योंकि पत्नी ने पति में भगवान के बारे में सोचा, वह भगवान की कृपा पाने में सफल रही। पति शाश्वत आनंद प्राप्त नहीं कर सका क्योंकि उसने कभी भी अपना दिमाग भगवान पर ध्यान केंद्रित नहीं किया। लेकिन इस युग में मायिक व्यक्ति की पूजा करना असंभव है क्योंकि भौतिक व्यक्ति कमियों से भरा है और ऐसे व्यक्तियों के व्यवहार को सीधे भगवान द्वारा नियंत्रित नहीं किया जाता है जबकि संतों को सीधे भगवान द्वारा नियंत्रित किया जाता है। सीधे भगवान द्वारा नियंत्रित किया जा रहा है इसलिए संतों के फैसले सही हैं जबकि भौतिक व्यक्तियों के फैसले गलत होते हैं। ऐसा व्यवहार एक जीवित व्यक्ति में ईश्वरीय भावना नही बनने देता है। अतः इस युग में भौतिक व्यक्ति की पूजा भगवान के रूप में निषिद्ध है। मूर्तियाँ उपासक को परेशान नहीं करती हैं। इसलिए मुर्ति पूजा दिव्य आनंद प्राप्त करने के तरीके में से एक है।

इस प्रकार मूर्ति पूजा के खिलाफ कोई धर्म नहीं हो सकता। हर धर्म का कहना है कि भगवान सर्वव्यापी है, जिसका अर्थ है कि ईश्वर मुर्ति में मौजूद है और पूजाकर्ता मुर्ति में मौजूद सर्वव्यापी भगवान की पूजा कर सकता है।

लेकिन मुर्ति में व्याप्त भगवान को याद रखने पर ध्यान देना चाहिए। मुर्ति की तरह भगवान की किसी भी तस्वीर या राम, कृष्ण आदि का चित्र भगवान को याद रखने की समस्या को काफी हद तक हल करता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

भगवान, अल्लाह, गॉड हर जगह और हर वस्तु में मौजूद है। इसलिए भगवान, अल्लाह की किसी भी रूप में पूजा की जा सकती है। हिंदू इस तथ्य का पूर्ण लाभ लेता है। हिंदू पेड़, नदी, सूर्य, चंद्रमा, ग्रह, पृथ्वी, पहाड़ इत्यादी की पूजा की अनुमति देता है। केवल इतना ही नही, हिंदू प्राकृतिक घटनाओं का भी उपयोग ईश्वर की उपासना के लिए करता है जैसे पूर्णिमा, सौर और चंद्र ग्रहण, सूर्य की गति में परिवर्तन इत्यादि। वास्तव में सप्ताह के प्रत्येक दिन को कोई ना कोई भगवान के लिए माना गया है। इसका उद्देश्य हर समय को भगवान को याद रखना है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ईश्वर हर व्यक्ति में मौजूद है, क्योंकि पूरे ब्रह्मांड में ऐसी कोई जगह नहीं है जो भगवान से रहित है। किसी भी धर्म का कोई पवित्रशास्त्र नहीं कहता कि भगवान केवल अपने धर्म के लोगों में मौजूद हैं। इसका मतलब है कि एक ही भगवान या अल्लाह या गॉड हिंदु, मुस्लिम, ईसाइ, सिख, भारतीय, अमेरिकी, रूस, अफ्रीकी, अमीर, गरीब, राजा, भिखारी, बच्चा, युवा, बुढा, पुरुष, महिला आदि सब में मौजूद हैं। इस पृष्ठभूमि के साथ यह कहा गया है कि जब कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को, चाहे वो किसी भी धर्म का हो, शारीरिक या मानसिक दुःख देता है तो भगवान, अल्लाह इसे नोट करता है और गंभीर सजा देता है। सजा इस जीवन में या बाद के जीवन में मिलती है। इस प्रकार जो लोग केवल अलग धर्म के कारण या अन्य कारणवश दूसरों को मारते या परेशान करते हैं , उन्हें नरक मिलता है और वो भी उसी परमेश्वर द्वारा जिस पर वे विश्वास करते हैं।

संक्षेप में मूर्ति पूजा और हिंदू में वर्णित पूजा के अन्य सभी तरीके भगवान का असीम सुख प्राप्त करने में अत्यंत उपयुक्त हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

हिंदू कुछ और स्पष्टीकरण प्रदान करता है।

सूक्ष्म दुनिया और स्थूल दुनिया की सिद्धांत।

जो कुछ भी हम देखते हैं वह एक स्थूल दुनिया है। इसमें सब सजीव और निर्जीव वस्तुएँ शामिल हैं। महासागर, पहाड़, सितारे, ग्रह, पेड़, जानवर आदि। इनका भौतिक अनुभव होता है। ये दुनिया सबको एकसी दिखाई देती है। जैसे पहाड सबको पहाड ही दिखाई देता है। ऐसा नही है कि एक को पहाड तो दूसरे को वही पहाड नदी या कुछ और दिखाई देगा। इसलिए स्थूल दुनिया वास्तविक है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

दूसरी एक सूक्ष्म दुनिया है जो मन में रहती है। इस सूक्ष्म दुनिया का कमाल है कि एकही वस्तु किसी को अच्छी तो किसी खराब लगती है। मतलब ये कि एकही बाह्य वस्तु या व्यक्ति सबको एकसा सुख नही देती है, इसलिए यह सूक्ष्म दुनिया व्यक्ति के कल्पनाओं पर निर्भर करती है।

सूक्ष्म दुनिया खुशी, दुःख, पसंद, नापसंद से संबंधित विचारों या अवधारणाओं की दुनिया है जो हर व्यक्ति के लिए अलग अलग हो सकती है। इसलिए यह सूक्ष्म दुनिया अवास्तविक है और अपनी इच्छा पूर्ण होने या ना होने के आधार पर आपको सुखी या दुखी बनाती है।

पूरी समस्या यहां निहित है। चूंकि यह दुनिया अवधारणाओं पर आधारित है, इसलिए यह बदलती रहती है। एकही व्यक्ति के मूड और निर्णय भी बदलते रहते हैं। मिलनेवाली खुशी के अनुसार सब निर्णय लिये

जाते है। यहां तक कि प्यार, परोपकारिता भी खुशी की प्राप्ती पर आधारित है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जिस वस्तु या व्यक्ति से हमे सुख मिलता है, उससे हमारा लगाव हो जाता है। इसी लगाव को प्यार कहते है।

वास्तव में प्यार खुशी के सीधे आनुपातिक है। अधिक खुशी तो अधिक प्यार ये समीकरण है। अवधारणा बदलने पर प्यार कम जादा होता है। इसलिए यह महसूस करना चाहिए कि खुशी के नाम पर जो भी प्राप्त होता है वह एक वैचारिक खुशी है। कोई सब्जी किसी को अच्छी लगती है तो किसी को नही। इसी प्रकार कोई भी वस्तु सबको एकसा सुख या दुःख नही देती है। इसका मतलब यह है की खुशी भौतिक वस्तुओं में कभी नहीं होती बल्कि व्यक्ति की कल्पना या अवधारणा में होती है। सूरज में प्रकाश है क्योंकि सूरज सबको एकसा प्रकाश देता है। उसी प्रकार यदि भौतिक वस्तुओं में सुख होता तो सबको एकसा मिलता। लेकिन अवधारणाएं इतनी पक्की हैं कि वे आपको महसूस करवाती हैं कि बाहरी वस्तुओं में खुशी है। असली सुख कभी खत्म नहीं होता। इस खुशी की अवधारणा को दिव्य भगवान की ओर मोड देना चाहिए। यही काम करेगा। हिंदू कहता हैं कि आपकी सारी भावनाएँ भगवान के लिये बनाओ। आपको पिता चाहते हैं? भगवान आपके पिता हैं। न केवल पिता, वह आपके लिए सबकुछ है। वह आपकी मां, भाई, बहन, दोस्त, प्रेमी है। आप मन से उसके साथ कोई भी संबंध विकसित कर सकते हैं। भगवान को सोचने से ही मन का शुद्धिकरण करता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

"भगवान का रुप नहीं है या भगवान का रुप नहीं हो सकता", ये कथन सही है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

यदि आप हिंदू और इस्लाम सहित सभी धर्मों के धर्मग्रंथों की जांच करते हैं, तो वे सर्वसम्मति से इस पर सहमत होते हैं कि ईश्वर ने इस ब्रह्मांड को बनाया है।

भगवान ने कुछ नियम स्थापित किए ताकि ब्रह्मांड ठीक तरीके से नियंत्रित हो। सब कुछ भगवान द्वारा दिए गए नियमों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। कोई भी उन नियमों को चुनौती नहीं दे सकता।

उदाहरण के लिए कोई जन्मतः वयस्क नहीं हो सकता, व्यक्ति को भगवान द्वारा स्थापित नियमों के अनुसार बड़ा होना पड़ता है।

कोई भी मृत्यु से नहीं बच सकता है क्योंकि यह एक नियम है कि जिसका जन्म होगा उसकी मृत्यु अवश्य होगी। अनंत काल से ऐसा कोई उदाहरण नहीं है कि कोई इस दुनिया में जन्म लेकर मृत्यु को नही प्राप्त हुआ हो ।

उस ईश्वर ने अपनी रचना के प्रत्येक कण में निवास करके सभी नियमों को लागू किया है।

चूँकि दुनिया, नरक, स्वर्ग इत्यादि ईश्वर की रचना है, इसलिए रचनाकार अपनी रचना यानि सृष्टि से परे रहता है एवं सृष्टि की निगरानी करता है। सृष्टि के कोई भी वस्तु की ईश्वर से तुलना नहीं हो सकती और इसलिए ईश्वर द्वारा निर्मित कोई भी रूप ईश्वर का अनुकरण नहीं

कर सकता, भले ही ईश्वर हर रुप में मौजूद हो। जैसे भगवान की मूर्ति को तोड दिया जाय तो वह तुट जाती है जबकि उसमें सर्वसमर्थ ईश्वर का निवास है। व्यक्ति किसी भी रुप से ईश्वर की उपासना कर सकता है जो रुप व्यक्ति की पसंद के अनुसार हो क्योंकि ईश्वर हर रुप में मौजूद है लेकिन ईश्वर उन रुपों से परे है।

इसलिए यह कथन कि ईश्वर का रुप नहीं है या उसका रूप नहीं हो सकता।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

अब भगवान सर्वशक्तिमान हैं। वह ऑल माइटी है, जिसका अर्थ ये है कि वह कुछ भी और सबकुछ कर सकता है। वह जो करना चाहता है, वह करने के लिए स्वतंत्र है। वह जो वह नहीं चाहता है और वह न करने के लिए स्वतंत्र है। इतना ही नही वो उल्टा करने के लिए भी स्वतंत्र है। मतलब ये कि बगैर आँखके देखना, बगैर कान के सुनना, बगैर त्वचा के स्पर्श करना इत्यादि।

इस पृष्ठभूमि के साथ, यह सोचना सबसे बडी बेवकूफी होगी कि भगवान दूसरों को रुप दे सकते हैं लेकिन वह खुद को रुप नहीं दे सकते! यह भगवान की क्षमता पर सीमाएं लगाएगा और कोई भी धर्म इस बात से सहमत नहीं होगा कि भगवान की क्षमता सीमित है।

यदि यह मामला है कि भगवान खुद को रुप नहीं दे सकता, तो वह किसी भी खेल टीम के कोच की तरह होगा जो दूसरों को मार्गदर्शन तो कर सकता है लेकिन उन कौशल के साथ खुद खेल नहीं सकता। क्या ईश्वर ऐसा है?

बिलकूल नही!
तब भगवान का रूप होना चाहिए। और भगवान का रूप है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

तो कैसे करें समन्वय?
1. भगवान के पास रूप नहीं है।
2. भगवान का रूप है।

भगवान का कोई रूप नहीं है। इसका मतलब यह जरूर है कि ईश्वर सभी भौतिक या सांसारिक रूपों से परे है लेकिन इसका मतलब ये नही है कि ईश्वर का कोई अलौकिक रूप नही हो सकता।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

भगवान का कोई रूप नहीं है इस कथन का एक और निहितार्थ है। इसका अर्थ यह भी है कि पूर्णता प्राप्त करने पर ईश्वर का अनुभव केवल अनंत सुख की अनुभूति तक सीमित है। उदाहरण के लिए, जब इत्र का छिड़काव किया जाता है, तो सुगंध की अनुभूति होती है, इसका कोई रूप नहीं होता है। इसी प्रकार ईश्वर आनंद का अनुभव है। उसकी कोई रूप नहीं है। इसे बिना रूप का भगवान या निराकार भगवान कहा जाता है।

यह सर्वविदित है कि सभी संतों में दिव्य शरीर होता है जिसमें सभी धर्मों के सभी संस्थापक भी शामिल हैं। आइए हम मोहम्मद पैगंबर पर विचार करें।

हम सभी इस बात से सहमत हैं कि वह एक ईश्वरीय और एक दिव्य व्यक्तित्व था। उनको भगवान ने इस संसार में भेजा था। दिव्य या ईश्वरीय का अर्थ है जो समझ से परे हो।दिव्य व्यक्तित्व सभी संतों के पास होता हैं। क्या उन मोहम्मद पैगंबर का शरीर नही था? क्या उनका कोई रूप नहीं था? मतलब दिव्य संतों के पास रूप है तो दिव्य ईश्वर को रूप ग्रहण करने से कौन रोक सकता है? जब भगवान अपने संतो को रूप देकर इस दुनिया में भेजता है तो खुद भी रूप धारण कर सकता है। इसलिए भगवान के पास रूप होना चाहिए और यह रूप दिव्य होना चाहिए।

इसका अर्थ है कि भगवान का सांसारिक रूप नहीं हो सकता है, लेकिन भगवान का दिव्य रूप हो सकता है और भगवान का दिव्य रूप होता है। दिव्य शब्द का अर्थ है कि भगवान का रूप बुद्धि की सीमा से परे है। वह किसी भी या सभी रूपों को ले सकता है जो उसने इस भौतिक दुनिया में दूसरों को दिए हैं या नही दिए है। इस प्रकार ईश्वर सीमित क्षमता का नहीं है कि वह दूसरों को रूप दे सकता है, लेकिन वह स्वयं को रूप नहीं ले सकता।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जब मोहम्मद साब मौजूद थे, तब वे मानव रूप में मौजूद थे। सभी ने उसे मानव रूप में देखा। सभी ने उसे दिव्य रूप में नहीं देखा। केवल कुछ लोगों ने उसे दिव्य रूप में देखा क्योंकि उनके दिल शुद्ध थे। बाकी सभी ने उसे एक सामान्य व्यक्ति के रूप में देखा।

इसी प्रकार, ईश्वर का दिव्य रूप है लेकिन जब वह इस धरती पर प्रकट होता है तो वह सांसारिक रूप में अधिकांश लोगों के दिखाई देता है क्योंकि केवल वे लोग जिनका हृदय शुद्ध हैं वे ही ईश्वर के दिव्य रूप को देख सकते है।

किसी भी मूर्ति का भौतिक रूप होता है, लेकिन जब भगवान उस रूप में प्रकट होंगे तो दिव्य रूप में प्रकट होंगे , जिसका बाहरी रूप मूर्ति के समान होगा। उपासक भगवान को उस रूप में देखेगा जिस रूप में उसने मूर्ति की पूजा की थी। इसलिए, सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए मूर्ति भगवान की है।

यदि कोई व्यक्ति आम देखता है, तो खुश हो जाता है। यदि उसे आम की सुगंध हो मिलती है, तो वह अधिक खुश होता है और अगर वह आम खाने के लिए मिलता हा वह व्यक्ति आम का सबसे अच्छे तरीके से आनंद लेता है। आम वही है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

ऐसे ही भगवान या खुदा एक ही है लेकिन उसके तीन रूप है जिन्हे ब्रम्ह, परमात्मा एवं भगवान कहा जाता है । ये तीनो अनंत सुख प्रदान करने वाले है। समझने के लिए इनके सुखोंका फरक क्रमशः आम के देखने, सुंघने एवं खाने के सुख जैसा है।

ज्ञानी का लक्ष्य निर्गुण निराकार ब्रम्ह है जिसका कोई रूप नही है। योगीयों का लक्ष्य परमात्मा दर्शन है जो अपने स्वरूप में स्थित होने पर मिलता है।

एक बार भगवान राम ने अपने भक्त काग-भूशुंडी को दर्शन दिया और उनसे कहा, 'मैं तुमसे अति प्रसन्न हूं। जो भी वर तुम चाहते हो उसे माँग लो- स्वर्ग, चमत्कारी शक्तियां या मोक्ष का सर्वोच्च आनंद। ' निराकार भगवान के साथ लय होना मोक्ष का सर्वोच्च आनंद है।

भक्त ने जवाब दिया, 'आप मुझे अपना दिव्य निष्काम प्यार देने की कृपा कीजिए।' प्यार भगवान राम से संबंधित है। '

राजा जनक एक संत थे जिनका मन हमेशा निराकार भगवान के आनंद में निमग्न रहता था । किसी भी सांसारिक व्यक्ति या वस्तु को उस व्यक्ति को आकर्षित करना संभव नहीं है जिसके पास दिव्य आनंद है। लेकिन

जब भगवान राम जनक की सभा में गए, तो राजा जनक यह देखकर आश्चर्यचकित हुए कि उनका मन राम में बलपूर्वक खींच गया था। उन्होंने महसूस किया कि वही निर्गुण निराकार ब्रम्ह, सगुण साकार भगवान बनकर मानव रूप में आया है और चूँकि सगुण साकार भगवान निर्गुण निराकार ब्रम्ह की तुलना में अधिक सुखद है, उनका भगवान राम के दिव्य आनंद के की ओर आकर्षित हुआ था।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

उद्धव एक महान संत थे और निराकार ब्रम्ह का दिव्य आनंद हासिल कर चुके थे। भगवान कृष्ण उद्धव को ईश्वर का दिव्य प्रेम का रस देना चाहते थे। लेकिन उद्धव ने कभी नहीं सोचा था कि उन्हे और किसी चीज की जरूरत है क्योंकि उनके पास निर्गुण निराकार ब्रम्ह की शाश्वत और अनंत खुशी मौजूद थी। एक बार ऐसी खुशी प्राप्त हो जाने के बाद, कोई और कुछ नहीं करना चाहता। इसलिए भगवान कृष्ण ने फैसला किया कि उद्धव को गोपियों के पास भेजा जाए, जिनसे उद्धव को ईश्वरीय प्रेम आनंद का अनुभव प्राप्त होगा। भगवान कृष्ण ने उद्धव से कहा, "वृंदावन की गोपियाँ मुझे बहुत प्यार करती है। मेरे विरह में जल रही है। तुमको तो पता हैं कि मुझे बहुत महत्वपूर्ण कार्य करने हैं। मुझे उन कार्यों को सभी जीवित प्राणियों के लाभ के लिए पूरा करने की आवश्यकता है। मैं वहा वापस नहीं जा सकता। तुम उन्हें ब्रम्हज्ञान देकर आओ।"

तो उद्धव वृंदावन गए और गोपियों से मुलाकात की जो उन्हें राधा के पास ले गयी। उद्धव ने उनसे कहा, "तुम इतने दुःखी क्यों हो? आप उचित भोजन नहीं खा रही हो। आप बहुत पीली और कमजोर हो गयी हो। कृष्ण

कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं। वह प्यार और लगाव की सभी भौतिक भावनाओं से परे है। वह वही परमेश्वर है जो इस ब्रह्मांड के प्रत्येक कण कण में व्याप्त है। यदि आप इसे समझेगी, तो आप अनंत दिव्य आनंद का अनुभव करेंगी। फिर वियोग कैसा? दुःख से बाहर आओ और हमेशा के लिए खुश रहो। "

गोपियों ने जवाब दिया," हमारा मन कृष्ण के साथ है और कुछ भी हमारे दिमाग में प्रवेश नहीं कर सकता क्योंकि मन पहले से ही दिव्य प्रेमानंद से लबालब भरा हुआ है। और इससे बढकर कोई अन्य आनंद नहीं है। तुम्हे इस दिव्य प्रेम आनंद का अनुभव नहीं है। हम उस दिव्य प्रेम को आपके दिल में डाल देंगे और फिर इसे स्वीकार करना या इसे अस्वीकार करना आपकी पसंद पर निर्भर है। "

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जब उद्धव ने दिव्य प्रेम आनंद का आस्वादन किया तो उसने पाया कि निराकार ब्रह्म का आनंद भगवान के दिव्य प्रेमानंद के सामने तृणवत तुच्छ है।

लौटने के बाद उद्धव ने भगवान कृष्ण से कहा, "कृपया मुझे वृंदावान में वृक्ष, लता बनाएं, ताकि मैं भी दैवीय प्रेमानंद का रसपान कर सकूं। "

निष्कर्ष ये है कि जिनके पास निर्गुण निराकार ब्रम्हानंद है, वे सगुण साकार भगवान द्वारा आसानी से आकर्षित हो जाते है, लेकिन जिनके पास सगुण साकार भगवान का प्रेमानंद है, वे निर्गुण निराकार ब्रम्हानंद को तृणवत् मानकर उसके आसपास भी नही फटकते है। इसलिए श्रीकृष्ण सर्वोच्च उपास्य है।

वास्तव में इस दुनिया में खुशी सिर्फ महसूस करना है। यह खुशी चेतन या लाइव नहीं है। मतलब ये कि खुशी का कोई रूप नही होता।

किसी माँ की बच्चे के जन्म लेने के बाद की खुशी तथा गर्भावस्था की खुशी में बहुत अंतर होता है।

बच्चा जब हो जाता है तो माँ इंद्रियों के माध्यम से भी सुख प्राप्त कर सकती है। वो अपने बच्चे को देखकर खुश होती है, बच्चे को गले लगाने में बेहद आनंद मेहसूस करती है, उसे बच्चे के साथ खेलने में मजा आता है, वह उसके साथ एकतरफा बात करने में खुशी पाती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

बच्चा वही है जो गर्भ में था, लेकिन खुशी के नए आयाम हैं और हर आयाम खुशी से भरा है।

इस खुशीसे सगुण साकार भगवान से संबंधित खुशी का अंदाजा लगाया जा सकता है।

यदि कोई माँ से पूछता है, 'देखो! बच्चा गर्भ में था तब आप खुश थी। आइए हम फिर से बच्चे को गर्भ में डालते है ताकि आप बच्चे से संबंधित काम करने से मुक्त हो जाएँ। ' माँ नहीं मानेगी। क्यों? गर्भ की तुलना में अब बच्चे का रूप है इसलिए बच्चा अधिक सुखद होता है।

जब आप अपने प्रियजन को लेने के लिए हवाई अड्डे पर प्रतीक्षा करते हैं तो आकाश में विमान देखते हैं तो आप खुश होते हैं। जब आप अपने प्रियजन को नीचे उतरते हुए देखते हैं तो आप अधिक खुश होते हैं। जब आप

उसे अधिक स्पष्ट रूप से देखते हैं तो खुशी बढ़ती है और जब आप उसे गले लगाते हैं तो सबसे अधिक खुशी महसूस करते है।

इसी प्रकार निराकार ईश्वर के आनंद तुलना में साकार भगवान का आनंद कई गुणा अधिक है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इस्लाम धर्म और हिंदू धर्म का अद्वैतवाद निराकार भगवान पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह देते है।

आपको बिना किसी रूप की चीज़ पर ध्यान केंद्रित करना महामुश्किल इसलिए है कि

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

1.मन को रूप की सोचने की आदत है क्योंकि जो भी हम इस दुनिया में देखते हैं, उसका कुछ ना कुछ रूप है। रूप के बिना किसी के बारे में सोचना मुश्किल है।

2. प्यार, स्नेह आदि भावनाओंको निर्विकार भगवान से जोड़ने के लिए किसी भी तरीके का रूप, गुण आदि का माध्यम उपलब्ध नही है , जबकि मन को इस तरह की भावना बनाने की आदत है।

3. ईश्वर को याद करते समय साकार भगवान का रूपध्यान विभिन्न भावनाओं के के माध्यम से संभव है। निराकार भगवान से भावनाओं का कोई संबंध नही है।

इस स्थान पर सबको यह समझना चाहिए कि निर्विकार और साकार ईश्वर अलग-अलग भगवान नहीं हैं ।

यदि आप पानी देखते हैं, तो इसके तीन रूप बरफ, पानी, वाष्प हैं। इन तीनों के गुण अलग अलग है। इसी तरह भगवान एक है और इसके रूप है ब्रम्ह, परमात्मा और भगवान। लेकिन इनसे जुड़ी अनंत खुशी का रस वैलक्षण्य अलग अलग होता है।

भगवान केवल एक ही है। सर्वसमर्थ होने के नाते, भगवान आप के पसंद की कोई भी रूप धारण कर

सकते हैं।

जो रूप आपको पसंद हो उस रूप से आप भगवान का चिंतन कर सकते हो। जो ड्रेस चाहो उन्हे पहनवा सकते हो। भगवान से प्यार करने में कोई नियम, कायदा, कानून नही है। बस उनको अपना प्रियतम मानकर उनसे निष्काम प्रेम करना है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इस युग में, आदि जगद्गुरु शंकरचार्य ने निराकार भगवान के दर्शन के प्रचार के माध्यम से हिंदू धर्म को फिर से स्थापित किया। उनका दर्शन था, 'भगवान और आत्मा में कोई अंतर नहीं है। एक बार माया का भ्रम खत्म हो जाने के बाद, जीव को अनंत खुशी का मूल रूप मिल जाता है। जो कुछ अस्तित्व में है वो सब कुछ भगवान है तथा और किसी चीज के अस्तित्व की कोई गुंजाइश नहीं है। '

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

हिंदू दर्शन आत्मा को भगवान का एक पहलू या भगवान का एक शक्ति के रूप में देखता है। शंकरचार्य ने भगवान की शक्तियों में विश्वास नहीं किया क्योंकि उनके अनुसार, पूरे ब्रह्मांड में, भगवान के अलावा कुछ भी नहीं है।

एक बार शंकरचार्य जब कश्मीर में थे, तो वहा अतिसार से पीड़ित हो गये थे तब एक लड़की ने उनसे संपर्क किया और कहा, 'क्या आप शास्त्रों पर चर्चा करने के लिए मेरी चुनौती स्वीकार करेंगे?'

शंकरचार्य ने उसे देखा और सोचा 'यह छोटी लड़की मुझे चुनौती दे रही है!' लेकिन कहा, 'मुझे बीमारी के कारण बहुत कमजोरी लग रही है। मेरे पास किसी भी चर्चा के लिए शक्ति नहीं है। हम दो-तीन दिनों के बाद बहस करेंगे। '
लड़की ने कहा, 'शक्ति? लेकिन आप किसी शक्ति में विश्वास नहीं करते! '

शंकरचार्य चकित हो गए। उन्हे लड़की ने अपने देवी शक्ति के मूल रूप का दर्शन दिया। शंकरचार्य को शक्ति

का रूप देखकर शक्ति के अस्तित्व का स्वीकार करना पड़ा। असल में उस समय भारत में व्यापक रूप से बुद्धवाद का प्रचार था। उससे छुटकारा पाने के लिए शंकरचार्य ने निराकार भगवान का सिद्धांत प्रतिपादित किया । भगवान बुद्ध ने निर्वाण में विश्वास किया था। निर्वाण के समान हिंदू में वर्णित मुक्ति की अवधारणा है। इसलिए शंकरचार्य ने निराकार भगवान के सिद्धांत की उपयोग किया और बुद्धवादी दर्शन को तर्क से परास्त किया।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

लेकिन कई जगहों पर उन्होंने कृष्ण को भक्ति का प्रचार किया। उन्होंने अपनी मां को कृष्ण को भक्ति का अभ्यास करने की सलाह दी। उन्होंने कहा, 'जब तक कि कृष्ण के कमल चरणों की भक्ति नहीं की जाती है, तब तक मन शुद्ध नही हो सकता।' ' श्रीकृष्ण भक्ति करने वाले के कभी पछताना नही पडता। वास्तव में उन्होंने कहा, 'जो लोग योग, निराकार भगवान या भक्ति के अलावा कुछ भी आध्यात्मिक अभ्यास करना चाहते हैं, वे जो चाहते है वो करें। मुझे उनमें से किसी में कोई दिलचस्पी नहीं है। मै तो श्रीकृष्ण के चरणारविंद के रस का पान करूंगा।'

भगवान शंकर का कहना है कि 'नरक, स्वर्ग और मुक्ति (निराकार ईश्वर के माध्यम से दिव्य खुशी) सब एकसमान हैं।' जिसका अर्थ है कि किसी को भी निराकार भगवान के पीछे नहीं जाना चाहिए। इस प्रकार दिव्य प्रेम सबसे अंतिम रस है। और हम सब जानते हैं कि कैसे प्यार करना है। बस प्यार के प्रेमास्पद में परिवर्तन की आवश्यकता है। प्यार संसारी व्यक्ति की जगह श्रीकृष्ण से करना है।

अगला
पेज देखें

यदि हम अपने दैनिक कार्यों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करते हैं, तो हमें प्रश्न का उत्तर खोजने में सक्षम होना चाहिए,

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

"हम किस लिए जीते हैं?"

दिन की शुरुआत करते हैं। यहाँ कुछ विशिष्ट क्रियाओं का विश्लेषण है, जो लगभग हम सभी अगले दिन तक करते हैं।

1. उठो। क्यों? क्योंकि नींद लेना ज्यादा सुखद नहीं है। क्योंकि आपको कुछ कार्य करने की ज़रूरत है, जो अधिक महत्वपूर्ण है, जो आपको यकीन है कि यदि वे कार्य नहीं करते हैं तो निश्चित रूप से आपको अप्रिय परिस्थितियों का सामना करना पडेगा।

इरादा: कम खुश स्थितियों को कम करके खुशी की तलाश करना।

2. ब्रश दांत: हे भगवान! हर दिन एक ही बात! दांत साफ न करने के अवांछित परिणामों से बचने के लिए आप ऐसा करते हैं।

इरादा: कम खुश स्थितियों को कम करके खुशी की तलाश करना।

3. वॉश लें: क्यों? क्योंकि आपको शरीर धोने में मजा आता है या आप अपने शरीर की देखभाल करना चाहते हैं, जिसमें सफाई की जरूरत है या दोनों हो सकते हैं।

इरादा: स्नान करने के माध्यम से खुशी की तलाश करना।

इरादा: कम खुश स्थितियों को कम करके खुशी की तलाश करना।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

4. काम पर जाएं: क्यों? अपने बॉस से आदेश लेने के लिए? जिद्दी कर्मचारियों से निपटने के लिए? नहीं! आप काम करते हैं क्योंकि आप काम के माहौल को पसंद करते हैं या आप काम नहीं करने के अस्वीकार्य परिणाम से बचना चाहते हैं या दोनों हो सकते हैं।

इरादा: काम के माध्यम से खुशी की तलाश करना।

इरादा: किसी चीज को प्राप्त करके खुशी की तलाश करना, जो आमतौर पर पैसा है, जिससे आप मनचाहे सामान ला सकते जो आपको खुशी लाने में मदद करेंगे।

5. प्रेम प्रसंग: क्यों? जब आप अकेले होते हैं, तो अकेलापन आपको परेशान करने लगता है। तो तुम सुख को पाने की कोशिश करते हो दूसरों से प्यार और सेक्स संबंध बनाकर।

इरादा: ऐसे रिश्तों के माध्यम से खुशी की तलाश करना।

6. सो जाओ: क्या? दोबारा सोना? आप उठ गए क्योंकि लगातार सोने से आप संतुष्ट नहीं हो सकते थे!

आपका जवाब है, “हाँ! लेकिन अब मैं सभी

गतिविधियों से थक गया हूं। मुझे सोने की ज़रूरत है।"

इरादा: नींद के माध्यम से खुशी की तलाश करना।

इस प्रकार, आपको पता चल जाएगा कि किसी भी जीवित जीव अपनी प्रत्येक क्रिया को अपनी खुशी प्राप्त करने के लिए निर्देशित करता है। क्रियाएं एक दूसरे के साथ सीधे विपरीत हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, उठना और सोना, संगीत सुनना शुरू करना और इसे बंद करना। ऐसी कई अन्य क्रियाएँ है लेकिन उनका उद्देश्य भी विभिन्न कार्यों के माध्यम से एक ही खुशी की तलाश करना है, खुशी के लिए ही आप किसी भी ही गतिविधि में लगे रहते हैं। गतिविधि कोई भी होने दें।

एक व्यक्ति कोई अवस्था में तब तक रहता है जब तक कि वह खुद को उसअवस्था को सुख पाने के लिए लाभदायक महसूस करता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

अवस्था को बदलने की कोशिश तब करता है जब मौजूदा स्थितियां उस व्यक्ति को संतुष्टि नहीं देती हैं। और यदि उस व्यक्ति को उसी असंतुष्ट अवस्था में रहने के लिए मजबूर किया जाता है, जिसमें वो व्यक्ति आरामदायक नहीं है, तो वह व्यक्ति तनाव, दु: ख, घबराहट, चिंता जैसे कुछ अप्रिय भावनाओं के साथ स्थिति का सामना करता है। यहां तक कि भाव और रोने के माध्यम से इस तरह की अनचाही भावनाओं का प्रकटीकरण आसपास के व्यक्तियों को बताता है, "मैं खुश नही हूं। क्या आप कृपया मेरी स्थिति को बदल

सकते हैं? क्या आप कम से कम, मुझसे सहानुभूति रख सकते हैं ताकि मुझे थोड़ी राहत महसूस हो? ” इस प्रकार रोना भी खुशी की तलाश करने के लिए ही होता है। भले ही कोई भी पास में मौजूद न हो, लेकिन भावनात्मक आसु दुःख को हल्का करने में मदद करते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

ऐसे ही जब एक व्यक्ति को उस स्थिति को बदलने के लिए मजबूर किया जाता है जिसमें वह अभी भी खुश है और कई संकेत देता है जो हमें बताते हैं, “मैं बदलाव नहीं चाहता। कृपया मुझे वहीं रहने दें जहां मैं हूं। "

खुशी की इस भावना के लिए कई पर्यायवाची शब्द हैं। उनमें से कुछ हैं: संतुष्टि, राहत, मन की शांति, रोमांच, उत्साह, परमानंद, आनंद, खुशी।

संक्षेप में, खुशी वह अच्छी भावना है जिसका सभी द्वारा स्वागत किया जाता है।

हमारे दैनिक जीवन में भगवान की क्या जरूरत है?
हर एक को खुशी की तलाश क्यों है?

हिंदू उत्तर देता है, 'ईश्वर ही असीम आनंद है। हम जो खुशी चाहते है वही भगवान है। आत्मा जो भगवान से निकलती है लेकिन हमेशा जड माया के आवरण में होने के कारण चैतन्य आनंद से या भगवान से दूर है, वो आत्मा भगवान के साथ पुनर्मिलन करने की कोशिश करती है।' इस प्रकार हर कोई खुशी ही चाहता है। विश्व का प्रत्येक जीव खुशी के अलावा कुछ चाह ही नही सकता। बाकी सब जैसे पैसा, रूप, प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि आदि उसी खुशी के लिये चाहता है लकिन ये सब सीमित सुख देते है जबकि जीव अनंत भगवान का अंश होने के कारण अनंत, असीम, चिरकालीन सुख चाहता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जब तक और असीम सुख की तलाश नहीं होगी, तब तक खोज समाप्त नहीं होगी। इसलिए भगवान की बहुत जरूरत है। भगवान के बिना कोई भी पूर्ण नहीं हो सकता। इस प्रकार हम सभी को भगवान को पाने की कोशिश करनी चाहिए।

इस्लाम भगवान की भक्ति के लिए कोई तार्किक आधार प्रदान नहीं करता है, हिंदू करता है।

किसी भी कार्य का कोई ना कोई मकसद होता है और वह खुशी हासिल करना है ।कुछ दार्शनिक मानते है कि हमारे जीवन के पाँच उद्देश्य हैं जिसके लिये प्रत्येक जीव अनंत काल से कार्यरत है। वे है-

1. सुख
2. जीवन
3. ज्ञान
4. स्वतंत्रता
5. शासन करना

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

सुख सर्वोच्च है। अन्य सभी स्वीकार्य हैं जब तक वे खुशी लाते हैं। जैसे यदि ये निश्चय हो जाये कि इस जीवन में सुख नही मिल सकता तो मनुष्य निराशावश आत्महत्या की सोचता है। ज्ञान पाने में जब तक खुशी मिलती है तभी तक आदमी ज्ञान के पीछे रहता है। स्वतंत्रता, शासन करना इसी प्रकार है। उदाहरण के लिए चीन में सैनिकों ने स्वतंत्रता आंदोलन करने वालों को इस प्रकार तिएन्नाम चौराहे पर रौंदा कि स्वतंत्रता का वहा कोई नाम नही लेता ।

मन ख़ुशी की तलाश में कोई भी कार्रवाई शुरू करता है। क्षणभंगुर खुशी मिलती भी है। थोडी देर में वह खुशी खो जाती है। फिर से खुशी मांगी जाती है, फिर से अन्य कार्रवाई की जाती है, फिर से खुशी मिलती है, फिर से खो जाती है। चक्र जारी है। इस चक्र में अनेक दुःख एवं यातनाओं का सामना करना पडता है जो कि कोई नही चाहता।

इन सब मृत्यु आदि दुःखों से छुटकारा पाने तथा अनंत काल के लिये उस अनंत आनंद से युक्त होने के लिए जो भगवान के पास है, भगवद् भक्ति के अलावा और कोई मार्ग नही है।

भगवान सभी को अपना दिव्य असीम सुख क्यों नहीं दे रहे हैं?

हिंदू दर्शन जवाब देता है - किसी भी मायिक व्यक्ति का मन परिमित क्षेत्र में है एवं अशुद्ध है। सुख और दुःख मात्रा सहन करने के मामले में उसकी सीमाएं हैं। मन को इस सीमा से अधिक सुख या दुःख मिलने पर कोई भी जीवित नही रह सकता । यदि अनंत ईश्वरीय दिव्यानंद अशुद्ध मन में डाल दिया जाय तो उस आनंद की गर्मी के तापमान के कारण उस व्यक्ति की हड्डी फसली भी नही मिलेगी। हमे मन को शुद्ध करना पडेगा। भगवान का स्मरण वास्तव में यह कार्य करता है। ईश्वर शुद्ध व्यक्तित्व है, जो मन की अशुद्धता को धोता है। शुद्ध मन को तब दिव्य मन में परिवर्तित किया जा सकता है। दिव्य मन ही अनंत सुख को सहन करने में सक्षम होता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

स्थायी सुख, स्थायी जीवन, पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने का एकमात्र तरीका ईश्वर को जानना है और कोई वैकल्पिक रास्ता नहीं है।

अगला सवाल "मन में अशुद्धता क्या है?"

अशुद्धता हमेशा किसी भी चीज की विषय वस्तु में होती है। मन की सामग्री, जो विचार, इच्छाएं, आसक्तियां आदि हैं, अशुद्ध हैं। अशुद्ध मन का दिव्य मन में परिवर्तन नही किया जा सकता। इसलिए मन को इस दुनिया के अशुद्ध विचारों से मुक्त करने की आवश्यकता है। ये विचार इस दुनिया की वस्तुओं और व्यक्तित्वों के बारे में हैं - पसंद और नापसंद, प्यार और घृणा,दोस्ती

और दुश्मनी, पांच इंद्रियों की पांच विषयों से उत्पन्न होने वाली कामनाएँ इत्यादि । आंख का विषय है देखना, कान का सुनना, जीभ का रस स्वाद लेना, नाक का गंध लेना, त्वचा का स्पर्श करना।

इन कामनायुक्त विचारों को दूर करना संभव नहीं है क्योंकि इनसे सुख और दु:ख की भावनाएँ जुडी है। लेकिन जब तक मन को इन अशुद्ध विचारों से मुक्त नहीं किया जाता, तब तक मन शुद्ध नहीं बन सकता। प्राकृत मन को दिव्य करने के लिए शुद्ध मन एक बुनियादी आवश्यकता है। मन को शुद्ध करने का तरीका है मन को ईश्वर के शुद्ध विचारों से भरना जो स्वयं ही अशुद्ध विचारों को बाहर निकाल देगा।

इस प्रकार हृदय की शुद्धि में ईश्वर के नाम, रुप, लीला आदि का स्मरण प्रमुख महत्व रखता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जब हम ईश्वर की ओर जाने की साधना करते है तो शुरुआती चरणों में ईश्वर पर ध्यान केंद्रित करना बहुत मुश्किल होता है। वास्तव में, मन ईश्वर के अलावा अन्य सभी चीजों के बारे में सोचता है और केवल कुछ सेकंड के लिए मन ही ईश्वर के रूप की कल्पना करता है।

यह प्रारंभिक चरण है जहां से जीव की आध्यात्मिक साधना शुरू होती है और इस बिंदु से कई जीवात्माएँ पूर्णता की ओर आगे बढ़ी हैं और भगवान के साथ एकजुट होने में सफल रहीं है। पहले समझ लें कि आपके लिए कौन रोमांटिक पार्टनर बनने वाला है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

क्या आप भगवान, या कृष्ण को जानते हैं, कि वे किस तरह का प्रियतम है? अपनी कल्पना के सबसे सुंदर व्यक्ति की कल्पना करें, सबसे स्मार्ट, सबसे बुद्धिमान, सबसे सुशील, सबसे मृदुभाषी, सबसे प्यार करने वाला, सबसे दयालु, सबसे कृपालु, किसी भी अन्य गुण में सबसे ऊपर; कृष्ण सभी गुणों में किसी अन्य की तुलना में अनंत गुना बेहतर हैं। ईश्वर के सभी गुणों में गुणात्मक और मात्रात्मक रूप से अनंत विस्तार है।

उदाहरण के लिए, कृष्ण किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में सुंदर है चाहे वह व्यक्ति अनंत ब्रह्माण्डों और स्वर्ग से हो या दिव्य क्षेत्र से हो जिसमें देवी, गणपति, शंकर, विष्णु और इत्यादि सभी प्रकार के दिव्य देवताओं के क्षेत्र शामिल हैं। वह इतना आकर्षक है कि यहां तक कि महान भगवान, ब्रह्मा, शंकर, विष्णु की पत्नियां भी उनकी ओर आकर्षित हो जाती हैं। इतना ही नहीं ब्रह्मा, शंकर, विष्णु स्वयं भी कृष्ण की ओर आकर्षित हो जाते हैं। अगर किसी को उसका दिव्य रूप देखने का मौका

मिलता है तो इस ब्रह्माण्ड में कोई भी ऐसा नहीं है जो कृष्ण की ओर आकर्षित नहीं हो सकता ।

जब रास शुरू होने वाला था, तब पार्वती के साथ-साथ महिला रूप में शंकर कृष्ण के साथ नृत्य का आनंद लेने के लिए मौके पर पहुंचे। वन दंडकारण्य के तपस्वी भगवान राम की ओर आकर्षित हुए और उनसे प्रेम संबंध का अमृत प्राप्त करने के लिए स्त्री रूप धारण करना चाहा। भगवान राम ने उनसे वादा किया कि जब वह भगवान कृष्ण के रूप में आयेंगे, तो उनकी इच्छा पूरी होगी।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

तो शुरुआती बिंदु यह है कि 'कोई भी कृष्ण के कहीं आसपास नहीं जा सकता है, जिसे मैंने अपना प्रियतम माना है और मैं उनकी प्रेयसी हूँ।'
इसी लक्ष्य को लेकर हम थियरी एवं प्र्याक्टिस पर विचार करेंगे ।

मैं कौन हूँ? मेरा कौन है? मैं क्या चाहता हूँ? इसे कैसे प्राप्त करें? ये चार बुनियादी प्रश्न हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

यदि पहला सवाल उठाया जाता है, तो विभिन्न प्रकार के उत्तरों के मिलने की उम्मीद रहती है।

मैं रमेश हूं .... ओ! वह तुम्हारा नाम है। तुम नहीं।
मैं मराठी हूँ ..... ओ! वह तुम्हारी भाषा है। तुम नही।
मैं एक आईएएस हूँ! वह तुम्हारी डिग्री है। तुम नहीं।
मैं मैनेजर हूँ! वह तुम्हारी पोस्ट है। तुम नहीं ।
मैं एक व्यापारी ओ हूँ! वह तुम्हारा पेशा है। तुम नहीं ।
मैं हिंदू-मुस्लिम ..ओ! वह तुम्हारा धर्म है। तुम नहीं ।
मैं यादव ओ हूँ! वह तुम्हारी जाति है। तुम नहीं ।
मैं एक लड़का हूँ ओ! वह तुम्हारी सेक्स है। तुम नहीं ।
मैं मानव हूँ। वह तुम्हारी प्रजाति या शरीर है। तुम नहीं।
इसी प्रकार यह मन,बुद्धी तुम्हारी है। तुम नहीं।

मैं कौन हूँ? मैं कौन हूँ? कोई सही उत्तर नहीं आ रहा है।

वास्तव में 'मैं' वह व्यक्तित्व है जो अंदर बैठा है, जो इंद्रियों की पेशकश ग्रहण करता हैं। जो यह जानता है कि दिमाग क्या सोचता है, बुद्धि फैसला क्या करती है।

वह 'मैं' कौन है? वह 'मैं' आत्मा है जो भौतिक दिल में रहता है और यह 'मैं' मन में आध्यस्त है। लेकिन यह सिर्फ शब्दों द्वारा ज्ञान है। वह 'मैं' कैसा है, उसका स्वरूप क्या है इसका कुछ अतापता नही है।

'मै कौन हूँ?' यह प्रश्न तब तक अनुत्तरित रहता है जब तक आध्यात्मिक मार्ग द्वारा इस प्रश्न को हल नही किया जाता।

इस प्रकार 'मैं कौन हूँ?' ये अत्यंत सहज प्रतीत होने वाले प्रश्न का उत्तर देना सबसे कठिन है।

मैं कौन हूँ? यह मूल प्रश्न है जो हिंदू सभी को पूछता हैं। सही जवाब देने के लिए काफी प्रयास करने पर भी सही जवाब बिल्कुल नहीं मिल रहा है! फिर भी इंसान खुद को बुद्धिमान प्रजाति कहता है! और इंसान स्वयं की पहचान के ज्ञान के बिना दूर की आकाशगंगाओं में ग्रहों की खोज करता है!

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

'मैं कौन हूँ?' इस प्रश्न के उत्तर की दो मुख्य शाखाएँ हैं। एक शाखा शरीर से 'मैं' की पहचान करती है और दूसरी आत्मा से 'मैं' की पहचान करती है।

अगर हम 'मैं शरीर हूँ' को स्वीकार करते हैं तो 'मैं' को शरीर में होने वाले परिवर्तनों के साथ बदलना चाहिए क्योंकि 'मैं' की इस परिभाषा के अनुसार, शरीर 'मैं' है और बच्चे का शरीर वयस्क की तुलना में अलग है। इस प्रकार बच्चे का 'मैं' वयस्क के 'मैं' से अलग होना चाहिये।

लेकिन हर एक को बचपन और वयस्कता में एक ही 'मैं' का अनुभव होता है। वही 'मैं' जो बच्चा था अब बडा बन गया हूँ इस प्रकार की शरीर में होने वाले परिवर्तनों से पहले और बाद में उसी 'मैं' की भावना की निरंतरता को कैसे उचित ठहराया जा सकता है? यदि आप निरंतर रासायनिक या जैविक परिवर्तन की क्रिया पर विचार करते हैं तो अभिकारक और उत्पाद समान नहीं होते हैं।

लेकिन हमें वही 'मैं' लगता है। यह दर्शाता करता है कि

यह पूरा शरीर किसी ऐसे 'मैं' का है जो शरीर से अलग है। जिस तरह घर में नवाचार या परिवर्तन से घर के मालिक के 'मैं' की भावना में बदलाव नहीं होता है, इसी तरह, भले ही जन्म से लेकर मृत्यु तक शरीर की संरचना में नवाचार या परिवर्तन होते हैं, मगर 'मैं' जो इस शरीर रूपी घर में रहता है वह शरीर में बदलाव होने पर अपनी पहचान को बरकरार रखता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

ऐसे और भी तर्क हैं जो शरीर के साथ 'मैं' की पहचान के खिलाफ हैं। यदि कोई किसी कारण से शरीर का कोई अंग खो देता है, तो वह व्यक्ति 'मैं' की पहचान को बनाए रखता है, उसकी 'मैं' की पहचान कोई नुकसान नहीं पहुँचता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

मानव शरीर जटिल है। प्रत्येक कोशिका को एक जीवित कोशिका माना जाता है। फिर कोशिकाओं, अंगों आदि के समूह होते हैं। लेकिन 'मैं' की पहचान सभी के लिए समान है। वास्तव में 'मैं 'क्या है? क्या यह कोशिका है? क्या यह कोई अंग है? क्या यह दिल है? क्या यह दिमाग है? क्या यह मस्तिष्क है?

यदि यह दावा किया जाता है कि ये पूरा संकलित समुह जे बड़ी कुशलता से त्वचा में पैक किया गया है 'मैं' है, तो सवाल यह है कि मृत्यु के बाद क्या होता है? संग्रह तो अभी भी बरकरार है।

यदि यह दावा किया जाता है कि जीवित शरीर 'मैं' है, तो इसका मतलब ये है कि जीवन शरीर से अलग है। क्योंकि 'जीवन' शब्द वही है जो 'मैं' से नामित है। मुर्दा 'मैं' नहीं है। इसका मतलब केवल यह हो सकता है की शरीर में खुद को जीवित रखने की क्षमता नहीं है और इसलिए जीवित इकाई शरीर से अलग है। जो कि आत्मा है।

सपनों पर विचार करें। भौतिक शरीर बिस्तर पर आराम कर रहा है और 'मैं' सपनों में घूमता रहता है। क्या 'मैं' भौतिक शरीर है? लेकिन भौतिक शरीर स्थिर है जबकि 'मैं' नहीं है। इस प्रकार भौतिक शरीर 'मैं' नहीं हो सकता।

आत्मा बगैर शरीर के नही रह सकती। शरीर आत्मा की जरूरत है। शरीर के विनाश पर, आत्मा का घर नष्ट हो जाता है और इसलिए आत्मा दूसरे सूक्ष्म शरीर में जाती है। ये वो सूक्ष्म शरीर है जिसकी सहायता से मन सपने देखता है।मन में सब इंद्रियाँ होती है जिनके कारण स्वप्न में मन सब इंद्रियों का कार्य करता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इसका मतलब है कि शरीर का विनाश सीधे आत्मा के प्रस्थान यानी मृत्यु से जुड़ा हुआ है और इससे एक सबसे बड़े और प्रबल भ्रम को जन्म मिलता है कि जीवित रहने वाला व्यक्ति एक भौतिक शरीर है और कुछ भी नहीं। इसके बारे में हमने व्यापक चर्चा की है। जब तक आत्मा शरीर में रहती है, तब तक निर्जीव शरीर एक जीवित वस्तु की तरह काम करता है।

आइए कुछ और कुछ उदाहरणों पर विचार करें। जब एक छड़ी हिलती है, तो यह खुद से नहीं हिलती बल्कि हाथ की गति से हिलती है। यदि हाथ हटा दिया जाता है, तो छड़ी पृथ्वी पर गिर जाती है। इसी प्रकार भौतिक शरीर, जिसमें हाथ और पैरों शामिल हैं, जो कि छड़ी की तरह निर्जीव हैं उनके जीवन का आधार आत्मा है, जो भौतिक शरीर को जीवन शक्ति प्रदान करता है।

स्वयंचालित रोबोट हैं। उनके सभी हिस्से निर्जीव हैं, लेकिन बिजली उनमें गति डालती है। रोबो एक जीवित व्यक्ति की तरह काम करते हैं लेकिन उनमें से कोई भी जीवन नहीं है। बिजली में भी जीवन का अभाव है क्योंकि इसमें एक महत्वपूर्ण तत्व, चैतन्यता की कमी है। जैसे रोबे बिजली के अभाव में कोई काम नही कर सकता उसी प्रकार आत्मा के अभाव में शरीर निर्जीव हो

जाता है। जीवन का स्रोत आत्मा है।

एक बार यह स्वीकार किया जाता है कि आत्मा जीवन का स्रोत है, तो व्यक्ति की मृत्यु की सभी विसंगतियों का स्पष्टीकरण मिलता है। कुछ लोग बाल्यावस्था में मरते हैं, कुछ युवावस्था में तो कोई उम्र बढ़ने के बाद। कुछ लोग कारण से तो कुछ लोग बिना किसी कारण के मरते हैं। ऐसे अधिकांश मामलों को दिल का दौरा कहते है, जिसका अर्थ है दिल की धड़कन बंद हो जाना। दिल अचानक क्यों काम करना बंद कर देता है? क्योंकि आत्मा ने शरीर को छोड़ दिया। आत्मा ने शरीर को क्यों छोड़ दिया? क्योंकि कुछ अवधि के लिए ये शरीर आत्मा को अपनी अनंत खुशी की तलाश करने के लिए दिया गया था। कार्यकाल समाप्त होने के बाद आत्मा को शरीर से बल के साथ बाहर निकाला जाता है। आत्मा के प्रस्थान पर शरीर अपने निर्जीव भौतिक पदार्थ की मूल स्थिति को प्राप्त होता है। यही मृत्यु है।

अब तक यह स्थापित किया गया है कि यह शरीर के साथ 'मै की पहचान करना एक महान मूर्खता होगी। मन के बारे में क्या? क्या मैं मन 'हूं? क्योंकि मन सभी इंद्रियों को नियंत्रित करता है। यदि मन अनुपस्थित है, तो इद्रिय काम नहीं करते। उदाहरण के लिए, कुछ भी सुनते समय यदि मन यहां और वहां घूमता है, तो भौतिक कानों में प्रवेश करने के बाद भी शब्द नहीं सुना जाते हैं। इसका मतलब है कि 'मै' को शरीर की आवश्यकता नहीं होती है और इसलिए 'मैं' शरीर नहीं है लेकिन यह दिमाग हो सकता है। मन शारीरिक इंद्रियों से सहायता के बिना सभी इंद्रियों के सभी कार्यों को संपन्न कर सकता है जैसे कि सपनों में होता है। इसलिए मन कार्यों का एकमात्र कर्ता है। इस प्रकार दृढ़ संकेत हैं कि 'मैं' दिमाग है। हालांकि यह सच नहीं हो सकता। गहरी नींद पर विचार करें। गहरी नींद के दौरान, मन काम नहीं करता है। फिर भी आनंद, जिसे गहरी नींद कहा जाता है वह किसी के द्वारा अनुभव किया जाता है? उठने पर, हम कहते हैं 'ओह! मुझे अच्छी नींद लगी थी। मैंने एक भी सपना नहीं देखा! '

www.shreeradha.com email:shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जिसका अर्थ है 'मैं' भले ही मन अनुपस्थित हो परंतु 'मैं' उपस्थित रहता है । इसलिए 'मैं' मन नहीं हो सकता। बुद्धि के बारे में क्या? बुद्धि पूरी तरह से मन से अलग नहीं होती है। बुद्धि या दिमाग ये मनकी ही स्थितीयों में से एक है जिसमें निर्णय लिया जाता है। इसलिए जब मन काम नहीं करता है, तो बुद्धि भी काम नहीं करती है। इस प्रकार 'मैं' भौतिक शरीर नहीं है, यह न ही मन और न ही बुद्धि है! इस प्रकार एक ही निष्कर्ष निकलता है .. 'मैं' शरीर, मन और बुद्धि से अलग है और यह आत्मा होना चाहिए।

'मैं' की पहचान आत्मा से है। आत्मा, शरीर और मन के बीच क्या संबंध है?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जैसा कि गीता में कहा गया है, आत्मा या 'मैं' वह यात्री है जो अपने गंतव्य तक पहुँचना चाहता है। वह गंतव्य क्या है? गंतव्य आनंदनगर है।

आनंदनगर तक पहुँचने के लिए आत्मा को इस शरीर रूपी का एक वाहन दिया गया है। आत्मा मुसाफिर है। चालक बुद्धि है जो अपने निर्णय से वाहन के चलने के तरीके को तय करती है। मन वह स्टीयरिंग है जो पहियों या इंद्रियों की गति की दिशा को बदल देता है।

या आत्मा मुसाफिर है। चालक बुद्धि है। मन लगाम है। इंद्रियाँ घोडे है। मुसाफिर भगवान के घर जाना चाहता है जहा अनंत आनंद लबालब भरा है।

अब समस्या ये है कि बुद्धि, मन और शरीर और इंद्रियाँ भौतिक या मायात्मक मूल की हैं जबकि आत्मा दिव्य है। मायिक होने के कारण मन संसारी सुख चाहता है जबकि दिव्य होने के कारण आत्मा दिव्य भगवान का अनंत सुख चाहता है।

बुद्धि तय करती है कि 'मुझे क्या चाहिए?' हर कोई केवल एक सुख का मापन करके लक्ष्य तय करता है - 'मुझे सबसे ज्यादा क्या संतुष्ट करेगा?' इस सवाल के जवाब कई हैं ..

'मैं एक डॉक्टर बनना चाहता हूँ।'
मैं एक इंजिनियर बनाना चाहता हूँ।'
मुझे एक मॉडल चाहिए। '

मैं एक स्पोर्ट्समैन बनना चाहता हूं। '
मैं एक राजनेता बनना चाहता हूं। '
मैं अभिनेता-अभिनेत्री बनना चाहता हूं। '
विकल्पों का कोई अंत नहीं है। लेकिन कोई भी विकल्प सुख के लिये ही चुना जाता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

हालांकि, यह तर्क दिया जा सकता है कि कई प्रकार के व्यक्तित्व हैं और उनके अलग-अलग उद्देश्य हैं या वे बिना मकसद के काम करते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

उदाहरण के लिए राक्षस या विकृत लोग बिना किसी कारण दूसरों को परेशान करते हैं। ऐसा करना उनकी प्रकृति है।

जब भगवान राम ने दानव मारीच से कहा था, 'धर्म और सदाचारी व्यक्तियों और ऋषियों की रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। पवित्र कर्मों और कर्मकांडों को संरक्षण देना मेरा धर्म है। आपको ऐसे लोगों और ऐसी पवित्र गतिविधियों को बाधित नहीं करना चाहिए .. '

मारीच ने उत्तर दिया था, 'धर्मपरायण लोगों और गतिविधियों को नष्ट करना मेरा कर्तव्य और धर्म है। धर्म के खिलाफ लड़ना मेरा धर्म है। आप धर्मनिष्ठ लोगों की रक्षा के अपने धर्म के साथ आगे बढ़ें, मैं अपने धर्म के साथ आगे बढ़ूंगा। मैं धर्मनिष्ठ लोगों का उत्पीड़न और उन्हें मारना जारी रखूंगा। आप मुझे मेरे धर्म के बारे में बताने वाले कौन हैं? ' आखिरकार मारीच को राम ने मार दिया।

इसी तरह दयालु लोग बिना किसी कारण दूसरों की मदद करते हैं। उनमें परोपकारी प्रवृत्ति होती है।

एक संत थे जिन्होंने एक बिच्छू को देखा था जो नदी में डूब रहा था। उन्होंने इसे बचाने के लिए उसे अपने हाथ से पकड़ने की कोशिश की। बिच्छू ने उसे डंक मार दिया और फिर से पानी के प्रवाह से दूर गया गया। संत ने

फिर बचाने की कोशिश की। बिच्छू ने फिर डंक मार दिया। संत ने कहा, 'तुम अपना काटने का काम करो, मैं अपना तुम्हारा जीवन बचाने का काम करूंगा।'

लेकिन हिंदू दर्शन कहता हैं, 'एक पागल इंसान भी बिना किसी मकसद के काम नहीं कर सकता।'
संत और भगवान अपने स्वभाव से दूसरों के लाभ के लिए काम करते हैं। 'भूर्ज पत्र सम तनु संत कृपाला।'
अर्थ - संत का शरीर एक पत्ता होता है (जिसे लिखने के लिए पहले के दिनों में उपयोग किया जाता था) जो दूसरों को ज्ञान प्रदान करने के लिए जीवन देता है।

विश्लेषण के द्वारा पता चलेगा कि राक्षस अपनी क्रूर गतिविधियों के माध्यम से आनंद चाहते हैं। वे दूसरों को संकट में देखने का आनंद लेते हैं। जब वे दूसरों को सुखी देखते हैं या दूसरों की प्रशंसा के शब्द सुनते हैं, तो उन्हें लगता है कि उनकी सांस अटक रही है और जब दूसरों को पीड़ा होती है, तो उन्हें लगता है जैसे वे स्वर्ग में है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

संत और ईश्वर जो ईश्वरीय सुख से परिपूर्ण होते हैं, दूसरों को खुश करने में खुशी प्राप्त करते हैं।

आत्महत्या उस जीवन को समाप्त करने के लिए की जाती हैं जो संकट से भरा है और जब व्यक्ति जो मांगता है उसे पाने की उम्मीद खो देता है। दुःख को कम करने के लिए आत्महत्या की जाती हैं। हालाँकि, आत्महत्या सबसे बड़ा पाप है और इसलिए आत्महत्या करने वाला अंततः अधिक कष्ट को आमंत्रित करता है।

आत्मघाती हमलावरों को लगता है कि वे जन्नत जाएंगे लेकिन वास्तव में उन्हें नरक मिल सकता है।

अतः चींटी और राजा से लेकर राक्षस एव संतों तक, हर कोई सुख के पीछे है। यह आत्मा का स्वभाव है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

अब तक की चर्चा इस बात को सामने लाती है कि भौतिक जगत की तुलना में आध्यात्मिक जगत के लिए विपरीत गुणों की आवश्यकता होती है।

भौतिक क्षेत्र में, आत्म सम्मान महत्वपूर्ण है। जबकि दिव्य क्षेत्र में दीनता महत्वपूर्ण है, अन्य लोगों को सम्मान देना महत्वपूर्ण है। भौतिक क्षेत्र में धन, शक्ति, कौशल, प्रसिद्धि, विलासिता, सौंदर्य आदी सब वांछनीय चीजे हैं, जबकि आध्यात्मिक क्षेत्र में वे किसी काम के नहीं हैं बल्कि इनका होना आध्यात्मिक प्रगती के लिए बाधक है । भौतिक एवं आध्यात्मिक जगत की आवश्यकताएं विपरीत क्यों हैं? उत्तर है कि भौतिक वादी शरीर को 'मैं' कहता है इसके विपरित आध्यात्म वादी आत्मा को 'मैं' के रूप में रखता है। भौतिक 'मैं' शरीर है जबकि आध्यात्मिक 'मैं' आत्मा है। चूँकि भौतिक क्षेत्र शरीर को महत्व देता है, भौतिक वादी कामुक सुख, शारीरिक सुख, भौतिक वस्तुओं का बाहरी ज्ञान आदी शरीर संबंधी वस्तुओं में आनंद ढूंढता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

ईश्वरीय क्षेत्र आत्मा को महत्व देता है और इसलिए खोज क्षेत्र ईश्वर और ईश्वर का दिव्य क्षेत्र है।

समस्या यह है कि आत्मा को किसी भी तरह का काम करने के लिए मन और शरीर की आवश्यकता होती है। इसलिए, मन और शरीर हमेशा आत्मा से जुड़े होते हैं। अशुद्ध स्थिति के कारण असीम सुख प्राप्त करने में असमर्थ, मन अल्पकालिक भौतिक सुख पर निर्भर करता है जिसे शारीरिक सुख के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। चूँकि भौतिक सुख आसानी से उपलब्ध हैं, मन को उन दिव्य सुखों में कोई रुचि नहीं है जो

आसानी से उपलब्ध नहीं हैं। चूँकि दिव्य सुख प्राप्त नहीं हैं, मन हमेशा संतुष्टी की अवस्था में नहीं रहता और इसलिए संतुष्टि के लिए वापस भौतिक सुखों की तलाश करता है। इस दुष्टचक्र को तोड़ने की जरूरत है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

यह जानना जरूरी है कि हम जिन कृष्ण की उपासना कर रहे है वे सर्वोपरि तत्व है। यदि उस व्यक्तित्व का सच्चा ज्ञान नहीं है जिसे पूजा जाता है, तो उस आध्यात्मिक पथ पर टिके रहना संभव नहीं है। उदाहरण के लिए जब कोई ईश्वर की पूजा करता है तो कई अन्य लोग हैं, जो भगवान के अन्य रूप की पूजा करते हैं (हालांकि भगवान के सभी रूप दिव्य हैं और अनंत अनंत आनंद से लबालब भरे हैं, प्यार का अभिव्यक्ति अलग है।), बता सकते हैं, 'अरे! तुम क्या कर रहे हो? आप कृष्ण के पीछे क्यों हो? आप शंकर को नही जानते? वे जल्दी प्रसन्न होते हैं। आप वहां पर दैवीय आनंद जल्दी प्राप्त करेंगे। देवी, गणेश और अन्य के बारे में कई तर्क हो सकते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

पहले शंकराचार्य द्वारा समर्थित एक अन्य मत हैं। इनके अनुयायी बहस कर सकते हैं, 'आप प्यार और विनम्रता की बात कर रहे हैं? तुम खुद ही ईश्वर हो! '

अन्य धर्मों के भी मत अलग हो सकते हैं। कृपया ध्यान दें कि इन सभी धर्मों को संतों द्वारा स्थापित किया गया था, जिन्होंने दिव्य आनंद हासिल किया था और मैं उनके खिलाफ बात नहीं कर रहा हूं। लेकिन उनके अनुयायी जो संस्थापक के असली दिव्य इरादों को नहीं जानते, कह सकते है, 'अरे! हिंदू में क्या है? वहाँ इतने सारे हिंदू देवताएँ है। क्या यह संभव है कि वे अपने बीच लड़ें? भगवान केवल एक है। इसके अलावा हिंदूओं का भगवान इस पृथ्वी पर एक अज्ञानी व्यक्ति की तरह व्यवहार करता है; कितनी बकवास! फिर किसी भी मूर्ति में भगवान को सीमित करना यह बहुत बडी बेवकूफी है। भगवान से संबंधित कोई भी रूप नहीं हो सकता। जो

भगवान पूरे ब्रह्मांड का सृजन करता है वो पत्थर के टुकड़े में कैसे सीमित हो सकता है? हमारे धर्म इस्लाम को देखें, केवल एक भगवान - अल्लाह है। हमारे धर्म को स्वीकार करें। (इस्लाम काबूल कर लो।) अल्लाह की पूजा करें और आपकी सभी चिंताएं चली जाएंगी। '. अन्य धर्मों द्वारा ऐसे कई तर्क दिए जा सकता है जो मूर्तिपूजा नहीं मानते हैं। यदि आप सुनिश्चित नहीं हैं कि आप क्या कर रहे हैं तो आप अपना रास्ता या धर्म बदल सकते हैं। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि हम सभी मार्गों की तुलना करने के बाद यह निर्णय ले कि सबसे अच्छा पथ चुना गया है, और हमे इस पथ पर अडिग रहना हैं। आध्यात्मिक अभ्यास से कोई विचलन नहीं होना चाहिए। आध्यात्मिक अभ्यास करने से ही हम दिव्य आनंद की प्राप्ति की ओर आगे बढते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

संसारी लडका लडकी और मीरा-कृष्ण के प्रेम में कोई अंतर नहीं है। प्रेम वही है। प्रेम की वस्तु अलग है। मीरा को दिव्य प्रेम मिला, अनंत सुख से मालामाल हो गयी क्योंकि कृष्ण दिव्य व्यक्तित्व है। लेकिन संसारी लडका दिव्य न होने के कारण लडकी को नहीं दिव्य प्रभाव नही मिलता।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

ऐसे कई मामले हैं जहां लड़कियों को प्यार में धोखा दिया जाता है। लड़का या आदमी लड़कियों के लिए प्रेम जाल बिछाते हैं। वे उनके साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि वे किसी और से प्यार नहीं करते। उसका मकसद लड़की को धोखा देना, लडकी के उसके परिवार के साथ संबंधों को तोड़ना है और फिर उसे वेश्यालय बेचा जा सकता है या उसका धर्मांतर किया जा सकता है या कष्टमय जीवन जीने के लिए मजबूर किया जा सकता है।

लडकी, अनजाने उद्देश्य से अनभिज्ञ, प्रेम विकसित करती है और बाद में पूरी जिंदगी रोती है। वही प्रेम जिसने मीरा को सभी कष्टों से उबारा, वही प्रेम किसी दूसरे लड़की को एक पीड़ायुक्त के नरक में ले गया। क्यों? प्यार जिससे किया गया वो व्यक्ति गलत निकला।

प्यार के तरीके में कोई भी अंतर नही है। प्यार में प्रेमिका को अपने प्रियतम को देखने की इच्छा होती है, प्रिय से सुनने की, प्रिय के साथ रोमांस करने की और इसी तरह मिलन की इच्छा होती है। यदि प्रियतम कृष्ण हैं, तो यह भक्ति है। परिणाम है नित्य जीवन, अनंत सुख, शाश्वत आनंद। यदि प्रिय नश्वर व्यक्ति है तो परिणाम है नश्वर सुख। उसके साथ आयेंगेअनेक प्रकार के शारीरिक तथा

मानसिक दुःख और एक दिन मृत्यु और उसके बाद चौरासी लाख का चक्कर।

प्यार दिल का विषय जरूर है लेकिन बिना सोचे समझे करने पर लेने के देने पडते है। सर्वसमर्थ श्रीकृष्ण को अपना प्रियतम चुनिए और हमेशा खुश रहिये।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जगत में भी जिस व्यक्ति से नाता जुडता है उस व्यक्ति के अनुसार ही गती होती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

एक आदमी की चार बेटियाँ थीं। उसने अपनी चार बेटियों की शादीयाँ चार सगे भाइयों के साथ कर दी। वो बहुत खुश था कि उसके बेटियों की शादी अच्छे परिवार में हुई जहा सबको एकसा सुख मिलेगा।

चार भाइयों में से एक ने आईएस परीक्षा पास की और कलेक्टर बन गया। अन्य को आईपीएस के लिए समझौता करना पड़ा और पुलिस अधिकारी बने। तीसरे भाई ने बैंक परीक्षा पास कर ली और क्लर्क बन गया, जबकि चौथे भाई को शराब की लत लग गई और उसने अपना सब कुछ खो दिया।

चार बेटियों का क्या होता है? एक बेटी को एक आईएएस अधिकारी की पत्नी होने के नाते सब प्रकार सुख और सम्मान का आनंद मिला। आईपीएस अधिकारी की पत्नी ने भी अपने विशेषाधिकारों का आनंद लिया, क्लर्क की पत्नी ने एक सामान्य जीवन जीया, जबकि व्यसनी की पत्नी पैसे की कमी से परेशान थी और भीख मांगने पर मजबूर हो गयी।

इस प्रकार उन बेटियों का जिससे नाता जुडा उसके पास जो था, वही चीज उन बेटियों को मिल गयी।

मुक्केबाज अपने पेट में जोर से मुक्के लगवाता है लेकिन वही मुक्का तुरंत के पैदा हुए बच्चे को मार डालेगा।

उपर दिए हुए उदाहरण जैसे कई उदाहरण दिए जा

सकते है जिससे ये साबित होता है किसी भी क्रिया का परिणाम वो क्रिया जिस पर निर्देशित की जाती है उसके अनुसार मिलता है। एक ही काम है, लेकिन कार्रवाई के निर्देश के आधार पर अलग-अलग परिणाम प्राप्त होता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इसलिए यदि हम भगवान से नाता जोडेंगे तो भगवान के पास जो सामान है - अनंत आनंद, शाश्वत सुख, नित्य जीवन - वो हमे मिल जायेगा।

प्यार करने के तरीके अलग नहीं हैं, लेकिन प्यार संसारी व्यक्ति की जगह दिव्य व्यक्तित्व भगवान से ही करना चाहिए।

भागवत में एक कबूतर की एक कहानी है। एक जंगल था जिसमें एक कबूतर रहता था। वह एक पारिवारिक पक्षी था। उसकी एक पत्नी थी जिसे वह अपने जीवन से अधिक प्यार करता था। पत्नी ने भी स्नेह और देखभाल के साथ पति के प्यार का जवाब देती थी। वह काफी मेहनती थी और दोनों ने परिवार को खुश रखा जिसमें उनके बच्चे भी शामिल थे। दिन बडे सुख से बीत रहे थे। बच्चे चंचल और खुश थे। प्यार भरा घर आनंद का अनुभव कर रहा था।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

लेकिन एक दिन उस जंगल में एक बहेलिया पहुंचा और कबूतर के बच्चे उसके जाल से फंस गए। उन्होंने रोना, चिखना चिल्लाना शुरू कर दिया, मां अपने बच्चों की स्थिति को देख न सकी और उनकी मदद करने के लिए चली गयी और वह वो भी शिकारी के जाल में फंस गयी। वे सब इंतजार कर रहे थे कि कबूतर मदद करने आयेगा लेकिन कबूतर को पता था कि अपने परिवार को बचाना उसकी क्षमता से परे था। कबूतर के दुःख का कोई अंत नहीं था। उसके प्रियजन उसे छोडकर प्रस्थान कर रहे थे। पत्नी और बच्चे चिल्ला रहे थे लेकिन कबूतर असहाय था। उसके प्रियजनों को बलपूर्वक दूर ले जाया गया था, जिससे उसका दिल तूट गया। अपना शेष जीवन वो कबुतर दुःख में विलाप करता रहा।

भागवत आगे कहती है कि पारिवारिक मनुष्य जो अपने कुटुंब, मित्र आदि से प्यार करता है वो उसी कबूतर के समान मूर्ख हैं। क्योंकि मनुष्य जानता है कि मृत्युरुपी शिकारी अपने प्रियजनों को दूर कर देगा। अपना पूरा तन, मन, धन एवं जीवन को उस जगह पर दाँव पर लगाना सबसे बडी बेवकूफी है जहां नुकसान तथा

विनाश निश्चित है। आखिरकार कोई भी इस बात क्यों नहीं सोचता कि उन व्यक्तियों और वस्तुओं के पीछे जाने में तथा संग्रह करने में कोई समझदारी नहीं है जिनका एक दिन छुटना निश्चित हैं। जीवन रुपी नौका पर मनुष्य इंद्रियोंके सुख के पीछे दिवाना है। सब भुले हुए है कि वे जिस नाव पर सवार है उसका डूबना तय है।

यही कारण है कि युधिष्ठिर ने कहा था, 'इस धरती पर सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि हर कोई देखता है कि कई लोग रोज स्मशान घाट जा रहे हैं, फिर भी अन्य लोग मृत्यु के भुले हुए जीवित हैं जैसे कि वे कभी मर नहीं जाएंगे।'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

मृत्यु पर चिंतन इस जीवन की संक्षिप्तता एवं क्षणभंगुरता को उजागर करता है और फिर संभावना है कि व्यक्ति इस मृत्यु की अपरिहार्य स्थिति से बाहर आने के तरीकों और साधनों की तलाश करेगा तथा आध्यात्मिक मार्ग से श्रीकृष्ण मिलन की बात सोचेगा।

अहंकार को कम करने के लिए, पहला कदम ब्रह्मांड में अपनी स्थिति का एहसास करना है।

अवकाश यान द्वारा शनि के वलयों से लिया हुआ पृथ्वी का एक चित्र था। पृथ्वी सिर्फ एक छोटा सा बिंदु दिख रही थी। उस बिंदु पर एक मानव का स्थान और स्थिति क्या है? चित्र पास के ग्रह से लिया हुआ था। यदि चित्र किसी दूसरी गैलेक्सी से लिया गया हो तो पृथ्वी को कोई स्थान नहीं मिलेगा। जब आप पूरे ब्रह्मांड में एक बिंदु का भी प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं तो अहंकार क्यों होना चाहिए?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

कितने जीवित जीव मौजूद हैं? अनंत। और तुम अनंत आत्माओं में से सिर्फ एक हो। उन सभी में एक सी जीवन शक्ति और एक सी इंद्रिय और एक सा कामुक सुख है।

आपके पास क्या खास है? पैसे? क्या पैसा गुस्से, जलन जैसी मन की समस्या को रोक सकता है। नहीं! क्या पैसा मौत को रोक सकता है? नहीं! पैसा अधिक तनाव लाता है।

सामाजिक स्थिति? व्यक्ति की स्थिति का प्रबंधन भगवान द्वारा किया जाता है। क्या आपके पास अपने पिता, माँ कौन बनेगा इसका कोई चॉइस था? अपनी शारीरिक और मानसिक विशेषताओं के बारे में? नहीं!

शक्ति? शक्ति सबसे खराब है! यह आपको लगता है कि आप सभी को नियंत्रित करते हैं। सही में? क्या आप अपने मन पर नियंत्रण रख सकते हो? नही! क्या

आपका हवा, सूरज, बारिश पर नियंत्रण है ..? नहीं! फिर भी आपको लगता है कि आप सभी को नियंत्रित करते हैं?

सुंदरता? क्या आपको यकीन है? त्वचा को खोलें। अंदर क्या है? खांसी, मल, मूत्र, बदबूदार बदबू..आपको इस पर गर्व है? यदि हाँ, तो आपको मेंटल हॉस्पिटल में होना चाहिए।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

वास्तव में, आप भगवान के मेंटल हॉस्पिटल में हो। यह दुनिया मेंटल हॉस्पिटल है जिसमें पागल लोग रहते हैं। वे मेंटल इसलिए है कि वे आंखों पर पट्टी बांधकर काम करते हैं। अगर सामने कोई खाई है, तो क्या आप अंधेरे में यह कहते हुए आगे बढ़ने का साहस करेंगे -'हुह! कुछ नहीं होता'। क्या तुम पागल नहीं हो? आप जीवन के प्रति वही दृष्टिकोण अपना रहे हो। मौत के बाद क्या होता है, कुछ नहीं पता। वहां पूरा अंधेरा है। फिर भी आप -'हुह! कुछ नहीं होता' की उसी मानसिकता के साथ जीवन का आनंद ले रहे हैं! लोग पगल हैं क्योंकि वे अपने वास्तविक पिता और माता - भगवान को नहीं पहचानते हैं। वे यह भी नहीं जानते कि वे कौन हैं! वे नहीं जानते कि वे आत्मा हैं। उन्हें लगता है कि वे शरीर हैं।

और लक्ष्य को प्राप्त करने के बारे में क्या? उनको को यह भी नहीं पता कि लक्ष्य क्या होना चाहिए। सब भौतिक उपलब्धियों के पीछे है और उन सभी उपलब्धियों को एक दिन निश्चित रूप से खो दिया जाएगा - मृत्यु पर, फिर भी जीव उनके पीछे लगा है! क्या आपको इस पर गर्व है?

आत्मा की पहुंच बहुत सीमित है। इसकी जीवन शक्ति इसके शरीर तक ही सीमित है। मन आत्मा का सेवक है लेकिन मन आत्मा को नैकर बनाकर अपने अनुसार चलाता है और बहुत कष्ट देता है। यदि गंभीरता से चिंतन किया जाता है, तो ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके बारे में गर्व करना चाहिए।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

अहंकार ये ऐसा शत्रु है जो सुख को सुखा देता है। आत्म सम्मान से अहंकार पैदा होता है। इसलिए दूसरों का सम्मान करें और दूसरों से सम्मान की उम्मीद न करें, अहंकार कम हो जाएगा। यह आदत की बात है। अभी हमें सम्मान की उम्मीद करने की आदत है। रातोंरात आदतें नहीं बदली जा सकतीं। सतत प्रयास आवश्यक हैं। पहले शरीर से आत्मा के पृथक होने पर सोचिये। यह तुम्हारा शरीर है और तुम शरीर नहीं हो। अपमान शरीर का किया जाता हैं, आत्मा का नहीं। हर आत्मा दिव्य है, आनंद से भरा है, अविनाशी है। जब शारीरिक पहलुओं को ध्यान में रखा जाता है तभी अहंकार पैदा होता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

भौतिक संपत्ति की उपलब्धियाँ जीवनकाल तक सीमित हैं अस्सी साल, सौ साल बस! अनंत काल के साथ जीवनकाल की तुलना करें। भौतिक संपत्ति और उपलब्धियाँ निरर्थक प्रतीत होंगी। अहंकार कम होगा।

आपा खोए बिना सभी आलोचनाओं को स्वीकार करने का अभ्यास भी कर सकते हैं। दूसरों द्वारा टिप्पणियों का तर्कसंगत रूप से विश्लेषण किया जाना चाहिए। टिप्पणियाँ सही या गलत हो सकती हैं। इससे आपको परेशानी नहीं होनी चाहिए। यदि गलत है, तो प्रतिक्रिया न दे क्योंकि वे आपके लिए लागू नहीं हैं। यदि सही है, तो भी प्रतिक्रिया न दे क्योंकि कुछ परिवर्तन की आवश्यकता है और आपको सुधार के लिए कुछ रणनीति बनाने की आवश्यकता है।

भगवान बुद्ध के बारे में एक कहानी है। उनके प्रवचनों को सुनने के बाद, एक युवा ने आत्मिक ज्ञान की राह पर चलने का फैसला किया। लड़का घर छोड़कर भगवान

बुद्ध के पास चला गया और मठ में रहने लगा। अपने स्वार्थ की हानी से उसका पिता चिढ गया और भगवान बुद्ध के मठ चला गया। वहां पहुंचने पर उसने भगवान बुद्ध को गाली देना शुरू कर दिया। वह सुबह से शाम तक गाली देता रहा और फिर चुप हो गया। भगवान बुद्ध ने अपने शिष्यों से कहा कि ये आदमी को पूरे दिन चिल्लाने से थक गया है। उसे कुछ भोजन परोसें ताकि ये फिर से चिल्लाना शुरु करें। उस व्यक्ति को बढिया खाना देखने पर आश्चर्य हुआ। वह भगवान बुद्ध के पास गया और कहा, 'अगर मैंने इसमें से एक भी गाली किसी दूसरे को दी होती तो मुझे एक क्षण के लिए भी खड़ा नहीं होने दिया जाता और झगड़ा और लड़ाई अपरिहार्य हो जाती। लकिन आप पर इन गालियों का कोई भी असर नही दिखाई देता।'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

भगवान बुद्ध ने कहा, 'आपने मुझे गालियां दीं लेकिन वे मेरे किसी काम की नहीं थीं इसलिए मैंने उन्हें स्वीकार नहीं किया। वे गालियाँ आपके लिए लागू होंगी और आप ही का नुकसान करेगी क्योंकि आप उन्हें उपयोगी पाते हैं। '

यदि प्रेम या प्रेमयुक्त मिलन की सभी इच्छाएं स्वयं के रोमांटिक सुखों के लिए या स्वयं की खुशी के लिए हैं, तो यह स्वार्थी प्रेम है और यदि ये सभी इच्छाएं प्रियतम को खुश करने के लिए हैं, तो यह निष्काम प्रेम है।

मथुरा की एक महिला, कुब्जा ने कृष्ण को अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए उनसे रोमांस करने के लिए प्यार किया, जबकि वृंदावन के गोपियों ने कृष्ण से निस्वार्थ प्रेम किया। निस्वार्थ प्रेम सबसे ऊपर है और यही प्रेम हर व्यक्ति का लक्ष्य होना चाहिए।

अब एक बड़ा सवाल - क्या कृष्ण (ईश्वर) किसी भी भौतिक व्यक्ति की तरह है कि अगर कोई उससे प्यार करता है, तो वह उसे सभी कष्टों से मुक्त कर देगा और यदि कोई व्यक्ति उसे प्यार नहीं करता है, तो भगवान उसे पीड़ित करेगा ??

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इसका उत्तर यह है कि ईश्वर दिव्य है और इसलिए जब कोई भी ईश्वर से प्रेम करता है, तो उसका मन ईश्वर के साथ जुड़ जाता है और ईश्वर की दिव्य धारा संबंधित व्यक्ति के मन में प्रवाहित हो जाता है और अंततः सतत ईश्वरीय दिव्य धारा मन में लेने से हृदय का मायिक स्वरूप धीरे धीरे मिटता जाता है और मन 100% शुद्ध हो जाता है। तब भगवान या गुरू इसे दिव्य बना देते है। ये दिव्य अंतःकरण अनंत सुख को धारण करने में सक्षम हो जाता है और इस प्रकार भगवान या गुरू अपने प्रेमी पर कृपा करके उसके मन में दिव्य प्रेम डाल देते है। ऐसा व्यक्ति मृत्यु से परे हो जाता है। अन्य सभी दुःखों से मुक्त हो जाता है और स्थायी रूप से अनंन्त काल के लिए अनन्त प्रेम आनंद प्राप्त करता है।

केवल प्रेम करने पर ही भगवान की कृपा होती है ऐसा नही है। किसी भी भाव से मन का भगवान से एक हो जाना जरूरी है जिससे कि भगवान की दिव्यता मन को शुद्ध कर सकें।

कंस ने भय से, शिशुपाल ने द्वेष से, राक्षसों ने शत्रुता से, गोपियों ने प्यार से भगवान के साथ मन को एक किया। सबको अनंत सुख मिला।

लेकिन संसारी व्यक्ति के पास इसी दिव्यता का अभाव है, उसका मन भौतिकवादी इच्छाओं से भरा है और इसलिए संसारी व्यक्ति के प्रेमी का मन अधिक अशुद्ध हो जाता है क्योंकि प्रेम संबंध से अशुद्ध सामग्री प्रेमी के मन में बहती है। इस मन को दिव्य में नहीं किया जा सकता और इसलिए संसारी प्रेमी को मृत्यु और अन्य सभी कष्टों को भोगना पड़ता है।

निष्कर्ष ये है कि ईश्वरीय क्षेत्र में प्रवेश पाने के लिए दिव्य व्यक्तित्व से ही प्यार करना चाहिए।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

भौतिक वस्तुओं के पीछे मन जाता है तो जाने दो, लेकिन ध्यान रखें कि हर जगह और हर जीवित जीव में ईश्वर है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

किसी से बात करते समय याद रखें कि केई तीसरा व्यक्ति है जो तुम्हारी हर बात सुनता है, तुम्हारे मन की हर बात जानता है। तुम्हारे निजी और गुप्त जीवन को भी जानता है। आपके पास कोई गोपनीयता नहीं बची है। वो आपकी सभी सोच को रिकॉर्ड करता है और इस रिकॉर्डिंग का उपयोग आपके भविष्य को तय करने के लिए सबूत के रूप में करता है।

ये एहसास जब आपको होगा तो आप पाप करना छोड़ देंगे, आप दूसरों को धोखा देना, शारीरिक या मानसिक कष्ट देना बंद कर देंगे, आप दूसरों पर अत्याचार करना बंद कर देंगे, आप तथ्यों को तोड़ना बंद कर देंगे, आप बुरी योजनाओं का समर्थन करना बंद कर देंगे, किसी के साथ अन्याय नही करेंगे... क्योंकि अब आपको यकीन है कि कोई ईश्वर है और वो इतना शक्तिशाली है कि वह सबकुछ कर सकता है।

आपको नरक की भयानक यातनाएँ दे सकता है, वह आपको किसी भी जीव के शरीर में डाल सकता है जैसे कि कीड़े, कुत्ते और बिल्लियाँ जहा आप हमेशा खुद को बचाने के लिए दौड़ते रहेंगे और उन जीवन के माध्यम से आप भोजन की तलाश में रहेंगे, पानी और आश्रय ढूंढते रहेंगे। कभी-कभी आप भूखे-प्यासे रह जाएंगे। बड़े जानवर आपको खा जाएंगे। यह सब भगवान द्वारा आपके सोच विचार के रिकॉर्डिंग का परिणाम है।

समझदार बने। भविष्य में मिलने वाले कष्टों से बचें। यदि आप किसी कीट, पतंगा को बताने की कोशिश करते हैं, 'लौ के पास मत जाओ। आपको मौत का सामना करना पड़ेगा। ' तो वे नही समझ सकते। उनमें समझने की क्षमता नहीं है कि क्या कहा जा रहा है। वे मर जाते है। मानव में समझने की क्षमता है। इसका उपयोग करें और अपने आप को बचाएं। इस जीवन में ही भगवान का प्यार प्राप्त करें।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

www.shreeradha.com
shreeradha. eschool@gmail.com
WhatsApp. +91 9423209132

भक्ति कौन कर सकता है?

स्त्री, पुरूष, नपुंसक, बाल, युवा, वृद्ध, किसी भी जाती धर्म का, देशी, विदेशी, बद्ध, मुक्त, पुण्यवान, पापी, लंगडा, लुला, धनी, निर्धन, पुजारी, शराबी, पतिव्रता, वेश्या, अनाचारी, दुराचारी, भ्रष्टाचारी, साधक, सिद्ध, सन्यासी, गृहस्थी, वानप्रस्थी, ब्रम्हचारी - कोई भी कर सकता है। केवल मनुष्य ही नही अपितु सब चराचर जीवों को भक्ति का अधिकार है।

सब अवस्थाओं में भक्ति। खाते, पीते, सोते, जागते, काम करते हमेशा करो। नहाना जरूरी है? नही, आपकी मर्जी। नहाना हो तो नहाओ या महीनो मत नहाओ या पाखाना लपेटे रहो। लाल, पीले, नीले जिस रंग के चाहो कपडे पहनो। बस सादगी से रहो। देह प्रदर्शन ना करो।

फलाहार, दुधाहार या जंगल के कंदमूल, पत्ते खाकर रहने की जरूरत? कतई नही। रोटी, दाल इत्यादी सादा शाकाहार काफी है।

सब काल में भक्ति। सुबह, दोपहर, शाम, रात सब समय भक्ति करो।

सब स्थानों में भक्ति। मंदिर, मस्जिद जाना जरूरी है? नही, घर में करो, शौचालय में करो, मयखाने में करो। जहा तुम्हारा मन चाहे वहा करो बल्कि सब जगह पर

करो क्योंकि ऐसी कोई जगह है ही नही जहा भगवान ना हो।

क्या पूरब की ओर, पश्चिम की ओर मुह कर के करो?
नही, किसी भी दिशा की ओर मुह करो।

क्या शास्त्रों का ग्यान आवश्यक है? नही, बेपढ़ा लिखा , घोर मुर्ख गवार भी भक्ति कर सकता है।

कोई व्रत, जप, तप, उपवास, पूजा, तीर्थयात्रा आदि की जरूरत?
बिल्कुल नही।

क्या योग, आसन करना पडेगा? नही, योग से तो दूर ही रहो।

बस भगवान से प्यार करना है, उनके लिए आसू बहाना है। उनका स्मरण ये विधी है तथा उनका विस्मरण ये निषेध है।
www.shreeradha.com
shreeradha. eschool@gmail.com
WhatsApp. +91 9423209132

www.shreeradha.com
shreeradha. eschool@gmail.com
WhatsApp. +91 9423209132

भक्ति किसको करनी है?

कोई भी कार्य करने से पहले मन उस कार्य के बारे में सोचता है। याने कोई भी कार्य की शुरूआत मन से होती है। मन जब निर्णय करता है तो उसे बुद्धी कहते है। मन और बुद्धी ये मन की ही दो अवस्थाएँ है।

मन इंद्रियोंको ऑर्डर देता है तो इंद्रिया वर्क करती है। इसलिए मन ही सब कार्योंका कर्ता है। गीता भी यही कहती है - बंधन एवं मोक्ष का कारण केवल मन है।

यही वजह है की भगवान केवल मन के विचारों को नोट कर के उसका फल देते है। वे इंद्रियोंका कर्म नोट ही नही करते। जैसे कोई मंदिर में भगवान के सामने हात जोड कर खडा है लेकिन उसका मन सामने वाले की पर्स चुराने की तरकीब सोच रहा है तो वह भक्ति नही मानी जायेगी बल्कि उसे चोरी का दंड मिलेगा।

इसीलिए भक्ति मन को करनी है। श्रवण कान का विषय है। सूंघना नाक का , स्पर्श करना त्वचा का तो रस लेना जिव्हा का विषय है। पूजा हात का काम है। पाठ और जप जिव्हा का काम है। तीर्थयात्रा पैरों का काम है। दर्शन आंख का काम है। जब तक इनके साथ मन से भगवान का चिंतन ना किया जाय तब तक पूजा, पाठ, जप, तीर्थयात्रा, मंदिर में दर्शन, भगवत विषय का श्रवण इत्यादि सब निर्रथक है और यदि मन से भगवान का चिंतन कर रहे हो तो इंद्रियों से भक्ति करे तो ठीक या ना

करे तो ठीक।

प्यार मन का विषय है। दुनिया मन नही देख सकती। प्यार है या नही इसका फैसला बाहरी व्यवहार से करती है और धोखा खा जाती है। लेकिन भगवान मन देखते है इसलिए उन्हे बाहरी व्यवहार से धोखा नही दिया जा सकता। जहा से विचार उत्पन्न होते है वही भगवान का निवास है। उनको किसी गवाही की जरूरत नही पडती। वे खुद नोट करते है और खुद फैसला सुनाते है। अतः भक्ति मन को ही करनी है।

www.shreeradha.com
shreeradha. eschool@gmail.com
WhatsApp. +91 9423209132

संत कबीर ने लिखा 'देख कबीरा रोया।' (देखकर कबीर रो पड़े)।

वह आत्मा की दुखद कहानी की ओर इशारा कर रहे थे। खरबों वर्षों में एक बार आत्मा को मानव जीवन मिलता है। ईश्वरीय सुख पाने का एक मौका है। लेकिन आत्मा इसे खो देती है। वह गलत दर्शन से निर्देशित हो जातीी है और गंभीर रूप से दंडित हो जाती है। वह सजा इतनी असहनीय होती है कि आत्मा चिखती है, चिल्लाती है, रोती है और पल पल रिहा करने की भीख मांगती है लेकिन कोई सुनने वाला नही होता।

कभी-कभी जीव या आत्मा को गलत धार्मिक विश्वास द्वारा निर्देशित किया जाता है और हत्या सहित अनेक अपराध करता है तथा धार्मिक किताब से कार्यों का समर्थन करता है। ये दोहरा अपराध है। पहला अपराध आपराधिक कृत्य है और दूसरा अपराध है अपराध का दोष धर्म और भगवान को लगाना। उसे फिर दोहरी सजा मिलती है।

कभी-कभी जीव भौतिकवादी दर्शन द्वारा निर्देशित होता है और भौतिक क्षेत्र में वर्चस्व पाने लिए पैसे के पीछे चली जाता है। अपनी शक्ति का गलत और अन्यायपूर्ण तरीकों से इस्तेमाल करता है जिसके कारण दूसरों को अपार कष्ट और पीड़ाओं का सामना करना पडता है। ईश्वर न्याय करता है और अपराधी को नरक के माध्यम से और विभिन्न घटिया निम्न पशु आदि का जीवन देता है जहां अपराधी को जिनके प्रति अपराध किया है उनका भोजन बनना पड सकता है। आप पक्षियों को कीड़े खाते हुए देख सकते हैं, छोटे जानवरों को खाने

वाले बड़े जानवर और कई तरह के दुःख सहन करने पडते है। जानवर अपना दर्द बयाँ भी नहीं कर सकते - बात करने की क्षमता नहीं!

यही कारण है कि संत तुलसीदास कहते हैं कि मानव जीवन नरक पाने के लिए सबसे अच्छा है क्योंकि इस युग में व्यापक रूप से मानव जीवन का दुरुपयोग हो रहा है। शारीरिक सुख की लत की वजह से आध्यात्मिक विषय कोई सुनना भी पसंद नही करता। संत तुलसीदास अन्य प्राप्तव्य भी बताते है जैसे कि स्वर्ग, मुक्ती, दिव्य प्रेम लेकिन वे पहले नरक को सूचीबद्ध करते है क्योंकि इस युग में जादातर लोग अपने कर्मों के कारण नरक की ओर अग्रेसर होते है।

सब कुछ जीव पर निर्भर है। यदि आप अपने आप को पीड़ित की स्थिति में डालेंगे तो आप उस दर्द की मेहसूस करेंगे, जो आपकी कार्रवाई पर ब्रेक लग जाएगा। ईश्वर का न्याय आपको वही पीड़ा में डाल देगा, जो आप दूसरों को दे रहे है। ये तो केवल चोरी का माल वापिस करना हुआ। सजा अलग से भुगतनी पडेगी। ये सब ग्यान यदि आप प्राप्त कर लेते है तो आप निश्चित रूप से इस तरह की कार्रवाई करने से पहले दो बार सोचेंगे।

अपनी बुद्धि को सही दिशा में ले जाएं अन्यथा समझे रहिये - 'विनाश काले विपरित बुद्धी' - 'विनाश प्रतिकूल बुद्धि का परिणाम है'। विनाश से बचे। बुद्धि को ठीक रखे।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

श्रीकृष्ण अत्यंत आकर्षक हैं और उनकी सुंदरता मादक है। लेकिन आध्यात्मिक दुनिया की श्रेणी में उनका स्थान कहां है?

श्रीकृष्ण स्वयं भगवान हैं और इसलिए कोई भी उनके बराबर या उनसे श्रेष्ठ नहीं है। वह सुंदरता, शक्ति, दया सहित अन्य सभी विशेषताओं में शीर्ष पर है।

महाविष्णु श्रीकृष्ण के एक अंश मात्र है जो ब्रह्मांड के संपूर्ण प्रबंधन की देखरेख करते है।

प्रत्येक ब्रह्मांड में एक ब्रह्मा, एक विष्णु और एक शंकर हैं जो क्रमशः ब्रह्मांड का निर्माण, ब्रह्मांड की रक्षा तथा पालन और अंत में ब्रह्मांड का नाश करते है।

भौतिक जगत को मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में बांटा गया है: स्वर्ग, जीवित दुनिया और नरक। सभी माया बद्ध जीव अपने कर्मों के अनुसार इन स्थलों में घूमते रहते हैं।

भगवान के अन्य सभी रूपों को भगवान के स्वांश के रूप में जाना जाता है। उनके पास भगवान की पूर्ण शक्तियां हैं। इसलिए भगवान के सभी रूपों के उपासक अनंत और शाश्वत आनंद पाने में सफल होते हैं।

लेकिन ईश्वर के तत्व होने के बावजूद, स्वांश होने कारण वे श्रीकृष्ण की ओर आकर्षित होते हैं।

इस प्रकार श्रीकृष्ण सबसे ऊपर हैं। उनके पास चार विशेष आकर्षण या माधुर्य हैं जो अन्य रूपों में मौजूद

नहीं हैं। वे हैं - रूप माधुरी, प्रेम माधुरी, लीला माधुरी, मुरली माधुरी

1. रूप माधुरी: अत्यंत मनमोहक आकर्षक रूप। जैसा कि पहले कहा गया है कि ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, महा विष्णु, दुर्गा, कमला, सरस्वती और अन्य सभी देवी-देवता अपनी सुंदरता एवं आनंद में कमी मेहसूस करते है जब वे श्रीकृष्ण को देखते है। इसी कारण वे श्रीकृष्ण के अधिक मधुर रूप की ओर खिंचे चले आते हैं।

एक बार कामदेव, जो सब को मोहित करता है, रास के समय, श्रीकृष्ण को मोहित करने गया लेकिन श्रीकृष्ण को अपनी ओर आकर्षित करने के बजाय खुद उनकी ओर आकर्षित हो गया। इसलिए श्रीकृष्ण का मदन मोहन भी है। मदन माने कामदेव, उनको जिसने मोहित किया वो है मदनमोहन श्रीकृष्ण।

यही कामदेव एक बार शंकरजी को भी मोहित करने गया था ताकि उनके मन में पार्वती से रतिक्रिडा करने की इच्छा पैदा हो। शंकरजी उस समय समाधी में लीन थे।

shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

निर्गुण निराकार निर्विशेष ब्रम्हानंद का अनुभव करने वाले परमहंस भी श्रीकृष्ण की सुंदरता के कारण उनकी ओर आकर्षित होते है। जैसे परमहंस राजा जनक श्रीराम की ओर खींच गये।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

एक परमहंस कहता है, "सब लोग सावध हो जाओ। उस गली से कोई ना गुजरना। वहा एक नीले रंग का नंगा बालक (श्रीकृष्ण) खडा है। वो बडा ही जादुई है। उसको जब मैने देखा तो उसने मेरा ब्रम्हानंद छीन कर मेरे मन को लूट लिया। मेरे जैसे परमहंस का ये हाल होता है तो तुम जैसे संसारानंदियों का क्या हाल होगा?" वैसे तो सिद्धांत के अनुसार जिनको संसार अच्छा लगता है उनका मन मायिक होने के कारण श्रीकृष्ण का अलौकिक रूप नही देख सकता लेकिन तुलना की दृष्टी से उपर वाली बात कही गयी है।

परमहंस लोग वृंदावन धाम में लता, पता, वृक्ष इत्यादि बनने में अपना भूरी भाग्य मानते है जिससे कि श्रीकृष्ण के दर्शनादि का सौभाग्य प्राप्त हो।

श्रीकृष्ण का दिव्य चिन्मय रूप इतना अनुपम है कि एक बार उस रूप को देख लेने पर उन पर कोई भी अपना तन, मन, धन एवं प्राण न्यौछावर कर देता है। उस रूप को अनंत काल तक देखने पर भी तृप्ती नही होती। यही हाल लक्ष्मी का हुआ था। एक बार और, एक बार और करते करते लक्ष्मी श्रीकृष्ण को देखती ही रह गयी।

संसार में ऐसा नही होता। चाहे कोई विश्वसुंदरी क्यूं न हो, उसे लगातार देखकर किसी भी व्यक्ति को एक दिन भी एक से सुख की अनुभूती नही हो सकती। थोडी देर बाद

मन भर जाता है और वह व्यक्ति किसी और काम - खाने, पीने आदि में लग जाता है।

श्रीकृष्ण के रूप में एक विषेश बात और भी है। उनको जितनी बार देखो वे और अधिक अधिक सुंदर दिखाई देते है। पहली बार देखा तो श्रीकृष्ण बहुत सुंदर लगे, दुसरी बार देखा तो और सुंदर लगे। इस प्रकार श्रीकृष्ण का सौंदर्य नित नवायमान हेता है और निरंतर बढता जाता है। इतना ही नही, श्रीकृष्ण के शरीर के जिस अंग को देखो वो सबसे सरस लगता है। जैसे उनके बालों को देखा तो बाल अति आकर्षक लगे लेकिन जब उनके नयनों को देखा तो वे बालोंसे सरस प्रतीत हुए। श्रीकृष्ण के शरीर का हरएक अंग अन्य सब अंगों से सरस लगता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

श्रीकृष्ण का रूप सब प्रकार से अलौकिक है। जो उसे देखता है वही उसका रस जान सकता है।

और तो और श्रीकृष्ण खुद अपने रूप पर मोहित हो जाते है। सोचते है - काश मैं राधा होता और इस रूप का आस्वादन करता।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

छोटे से श्रीकृष्ण जब घुटने के बल चलते थे तो एक बार उन्होने अपना प्रतिबिंब घर में लगे मणिखंब में देखा। बालकृष्ण ने उस प्रतिबिंब के रूप से मोहित होकर उसका अलिंगन करना चाहा। प्रतिबिंब भला क्या अलिंगन करता? फिर रोने लगे।

ऐसे ही एक बार प्रतिबिंब को देखकर छोटे से श्रीकृष्ण ने सोचा कि घर में मेरे जैसा ही एक और बालक मौजूद है और उससे बाते करने लगे - देख, मैं तुझे भी आधा माखन खिलाया करूंगा। मैया को कुछ बताना नही। लेकिन प्रतिबिंब से हा या ना कुछ प्रतिसाद न मिलने पर श्रीकृष्ण ने सोचा शायद ये मैया को मेरी माखन चोरी के बारे में बतायेगा। इसके बताने से पहले क्यो ना मैं ही
मैया को बता दूँ? तो श्रीकृष्ण मैया के पास जाकर कहा, "मैया, तुम मुझपर माखन चोरी की झूठा ही इल्जाम लगाती हो। चलो आज मै तुझे असली चोर दिखाता हूँ।" श्रीकृष्ण मैया को खंबे के पास ले कर गये और अपना ही प्रतिबिंब दिखाकर कहा, "देख मैया, ये है असली चोर! अब तो तुझे यकीन हुआ कि नही मै माखन नही चुराता हूँ।"

मैया ने सोचा मेरा लाला कितना भोरा है! उसको इतना भी पता नही कि प्रतिबिंब चोरी नही कर सकता? मैया ने लाला को बडे प्यार से उठाकर अपने कंठ लगा लिया।

छोटे छोटे प्यारे प्यारे भोरे भारे कन्हैयालाल की जय!

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

2. प्रेम माधुरी : श्रीकृष्णावतार में प्रेम माधुर्य अपनी परमचरम सीमा पर था। श्रीकृष्ण के प्रेम का रसास्वादन लता, पता, वृक्ष, पशु, पक्षी, मैया, नंदबाबा, ग्वाल बाल, गोप, गोपी सब ने किया। कुबरी से लेकर रानीयों तक माधुर्य रस उढेल दिया। निष्काम गोपियों को तो महाभाव कक्षा का अंतिम रस पिलाया।

जो भगवान ग्यानियों की समाधी में स्वामी बनकर, बुलाने पर भी नही जाता, वो भगवान प्रेम के वशीभूत होकर गोपियों की दासता करता है। खेल में हारने पर सखाओं का घोडा बनता है। यशोदा मैया के आँगन में कीचड में विहार करता है।

जो भगवान मंदिरों में वेद मंत्रों से बडे बडे विद्वानों द्वारा की स्तुती सुनकर भी एक शब्द बोलने के लिए राजी नही होता, वो भगवान गाय के बछडों को चुमकर प्यार से पूछता है, "दुध पीना है? तुमको छोड दूँ? जा। जा कर अपनी मैया का दुध पी ले।"

जिन भगवान का नाम ही संसारिक दुःख मृत्यु आदि के भवबंधन से छुटकारा दिलाता है, उस भगवान को यशोदा मैया ऊखल में बांध देती है। जिन भगवान के डर से महाकाल भी थरथर काँपता है, जिसके भृकुटी विलास से प्रलय हो जाता है, वो भगवान यशोदा मैया के पतले डंडे डर कर रोने लगता है।

जिसकी माया चराचर जीव ही नही बल्कि विधी, हरि, हर को भी बंदर की तरह नचाती है, उस भगवान को गोपिया थोडे से छाछ के लिए नचाती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जो भगवान अनंत सुख सागर है, वो भगवान वृषभानुनंदिनी श्रीराधा को रो रो कर, अनेक प्रकार के प्रयास कर के मनाता है। राधा के चरण दबाता है।

ये सब दिव्य प्रेम का परिणाम है जो जीव को अंतःकरण शुद्ध होने पर ईश्वर कृपा से मिलता है।

3. लीला माधुरी : नटवर नागर श्रीकृष्ण ने प्रचुर मात्रा में लीलाएँ की है। पैदा होते ही नाटक शुरु कर दिया। फिर राक्षसों का

संहार, कालिया दमन, गोवर्धन धारण, चीर हरण, धेनु चरावन, माखन चोरी, महारास लीला ऐसी अनेकोनेक लीलाएँ की है। प्रेम भरी लीला वैसे देखा जाय तो दो ही अवतारों में है एक श्रीराम और दूसरा श्रीकृष्ण।

लेकिन रामावतार की लीला मर्यादा युक्त है। एक शूर्पणखा श्रीराम की ओर आकृष्ट हो गयी तो उसकी नाक कटवा दी। कोई ऐसा सखा या सखी है जिसके गले मे हाथ डाल कर रामजी ने प्यार किया हो? कृष्णावतार की लीला में मर्यादा का कोई नामो निशान नही। माधुर्य ही माधुर्य है। मधुराधी पते अखिलम् मधुरम्।

4. मुरली माधुरी : श्रीकृष्ण की मुरली धुनी में इतना जादुभरी मधुरता है कि जो भी सुनता है वो श्रीकृष्ण की ओर खींचा चला आता है। गाय चरना भूल जाती है, बछडे दुध पीना छोड देते है, हिरन, मोर आदि पशु पक्षी दौडे चले आते है। वृक्ष , लता रोमांचित हो जाते है। शंकरजी अपनी समाधी भूल जाते है। गोपिया लोक लाज, कुल की मर्यादा, वेद धर्म सब का परित्याग कर के श्रीकृष्ण के पास पहुँच जाती है। इस मुरली धुनी को सुनने का भाग्यशाली कोई विरला ही होता है।

आइए हम सुख की हमारी चर्चा पर वापस आएं। आत्मा की संतुष्टि प्राप्त करने में विफलता का मुख्य कारण यह है कि हमने गंभीरता से विचार नहीं किया कि, "सुख या खुशी क्या है? हम इसके लिए कहां देखेंगे?" इस महत्वपूर्ण विषय पर हमारी चर्चा शुरू करें। खुशी हमेशा अनंत परिमाण की होती है और अनंत काल के लिए होती है। वो खुशी एक बार मिल जाने पर उस पर कभी भी दुःख का अधिकार नही हो सकता । दो महत्वपूर्ण विशेषण, जिन्हें अक्सर इस खुशी का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाता है, वो है अनंत और शाश्वत। ठीक है! हम उस खुशी को चाहते हैं जो अनंत और शाश्वत है। इस खुशी की तलाश में प्रमुख बाधा ये कथन है, "ठीक है, यह सच हो सकता है कि इस तरह की खुशी मौजूद है, लेकिन मेरा तर्क ये है कि मुझे इंद्रियों के माध्यम से खुशी का अनुभव होता है और इन सांसारिक या मायिक सुखों से मन को दूर करना बहुत मुश्किल है।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

आइए थोड़ी देर के लिए मायिक खुशियों पर विचार करते है।

1. क्या कोई वस्तु जो किसी भी अपवाद के बिना समानता के साथ सब लोग पसंद करते है? इस तरह की वस्तु को ढूंढना मुश्किल होगा क्योंकि हममें से हर किसी की पसंद अलग-अलग हैं। किसी को मिठाई अच्छी लगती है तो किसी को बिल्कुल नही। कुछ लोग शराब का आनंद लेते हैं, तो कुछ इसे गंदा महसूस करते हैं। कुछ संगीत के शौकीन हैं, कुछ इसे कर्णकर्कश पाते हैं। अच्छा बुरा लगना ये मन का गुणधर्म है न की वस्तु का। किसी भी वस्तु या आदमी में खुशी नही हुआ करती यदि होती एकही चीज सब लोग पसंद करते। लेकिन ऐसा नही होता है।

इसलिए, हमें यह महसूस करना चाहिए कि वस्तु में खुशी नहीं है, लेकिन इसकी उत्पत्ति हमारे मन की अवधारणा में है। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि वस्तु के गुण एकही होने के बावजूद, अलग-अलग व्यक्तियों को अलग-अलग समय पर वह वस्तु अलग-अलग अनुभूती देती है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का दिमाग अपने मूल्यांकन के साथ वस्तु को समझता है। चूंकि यह मूल्यांकन एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होता है, उसी वस्तु

से विभिन्न व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार की खुशी मिलती है। वही वस्तु किसी और लोगों के लिए आनंददायक नहीं होती है। इतना ही नहीं, कुछ अन्य लोग उसी वस्तु को नापसंद कर सकते हैं।

इस प्रकार, मायिक सुख मूल रूप से वैचारिक या मनोवैज्ञानिक हैं। मायिक खुशी वैचारिक खुशी है। किसी भी वस्तु के बारे में आपकी अपनी अवधारणा आपको खुशी देती है और यह आपकी मूर्खता है कि आपको लगता है कि वस्तु में आपको खुश करने की क्षमता है।

हम कुछ उदाहरण देखेंगे।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

एक छात्र, जो धूम्रपान नही करता है, धूम्रपान करने वाले दोस्तों के संपर्क में आता है। उनमें से एक उसे सिगरेट देता है और कहता है,"जरा पी के तो देख, मजा आएगा।" प्रस्ताव को स्वीकार करने का निर्णय लेने से पहले धूम्रपान करने वाला सोचता है, "सिगरेट धूम्रपान सुखद हो सकता है। मुझे करके देखना चाहिये।" इस प्रकार, धूम्रपान से पहले वह धूम्रपान करने में कुछ निश्चित खुशी मानता है। उसने सोचा होगा कि खुशी इसलिए मिलेगी कि धूम्रपान करने से हम स्टाईलिश और मॉडर्न माने जायेंगे। या अन्य किसी सोच के कारण धुम्रपान लोगों द्वारा अपनाया जाता है। धूम्रपान करते समय, वह उस खुशी को प्राप्त करता है जिसे उसने धूम्रपान करने से पूर्व उसमें मानी थी। और मूर्खतावश सोचता है, "धूम्रपान वास्तव में आनंददायक है!"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

एक कुत्ता हड्डी चबा रहा था। हड्डी चबाते चबाते कुत्ते के मुख में घाव हो गया और उससे खून निकलने लगा। लेकिन वो हड्डी को चबाये जा रहा था ये समझ कर कि हड्डी से खून मिल रहा है। ठीक इसी प्रकार हमको किसी भी वस्तु या व्यक्ति से हमे हमारे मन का माना हुआ सुख ही मिलता है। लेकिन हम समझते है कि उस वस्तु या व्यक्ति या वस्तु से सुख मिल रहा है।

दो मित्र थे। दोनों ने रास्ते में एक लडकी को देखा। एक ने अनदेखा कर दिया। दूसरे ने सोचा, "ये लडकी बडी अच्छी है।" उसने अनेको बार यह सोचा कि बस इसी लडकी में सुख है। इसी से शादी करना है। अब वो उसके पीछे पड गया। कहता गया कि मुझे उससे प्यार हो गया है। लेकिन जब लडकी के बाप ने उसकी शादी कही और कर दी तो भाईसाब के दुःख की सीमा नही रही। किसी भी वस्तु में सुख का बार बार चिंतन ही हमे उस वस्तु के मिलने पर सुखी तथा उस वस्तु के ना मिलने पर दुःखी कराता है।

इसलिए यदि हम बार बार ये सोचेंगे कि श्रीकृष्ण में ही मेरा सुख है तो उनसे प्यार अवश्य हो जायेगा। हमारा मन इस संसारिक सुख से हट जायेगा और धीरे धीरे एक दिन अनंत एवं शाश्वत सुख का आस्वादन करने का अधिकारी बन जायेगा ।

विभिन्न धर्म अलग-अलग दर्शन का प्रचार करते हैं। बहुत से लोग सोचते हैं कि इसका मतलब यह हो सकता है कि प्रत्येक धर्म अलग-अलग नियमों द्वारा शासित है।
हालांकि, यह एक असंभव बात है। चूँकि सर्वोच्च शक्ति केवल एक है, वो सभी को समान रूप से नियंत्रित करती हैं।
भौतिक नियमों या आवश्यकताओं को देखें जो सभी को एक सी नियंत्रित करती हैं । जैसे हर एक को खाने की जरूरत है। आंखें सभी के लिए समान कार्य करती हैं। कान सभी के लिए समान कार्य करते हैं। क्या ऐसा है कि हिंदू नाक से, मुसलमान कान से और इसाई जीभ से देखते हैं?आपका विश्वास, आपकी जाति, आपका धर्म कोई मायने नहीं रखता।
यह देखो। एक व्यक्ति अपने दोस्त से मिलने जाता है। वह अपने दोस्त को भरोसेमंद महसूस करता है और उस पर पूरा विश्वास करता है।
www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132
यह दोस्त उसे खाने के लिए बुलाता है। खाना वो है परोसता है जो उसे पसंद है। इस दोस्त का उल्टा मकसद है और खाने में ज़हर मिला कर उसे खिलाया जाता है। परिणाम मृत्यु है। व्यक्ति का भरोसा काम नहीं आया। नियमों के अनुसार परिणाम मिला। क्या किसी व्यक्ति की पृष्ठभूमि जैसे धर्म, राष्ट्रीयता, रंग आदि के आधार पर परिणाम में कोई अंतर आयेगा? नही।
इस प्रकार विभिन्न धर्मों के लोगों पर शासन करने वाले आध्यात्मिक नियमों का अलग अलग होना संभव नहीं है। आध्यात्मिक नियम सभी धर्मों के लिए समान हैं।
धर्म एक डॉक्टर की तरह है। इससे ज्यादा कुछ नहीं। यदि आपको गलत दवाइयाँ मिलती हैं तो आप कभी ठीक नहीं हो सकते।
धर्म में आपकी आस्था मायने नहीं रखती।आप सही ज्ञान प्राप्त करते हैं या नहीं ये मायना रखता है।धर्म के नाम पर किसी को मारना आपको नरक में ले जाएगा। आप सोच सकते हैं कि आप स्वर्ग जाएंगे। लेकिन आप पाएंगे कि आपका उपदेशक और आप दोनों मिलकर नरक में पीड़ा से पीड़ित हैं। धर्म के नाम पर पाप कहीं अधिक खतरनाक हैं।
एकमात्र नियम जो सभी को नियंत्रित करता है, 'आप अपने कर्मों के फल भोगते हैं और वो फल आपको सर्वशक्तिमान ईश्वर देता है'। सही कर्म ही आपके सुख की कुंजी है। इसलिए कर्म

करते समय सावधान रहो। गलत कर्म तो होने ही मत दो भले ही प्राण जा रहे हो। प्राण तो एक दिन जायेंगे ही लेकिन सही कर्म आपका अगला जन्म सुखी करेगा और गलत कर्म दुःखी।
आप उस भगवान को धोखा नहीं दे सकते। आप तथ्यों को तोड़-मरोड़ नहीं सकते। उसे कोई गवाह नहीं चाहिए। वह तुम्हारे दिल में वहीं रहता है। अपने षड्यंत्रों और पाखंडों पर ध्यान देना। वह आपके सभी उद्देश्यों को जानता है।

मन, बुद्धि, आत्मा और भगवान का सही ज्ञान प्राप्त करना बेहतर है। आज समझे अभी समझे। तत्व का ग्यान पाने में विलंब ना करे। जो मिला है उसको बार बार पढ़े, सुने। रिविजन नही की तो संसार में आसक्त हो जाओगे। मृत्यु पर मानव रूप खो जाता है। फिर कोई ग्यान पाने की गुंजाइश नहीं। केवल पछताना शेष रह जाता है।
इसलिए शास्त्र कहते है - उठो, जागो। इसी जन्म में भगवान को प्राप्त करो। वरना महान हानि हो जायेगी।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

धर्म के दो उद्येश्य होते है। एक सामाजिक और एक आध्यात्मिक। सामाजिक उद्येश्य के तहत धर्म आपको खान पान, रहन सहन, रीति रिवाज इत्यादि के बारे में नियम देता है। काम का बटवारा करता है। इन नियमों के द्वारा समाज की व्यवस्थित सुचारु रूप से चलती है। समाज में शांति बनी रहती है। लोग आपस में भाईचारे से रहते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

धर्म को तर्क पर बढ़ना चाहिए और तलवार पर नहीं। कोई भी धर्म अपनी उपयोगिता को खो देता है जब यह धर्म के नाम पर अन्याय, हत्याओं, महिला दुर्व्यवहार आदि अपराध होने लगते है । धर्म को समाज में शांति बनाए रखना चाहिए जो समाज में रहने और आध्यात्मिक मार्ग लेने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

आध्यात्मिक नियम भगवान संबंधी होते है। इन में बदलाव नही होता। आध्यात्मिक उन्नती के लिए पहले भी भगवान का स्मरण आवश्यक था, अभी भी है। ये हो सकता है कि बाह्य क्रिया में कालानुसार बदलाव हो। आध्यात्मिक नियम जीव को अनंत सुख के सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मन के शुद्धिकरण के लिए तरीके बताते है।

हम हिंदू धर्म का मामला लें, दोनों पहलुओं में कई बदलाव हुए हैं। पिछले कुछ वर्षों में कई संतों ने बाहरी उपस्थिति में बदलाव की अनुमति दी कि भगवान जो आप पहनते हैं, उससे नहीं जाते हैं, लेकिन आप जो भी सोचते है, वो भगवान नोट करता है। आध्यात्मिक क्रिया में भी प्राचीन काल में तपस्या से अनुष्ठान, फिर पूजा और अब इस युग में भक्ति बतायी गयी है ।

भगवान बुद्ध के समय पंडित लोग वेद और अन्य पवित्रशास्त्र उद्धृत करके लोगों को शराब पीने का, पशु बली चढा कर मांस खाने का उपदेश देते थे। भगवान बुद्ध ने हिंदू धर्म को अस्वीकार करने का फैसला किया, भले ही वह भागवान विष्णु के अवतार थे क्योंकि कोई भी तर्क लोगों को दुराचार से रोकने में सक्षम नही था। उस समय की आवश्यकता थी "पूर्ण अहिंसा.. अहिंसा परमो धर्मः"। उसके बाद शंकरचार्य आये। ये देखकर कि माहोल हिंदू धर्म को फिर से स्थापित करने के लिए सही है, उन्होंने

निराकार दर्शन का उपयोग करके बौद्ध धर्म के निर्वाण को हराया। तब फिर संतों ने भक्ति का प्रचार किया।

इस प्रकार केवल हिंदु धर्म ही समय के अनुसार परिवर्तनशील है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

हम जीवन जीते हैं जैसा हमारे पास आता है। हम जीवन की क्षणभंगुरता की ओर बिल्कुल ध्यान नही देते। हमें लगता है कि मृत्यु के बाद कुछ नही होता।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

एक सुपरस्टार ने कहा था कि वह हमेशा हर जिंदगी में एक फिल्म स्टार बनना चाहता है। एक मॉडल ने भी यह इच्छा व्यक्त की थी कि वह हर जीवन को मॉडल बनना चाहेगी। यह सब मूर्खता है।

पहली बात तो हम अपने वर्तमान भाग्य के पीछे कारण नहीं जानते हैं। हम यह भी देखते हैं कि मनचाही चीजें नहीं हो सकती हैं। अगर ऐसा हो तो कोई भी कभी भी नहीं मरेगा। वर्तमान जीवन की स्थिति के कारण जाने बिना भविष्य के जीवन के बारे में कोई भी इच्छा करना पागलपन है। इच्छापूर्ती के लिए अच्छी तरह से निर्देशित लगन तथा मेहनत से युक्त प्रयास करने की आवश्यकता है।

इस युग में यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि कोई भगवान नहीं है और कोई आत्मा नहीं है और सामान्य धारणा ये है कि कोई पुनर्जन्म नहीं हो सकता है। पुनर्जन्म वास्तविक है, लेकिन उसके नियमों के बारे में जानना होगा। इस ज्ञान की अनुपस्थिति में हम अनंत के विशाल सागर में एक नाव की तरह दिशाहीन भ्रमण कर रहे है। नाव को पानी में डूबने में अधिक समय नहीं लगेगा। हम मौत के बाद फिर से पीड़ा और मौतों के समुद्र में डूब भी रहे हैं, और हम खुश हैं कि हम इससे अनजान हैं!

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

सही नॉलेज प्राप्त करना बहुत अनिवार्य है।

मायिक सुख काल्पनिक होता है। किसी पंडित के भोजन के साथ शराब रख दो तो वो उठ भागेगा। लेकिन शराबी को शराब में सुख की अनुभूती होती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

हम सुख ढूंढ रहे है। लेकिन ये नही समझ रहे है कि हमारी सुख की कल्पना हमे बहुत बडा धोखा दे रही है।

क्या सुख पैसे में है? है तो कितने पैसे में है? 1000 कमाने वाला सोचता है 10000 मिल जाय तो मैं सुखी हे जाउंगा। इसका मतलब 1000 में सुख नही है लेकिन 10000 में है। अगर 10000 में सुख है तो 10000 वाला 100000 पीछे क्यों है? 100000 वाला 1000000 पीछे क्यों है? ये क्या नाटक है? हम ये समझ ही नही पा रहे है कि हमारी मान्यता गलत है। पैसा तो उतना ही जरूरी होता है जितने में हमारी जीने की जरूरतें पूरी हो।

क्या सुख सुंदरता में है? कितनी सुंदरता में? फिर सुंदर है वे मेकअप से अधिक सुंदर क्यों बनना चाहते हैं?

क्या सुख ज्ञान में है? कितना ज्ञान? फिर ज्ञानी लोग अधिक ज्ञान क्यों चाहते हैं?

क्या सुख प्रसिद्धि में है? कितना प्रसिद्धि? फिर क्यों प्रसिद्ध लोग अधिक प्रसिद्धि चाहते हैं?

तथ्य यह है कि बाहर कोई खुशी है ही नहीं। खुशी हमारी काल्पनिक मान्यता का परिणाम है।

इसलिए हम बार-बार कोशिश करते हैं लेकिन हमेशा अपूर्णता महसूस करते है जिसके कारण किसी चीज को प्राप्त करने के बाद उसके आगे की चीज प्राप्त करना चाहते है। और इसी कोशिश में एक दिन मर जाते है। ये अपूर्णता तब तक रहेगी जब तक असली आनंद जो भगवान है, वो नही मिल जाता।

सुख का रास्ता बाहर नही है। रास्ता मन के अंदर से है। भगवान

एक पति और एक पत्नी हैं। पत्नी असाधारण रूप से सुंदर है और उसके पास बहुत अच्छी शख्सियत है। पति अपनी पत्नी को अंदर बाहर से प्यार करता है। उसे यकीन है कि उसकी पत्नी उसके प्रति वफादार है। हो सके तो वह उसके बिना एक पल भी नहीं जीना चाहेगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

एक दिन पति को पता चलता है कि उसकी पत्नी का उसके एक दोस्त के साथ चक्कर चल रहा है। वह परेशान हो जाता है। उसका प्यार कम हो जाता है। एक और दिन उसे जानकारी मिलती है कि उसकी पत्नी अपने प्रेमी के साथ मिलकर उसकी हत्या करने की साजिश कर रही है ताकि दोनों उसकी संपत्ति का लाभ उठा सकें और उसके बाद खुशी-खुशी साथ रह सकें। वह निराश महसूस करता है।

अब वह उसे मारकर बदला लेने का फैसला कर सकता है या वह उसे तलाक दे सकता है। आइए हम मान लें कि वह उसे मारने का फैसला करता है। वह अपनी रिवाल्वर को अलमारी से निकालता है और को ट्रिगर पर अपनी उंगली रखकर अपनी पत्नी पर तान देता है। उसी क्षण, उसका प्रेमी अंदर आता है। अपनी प्रेयसी को बचाने के लिए, वह उसके पति से लड़ता है।

वह वस्तु, जो पत्नी है, अभी भी वैसी ही है जैसी वह पहले थी। उसकी खूबसूरती में कोई बदलाव नहीं आया है। वह अब भी उतनी ही आकर्षक है। उसका पति उससे कोई भी खुशी प्राप्त नहीं कर सकता है। प्रेमी को वो सबसे अधिक आकर्षक लगती है। पति का अपनी पत्नी के प्रती प्यार समाप्त हो जाता है। पति के मन में पत्नी की अवधारणा सबसे अच्छे से सबसे से बुरी का मोड़ लिया है। सुख कहाँ है? पति की पत्नी की अवधारणा में! कल्पना चाहे किसी कारणवश बदली हो लेकिन उसी कल्पना का परिणाम है कि जो सुंदर पत्नी एक दिन पराकाष्ठा का सुख देती थी वो अब पराकाष्ठा का दुःख देने लगी।

चौंकाने वाला रहस्योद्घाटन के लिए अब तैयार रहें! सुख सौंदर्य में नहीं होता। यदि है तो अब पति को क्यों नही मिल रहा है? सुंदरता अलग है, सुख अलग है। किसी दूसरे का बेटा चाहे

कितना भी संदर हो लेकिन माँ को अपने बेटे को चिपटाने से ही सुख मिलता है। सुख या खुशी सुंदर वस्तुओं का गुण नहीं है, लेकिन इसकी उत्पत्ति सुंदर वस्तुओं की अपनी अवधारणा में है कि ऐसी वस्तुएं आपके लिए खुशी लाती हैं।

इसी प्रकार, खुशी मधुर ध्वनि या मधुर स्वाद या खुशबू या सेक्स या किसी अन्य चीज की विशेषता नहीं है। इन वस्तुओं में सुख मन की ही रचना है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

क्या कोई वस्तु है जो आपको लगातार एक सी खुशी दे सकती हो? बिलकुल नहीं! काल्पनिक होने के कारण किसी भी मायिक वस्तु से मिलने वाला सुख प्रतिक्षण घटमान होता है। उसी वस्तु से पहले अधिक सुख, फिर कम, फिर और कम फिर खतम फिर वही वस्तु दुःख देने लगती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

अपने से आगे वाले को देखकर भी सुख की अनुभूती समाप्त हो जाती है। किसी के पास मारूती कार है। वो जब मर्सिडिज देखता है तो सोचता है अपनी वाली भी कोई कार है? वो कार बढ़िया है। यही हाल सब मायिक वस्तुओं का है।

भुख हो तो खाने में सुख है। प्यास हो तो पानी में सुख है। कामेच्छा हो तो कामिनी में सुख है। मानो किसी को भुख लगी हो। एक रोटी खायी बहुत अच्छा लगा। भुख कम हो गयी। दुसरी रोटी खायी। कम अच्छा लगा। भुख और कम हो गयी। तिसरी रोटी खायी। भुख खतम हो गयी। चौथी रोटी जबरदस्ती जैसे तैसे खायी। कोई सुख की अनुभूती नही हुई। पाचवी रोटी खाने को कहो तो कहेगा अब उल्टी होगी। लो! रोटी अब दुःख देने लगी। भुख खतम, सुख खतम। रोटी, मेवा, नमकिन, मिठाई सब का यही हाल है। इसका मतलब यह है कि खाने में सुख नही है। लेकिन खाना शरीर के लिए जरूरी है।

ईसी प्रकार हमारे जिंदा रहने के लिए अन्न, पानी, कपडा, मकान उपयोगी है। ये संसार हमे उपयोग के लिए दिया गया है कि इसका उपयोग करके ईश्वरीय सुख प्राप्त कर लो। लेकिन हम तो उसी में सुख मान कर उसका उपभोग करने लगे।

कोई भी मायिक वस्तु में आपको पूरी तरह से संतुष्ट करने की क्षमता नहीं है, वस्तु चाहे कितनी भी प्रतिष्ठित क्यूं न हो! चाहे कितनी भी बड़ी मात्रा में क्यूं न हो! किसी भी वस्तु के माध्यम से प्राप्त खुशी धीरे-धीरे कम हो जाती है। तो उस खुशी की तलाश क्यों न करें जो आपके साथ हमेशा के लिए रहेगी?

आपको यह महसूस करना होगा, "जब तक कि हमको भगवान वाली खुशी प्राप्त नहीं होती है, तब तक हम कभी भी आराम

नहीं कर पाएंगे।" सच्चाई यह है कि आपका उद्देश्य हमेशा अनंत एवं शाश्वत खुशी या आनंद प्राप्त करना रहा है। आप कभी भी सीमित आनंद नहीं चाहते है। सिर्फ इतना है कि आप आनंद गलत जगह ढूंढ रहे है। आप आनंद वहा ढूंढ रहे है जहा वो है ही नही। अनंत एवं शाश्वत आनंद संसार में नही बल्कि भगवान में है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

दुःख में कमी भी सुख की अनुभूती कराती है। मई की गर्मी में, भरी दोपहर में धूप में खडा रहने में सुख होता है? आप कहेंगे हो ही नही सकता। हाँजी, होता है। एक आदमी को धूप में खडा करके पीट रहे थे। बिचारा दुःख के मारे चिल्ला रहा था। थोडी देर बाद उसको मारना बंद कर दिया। अब उसको धूप में खडा होने पर भी सुख मिल रहा है। दुःख की कमी उसको सुख दे रही है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इसके अलावा और कुछ है। किसी वस्तु या व्यक्ति में सुख की कल्पना मन में उसको प्राप्त करने की इच्छा निर्माण करती है। मन सुख पाने के लिए तब तक इच्छाएं पैदा करेगा जब तक आप हमेशा के लिए संतुष्ट नहीं हो जाते। ठीक है, अगर जो इच्छा पैदा की जाती है वह पूरी नही होती है, तो क्रोध पैदा होगा और आपको दुःखी करेगा। अगर वो इच्छा पूरी होती है तो लोभ पैदा होगा, क्योंकि मन उन वस्तुओं में आसक्त हो जाता है जो आपको सुख देती हैं। आप उस वस्तु को पाने के लिए कष्ट उठाएंगे। उस वस्तु को ठीक रखने के लिए कष्ट उठाएंगे। उस वस्तु को सुरक्षित रखने के लिए हर तरह के कष्ट उठाएंगे। और यदि वह वस्तु नष्ट होती है तो कष्ट ही कष्ट है।

जितना अधिक आप प्राप्त करते हैं, उतनी अधिक उस वस्तु को और पाने की इच्छा उत्पन्न होती हैं और उतनाही आप अधिक बेचैन हो जाते हैं, क्योंकि आपको इसे और अधिक इकट्ठा करने के लिए अधिक प्रयास करने पडते है। आप अधिक चिंतित हो जाते है। "अगर कोई इसे मुझसे छीन लेगा तो क्या होगा? ये खराब या नष्ट होगी तो क्या होगा?" सभी प्रकार के तनाव और भय विकसित होते हैं। कभी-कभी आप रातों की नींद खो देते हैं। संभावित प्रतिद्वंद्वी के लिए आपकी खोज शुरू हो जाती है। संदिग्ध व्यक्ति निर्दोष हो सकता है और उसकी आपके वस्तु में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं हो सकती है। फिर भी आप मानते हैं कि आपको उसे आगे बढ़ने से रोकना चाहिए, क्योंकि यह निवारक उपाय नहीं करना जोखिम भरा होगा! अगर, समय के साथ, आप अपनी इच्छा पूरी करने में विफल हो जाते हैं, तो आप तनाव युक्त होते है। निराश हो जाते हैं या क्रोधित हो जाते है। आप बहुत परेशान हो जाते हैं, घबरा जाते हैं। आईए देखें कि

आपने कहां शुरू किया था और आप कहां पहुँचे है।

आपको थोडा बहुत भ्रामक सुख मिला लेकिन आप चिंताओं, तनावों, आशंकाओं से ग्रसित हो कर अशांत हो गये जबकि आप खुश होना चाहते थे।

क्या आपको लगता है कि आप वास्तव में बहुत स्मार्ट हैं? कुल मिलाकर, आप हारे हुए हैं क्योंकि आपको अवांछित भावनाओं का सामना करना पड रहा हैं। और इन सब प्रयासों में किये पापों को ईश्वर के कानून के अनुसार भुगतना पडेगा उसका क्या? नरक की पीड़ा के रूप में और चौरासी लाख योनीओं में दुखों के रूप में सजा ये एक और लाभ है! आप कहां पँहुच गये? आपको इस दुष्टचक्र से बाहर आना पडेगा। जितना अधिक विलंब करोगे, उतने ही अधिक प्रयास आपको इससे बाहर निकलने के लिए करने होंगे। यह अत्यंत पारदर्शी है कि मायिक सुख रूपी सैतान की चंगुल से बाहर आना होगा एवं मन को भगवान में लगाना होगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

कोई भी इच्छा पैदा करना और उसे पूरा करना ऐसा ही है जैसे अपने पैर को कीचड़ में डालना और फिर साफ पानी से धोना और फिर यह सोचना कि "देखो मेरा पैर अब कितना साफ है! कुछ मिनट पहले यह इतना गंदा था!" आपने ही तो खुद इसे कीचड़ में डालकर गंदा कर दिया था। क्या आपको स्पष्टीकरण की आवश्यकता है? खैर, यह नीचे दिया गया है।

आप अपने ड्राइंग रूम में आराम से बैठे हैं। क्या करे? क्या करे? अरे! भगवान को ही सोचो। लेकिन आप इच्छा बनाते हैं, "मुझे कुछ खाद्य व्यंजनों का आनंद लेना चाहिए।" आप पास में एक दुकान से संपर्क करते है। रविवार होने के कारण दुकान बंद है। आपका इच्छा प्रबल है। बीस तीस किलोमीटर दूर अच्छे रेस्तरां में जाते है। खाना खाते है। घर वापस आकर फिर से ड्राइंग रूम में आराम से बैठते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

प्रारंभिक और अंतिम स्थिती में अंतर क्या है? कुछ भी तो नहीं! इस प्रकार आप इच्छा पैदा करते है। इसे पूरा करने के लिए सभी तरह के कष्ट उठाते है। इसे अंततः पूरा करते है। और इसके बारे में संतुष्ट महसूस करते हैं। यदि आपने कोई इच्छा नहीं बनाई होती, तो कोई बेचैनी नहीं होती। दूसरे शब्दों में, आप पहले बेचैनी पैदा करते हैं और बाद में इसे शांत कर देते हैं।

एक कामगार है। उसकी कमाई घर चलाने और अपने परिवार की देखभाल करने के लिए काफी है। पर एक दिन वो सोचता है, "मुझे व्यवसाय शुरू करना चाहिए।" व्यापार का फैसला करने से पहले, उसने अनावश्यक रूप से सोचा कि वह अपने वर्तमान मामलों से नाखुश हैं और उन्हें अधिक धन या उच्च स्थिति की तलाश करनी चाहिए। खैर, वो व्यापार में सफल हो जाता है और अब उसके पास चार मर्सिडीज कारें और एक महंगा अपार्टमेंट है। फिर भी वह सोचता है कि उसे विकसित होने के लिए दूसरे उद्यम में निवेश करके विविधता लाने की जरूरत है।

फिर से वह ठीक वैसा ही सोचता है, जैसा कि उसने व्यवसाय शुरू करने से पहले सोचा था कि वह अपने वर्तमान मामलों से नाखुश है और उसे अधिक धन या उच्च स्थिति की तलाश करनी

चाहिए।

निष्कर्ष क्या है? इच्छाएँ ब्लैक होल की तरह होती हैं। वे कभी भी पूरी तरह से संतुष्ट नहीं होंगी। इच्छाएँ हर चीज का उपभोग करेगी जो भी उन्हें पेश किया जाएगा। सब खा जाएगी एवं कहेगी और लाओ। वो तृप्त नही होगी वरन अन्य माँग सामने रखेगी।

दूसरे शब्दों में, किसी भी वस्तु या स्थिति को प्राप्त करने से पहले, आपको लगता है कि वे वस्तुएं आपको खुश कर देंगी और आपको आगे किसी भी चीज की आवश्यकता नहीं होगी। उन वस्तुओं को प्राप्त करने के बाद, वे आपको अल्पकालिन भ्रामक आनंद देती हैं। लेकिन वह बाद में बिना किसी उत्साह के एक नियमित कार्य बन जाता है। फिर आप नयी इच्छा बनाकर खुशी की तलाश करते है। ये तब तक चलता रहेगा जब तक आप भगवान वाली खुशी हासिल नही करते।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

एक और विचारणा है, "ये स्वीकार कर सकते है कि इस दुनिया में कोई सच्ची खुशी नहीं है, लेकिन ये स्वीकार करना होगा कि दुनिया दुःख, यातना और पीड़ा से भरी है।" इसलिए, इस विषय की गहराई में चर्चा करना आवश्यक है।

पति, पत्नी, पुत्र, पति के दोस्त, नौकर और पड़ोसी है। उन सभी को एक दूसरे से स्नेह है। खबर आती है - पति दुर्घटना में मर चुका है। आइए सबकी प्रतिक्रियाएँ देखते है। पत्नी बुरी तरह से रोने लगती है। वो दुःख बर्दाश्त नही कर पाती और बेहोश हो जाती है। बेटा रो रहा है। दोस्त बेहद दुःखी महसूस करता है। नौकर उदास लग रहा है। पड़ोसी टिप्पणी करता है कि यह बहुत बुरी खबर है, लेकिन सामान्य रूप से अपने नियमित काम करते रहता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

थोडी देर बाद फिर खबर आती है - पति जिंदा है! यह गलत पहचान का मामला था। आइए फिर से सबकी प्रतिक्रियाएँ देखते है। पत्नी बहुत खुश हो जाती है और असहनीय खुशी के कारण फिर से बेहोश हो जाती है। बेटा खुशी के आँसू बहा देता है। मित्र बेहद खुश महसूस करता है। नौकर हंसमुख लग रहा है। पड़ोसी टिप्पणी करता है कि यह बहुत अच्छी खबर है और सामान्य रूप से अपने नियमित काम करते रहता है।

इसका मतलब ये है, "आपको किसी भी मायिक वस्तु के पाने में जितनी सीमा का सुख होता हैं, उस मायिक वस्तु के खोने पर उतनी ही सीमा का दुःख होता है। सुख और दुःख की मात्रा बिल्कुल समान होती है।"

इस प्रकार मायिक वस्तुओं या व्यक्तियों में खुशी मानने की हमारी कल्पना में ही दुःख की उत्पत्ति है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

आप अनावश्यक रूप से सोचते हैं कि समाज में उच्च स्तर पर व्यक्ति समाज में निचले स्तर के व्यक्तियों की तुलना में अधिक खुश हैं। इसका कारण यह है कि, खुशी सोच पर निर्भर करती है और हर वर्ग के व्यक्तियों की सोच की रेखा समान होती है। उनके लिए उपलब्ध वस्तुओं से वे समान मात्रा में सुख प्राप्त करते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

आइए हम इसे और विस्तृत करें। एक वकील हर महीने पैसे बचाता है और आखिरकार एक कार खरीदता है। वकील के पास एक नौकर है। नौकर भी हर महीने पैसे बचाता है और आखिरकार साइकिल खरीदता है। वकील अपनी कार को लेकर बहुत खुश है। नौकर अपनी साइकिल को लेकर बहुत खुश है। वकील अपने नयी कार को दिखाने के लिए अपने दोस्तों के घर अनावश्यक रूप से घूमता रहता है। नौकर वही करता है। वो भी अपने दोस्तों के घर अनावश्यक रूप से घूमता रहता है ताकि उन्हें अपनी नयी साइकिल दिखायी जा सके। कुछ महीनों के बाद, वकील एक लंबी थका देने वाली सफर करता है और घर जाने के बाद शिकायत करता है, "दिनभर कार चलाने से बहुत थकान होती है।" उसके नौकर को भी शहर में कई जगहों पर जाना पड़ता है और इसलिए वह साइकिल की सवारी बहुत करता है और घर जाने के बाद शिकायत करता है, "दिनभर साइकिल चलाने से बहुत थकान होती है।" यदि आप नौकर को बताते हैं कि आपका मालिक उतना ही दुःखी है जितने कि तुम, तो नौकर प्रतिक्रिया देगा, "आपको किसी के दुःख पर चुटकुले नहीं बजाने चाहिए। उनके पास कार है। समाज में उनकी प्रतिष्ठा है। वे भी उतना ही दुःखी हो सकते है जितना कि मैं?"

हालाँकि समाज में वकील और नौकर के बाहरी परिस्थिति में काफी अंतर हैं, लेकिन उनकी आंतरिक भावनाएँ बिल्कुल एक जैसी हैं। इसलिए, आपको भ्रम से बाहर निकलना होगा, जैसे "अधिक धन, अधिक प्रसन्नता। उच्च स्थिति, अधिक प्रसन्नता। अधिक प्रसिद्धि, अधिक प्रसन्नता।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

सच तो यह है कि, गाय को हरी खाने से प्राप्त होने वाला आनंद उस आनंद के बिल्कुल बराबर है जो एक अमीर व्यक्ति को छप्पन भोग खाने से मिलता है।

इससे पहले कि आप किसी भी भौतिक वस्तु को प्राप्त करें, उस योजना को बनाने और तदनुसार कार्य करने में परेशानी है। जब आप उसे प्राप्त करते हैं, तो उसे संरक्षित और सुरक्षित करने में परेशानी है। यदि आप उसे खो देते हैं, तो परेशान ही परेशान रहते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

पहाड बडा होता है। उससे बडा समुद्र। समुद्र से बडा आकाश। सब से बडा भगवान है लेकिन मायिक इच्छाएं भगवान से भी बडी हैं। वे आपको कभी भी ईश्वर के पास नहीं जाने देंगी।

किसी भी वस्तु या व्यक्ति में सुख की कल्पना से उससे लगाव या प्यार हो जाता है इस सुख को प्रतिरोध करने वाले से द्वेष या शत्रुता हो जाती है। जितना अधिक सुख उतनी अधिक दोस्ती और जितना अधिक प्रतिरोध उतनी अधिक दुश्मनी होती है।

आइए हम दूसरों के साथ दोस्ती कैसे विकसित होती है इस पर विचार करते है। यह सुनिश्चित हैं कि यदि आप किसी भी व्यक्ति से कुछ खुशी प्राप्त कर सकते हैं, तो आप उस व्यक्ति के साथ दोस्ती विकसित करते हैं। खैर, खुशी कल्पना या अवधारणा पर निर्भर करती है। इसलिए, एक दिलचस्प खोज यह है कि आप उन लोगों के साथ दोस्ती विकसित करते हैं जब आप की और उनकी खुशी की अवधारणा समान वस्तुओं में होती हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

आप दो वर्गों में दोस्ती को अलग कर सकते हैं। एक तत्काल दोस्ती है और दूसरी कुल अवधि की दोस्ती है। तत्काल दोस्ती उन क्षणों की दोस्ती है जब वह व्यक्ति आपके अनुसार चलता है, आपकी बात मानता है। कुल दोस्ती एक व्यक्ति की उपयोगिता की तर्कसंगत सोच से ली जाती है, जो जीवनभर रह सकती है। तत्काल मित्रता एक विशेष क्षण में समाप्त होती है जब दो व्यक्तियों की सोच की पंक्तियाँ मेल नहीं खाती।आप ऐसे क्षणों में वो व्यक्ति आपके मन नही भाता एवं आप उसके दोस्ती का आनंद नहीं ले सकते। झगडा हो जाता है। मारपीट की नौबत आती है। बोलचाल बंद होती है। हो सकता है गुस्सा नियंत्रण में न रखने की वजह से न केवल दोस्ती समाप्त होती है, बल्कि आप उस विशेष रूप से अपने दोस्त के लिए शत्रुता विकसित कर सकते हैं, यदि उसके कार्य ऐसे हैं कि वे आपके हितों के विपरीत हैं। मतलब यह है कि, उस पल में आप अपने दोस्त को पसंद नहीं करते क्योंकि वह आपके अनुकूल नहीं रहता है। इस प्रकार, तत्काल दोस्ती उन क्षणों में समाप्त हो जाती है हालांकि समग्र दोस्ती जारी रख सकती है। यही हाल रिश्तों का भी है।
पती-पत्नी, माँ-बेटा या बेटी, बाप-बेटा, भाई- भाई, बहन-भाई इत्यादि सब नातो में कभी ना कभी खरोच आती रहती है। झगडे होते रहते है। तलाक वगैरहा भी हो सकते है। इसलिए मैत्री का ये परिग्यान आवश्यक है।

मन काम है सोचना, इच्छा बनाना। मन ऐसी मशीन है जो एक क्षण को भी चूप नही रह सकती। लगातार चलती रहती है। यह सामान्य अनुभव है कि हमारे विचार निरंतर बदलते रहते हैं। ऐसे ही दूसरे व्यक्ति के विचार भी बदलते रहते है। इसलिए एक दिन के लिए भी, कोई भी दो व्यक्तिओं के विचार एक से रहना असंभव सा है। कभी आप भगवान के बारे में सोचते हैं। कभी आप उच्च मूल्यों से प्रेरित हो जाते हैं। कभी आप जीवन का आनंद लेना चाहते हैं। और कभी आप काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या के प्रभाव में या अपने स्वार्थ के लिए सुनियोजित तरीके से हीन कार्य करते हैं। हिंदु दर्शन इन चार स्तरों को क्रमशः दिव्य, सात्विक, राजस और तामस क्रियाओं में वर्गीकृत करता है। इन वर्गों से संबंधित कुछ सोचने के तरीके नीचे सूचीबद्ध हैं।

1. ईश्वरीय सोच: आप ईश्वर को सर्वशक्तिमान, दयालु और प्रेममय मानते हैं। तत्वग्यान, पूजा, प्रार्थना, भजन, कीर्तन आदि करते हैं। आप अपने पिछले पापपूर्ण कृत्यों के लिए पश्चाताप करते हैं और भविष्य में ऐसी गतिविधियों में शामिल नहीं होने की प्रतिग्या करते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

2. सात्विक सोच: आपकी सोच उच्च नैतिक मूल्यों से संचालित होती है। आप दान, दया के कर्मों में लिप्त हो जाते हैं और परोपकारी प्रवृत्ति दिखाते हैं।

3. राजस सोच: आप वैध इंद्रियों के भोग के माध्यम से संतुष्टि चाहते हैं।

4. तामस सोच: आप पापी और आपराधिक कृत्यों की योजना बनाते हैं और उन्हें क्रियान्वित करते हैं। आप आलसी महसूस करते हैं या क्रोध और अन्य जानवरों की प्रवृत्ति से प्रबल हो जाते हैं।

सात्विक, राजस और तामस भौतिक माया के गुण है। और ईश्वर भक्ति इन गुणों से परे जा कर शाश्वत सुब पाने का तरीका है। ईश्वरीय चिंतन सबसे अच्छा है, तमस सबसे बुरा है और सात्विक राजस से बेहतर है। यह व्यक्तियों का पदानुक्रम है।

आपको यह देखकर आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए कि ईश्वर भक्ति को सभी दान और सेवा कार्यों से ऊपर रखा गया है। धर्म, राष्ट्र, जाति, पंथ, वित्तीय स्थिति, सामाजिक स्थिति इत्यादि के आधार पर किसी भी प्रकार के भेद के बिना किसी भी प्रकार के कष्टों से स्थायी रूप से किसी भी व्यक्ति को छुटकारा दिलाने की ईश्वर भक्ति की क्षमता होती है। परोपकार कर्म सभी प्रकार के कष्टों से लाभार्थी या उपकारकर्ता को राहत देने में सक्षम नहीं हैं। इस तरह की कार्रवाइयाँ ईश्वर की प्राप्ति के प्रति आपके मन को खोलने में मदद नहीं करती, क्योंकि लाभार्थी और उपकारकर्ता दोनों का मन सीमित भौतिक वस्तुओं में उलझा रहने के कारण शुद्ध नही हो पाता। इसलिए, इस तरह के कार्यों से उनमें से किसी को भी अनंत और शाश्वत खुशी नहीं मिल सकती। हाँ, ये है कि सात्विक कर्म उपकारकर्ता को स्वर्ग का सुख दिला सकता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

तो, चार मूड हैं जिनमें व्यक्ति अपने जीवन में घूमता रहता है- ईश्वरीय, सात्विक, राज और तामस। आसपास का वातावरण भी आपकी सोच पर काफी प्रभाव पड़ता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

अब सवाल ये है कि समान वातावरण में रहते हुए भी किसी दो व्यक्तियों के सोचने में अंतर क्यों होना चाहिए? जवाब यह है कि, हर व्यक्ति असंख्य जीवन जी चुका है और उसने अपने पिछले जीवन में, कई अन्य व्यक्तियों, सिद्धांतों, दर्शनशास्त्रों के प्रभाव में कई कर्म किये थे। प्रत्येक क्रिया, जो की जाती है, आपके दिमाग पर अपना निशान सा छोड़ देती है। ये शिलालेख जो विचारों के एक अंश से बनता है उसे हिंदु दर्शन में संस्कार कहाते है। ये संस्कार आपको उसी प्रकार का कर्म करने के लिए प्रेरित करते है जिसके कारण वो बने है। इसका मतलब यह हुआ कि पिछले जन्मों में बार-बार जो कर्म किये गये हैं, उसके संस्कार बलवान हो जाते है और उन संस्कारों के कारण उस प्रकार के कर्म करना उस व्यक्ति का स्वभाव बन जाता है जिसे व्यक्तित्व विशेषता के रूप में देखा जा सकता है। संस्कार जितने अधिक बलवान होते है उतनाही अधिक उस संस्कार से संबंधित गतिविधियों को करने का जिद्दीपन होता है। संस्कारों की विविधता के कारण प्रत्येक व्यक्ति दूसरों की तुलना में अलग-अलग सोचता है। किस मनोदशा का प्रभुत्व होगा ये उस पल में सक्रिय संस्कार, उस संस्कार की तीव्रताऔर आसपास के वातावरण के प्रभाव पर निर्भर करता है। सक्रिय संस्कार में परिवर्तन खुशी प्राप्त करने के हेतु होते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

आइए मान लें कि युगल है। उनमें से दोनों एन्जॉयमेंट के मूड में है। मतलब राजस मूड में हैं। पत्नी का राजस मूड अपने पति के मुकाबले ज्यादा मजबूत हैं। पत्नी एक संगीत कार्यक्रम यात्रा का प्रस्ताव देती है और पति तुरंत सहमत हो जाता हैं। दोनों घर छोड़ देते हैं। संगीत कार्यक्रम में जाने के दौरान, वे एक पुस्तक स्टाल में आते हैं। चूंकि संगीत कार्यक्रम में जाने के लिए पर्याप्त समय है, इसलिए वे उपलब्ध पुस्तकों को देखने के लिए बुक स्टॉल में जाते हैं। वहा ईश्वर की प्राप्ति के विषय पर एक किताब दिखाई पडती हैं। पति उसे उठाता है और थोडासा पढता है। उसका राजस मूड, जो पर्याप्त मजबूत नहीं था, पुस्तक द्वारा प्रदान किए गए ईश्वरीय वातावरण के परिणामस्वरूप पूरी तरह से बदल जाता है। वो सोचता है, सही बात है। थोडी ईधर थोडी ऊधर ऐसे तो सारी जिंदगी खतम हो जायेगी। भगवान के लिए तो समय दे ही नही पायेंगे। वह अपनी पत्नी से कहता है, "क्या यह जरूरी है कि हमें संगीत कार्यक्रम आज ही देखना होगा? क्या हम कल कार्यालय के घंटों के बाद इसकी योजना बना सकते हैं? यह पुस्तक बहुत अच्छी लगती है। मैं इसे अवकाश के समय में पढ़ना चाहता हूं।" पत्नी इस पर नाराज हो जाती है। वह अपनी पत्नी को बताता है, "ठीक है। आप संगीत कार्यक्रम देख लीजिए। मैं घर जाकर इस पुस्तक को शांतिपूर्वक पढूंगा।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

तो, पत्नी संगीत कार्यक्रम के लिए जाती है और पति वापस घर जाता है। कुछ घंटों के बाद पत्नी संगीत कार्यक्रम से लौटती है। वे दोनों अपने दृष्टिकोण को सही ठहराने की कोशिश करते हैं और अच्छा खासा नाटक खडा हो जाता है।

दोस्ती तभी रहती तक है जब तक अन्य व्यक्ति आपकी खुशी की कल्पना के अनुसार चलता है।

क्या आपको एहसास है कि आप शरीर नहीं हो? आप एक आत्मा हो, जिसको अनंत बार मानव शरीर मिला है। मानव शरीर क्यूं, कुत्ता, बिल्ली, गधा आदि चौरासी लाख योनियों में भ्रमण किया है। हर जन्म में मां, बाप, भाई, बहन, पति, पत्नी सब नये रिश्ते बनाए। कहां हैं वो सब?

यदि आपको एहसास है कि आप शरीर नहीं हैं, आप एक आत्मा हैं तो आपको स्वतः ही श्रीकृष्ण से प्यार हो जाएगा क्योंकि आत्मा का केवल एक और शाश्वत रिश्तेदार है - भगवान! जबकि शरीर के रिश्तेदार कई हैं और वे सभी शरीर के विनाश पर गायब हो जाते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जीव इस दुनिया में अकेला आता है और अंत में अकेला ही इस दुनिया से जाता है। कोई साथ नही जाता। यदि दो प्रेमी एकसाथ जहर खाकर मर भी जायें तो भी मरने के बाद एकसाथ नही जायेंगे। दोनों को अलग अलग अकेले जाना पड़ेगा। लडकी को उसके कर्मों के अनुसार यमदूत ले जायेंगे और लडके को उसके कर्मों के अनुसार। सब साथी यही छुट जायेंगे लेकिन भगवान जीव का साथ एक पल के लिए भी नही छोडते लेकिन हमको तो उनकी ओर देखना ही नही है तो वे क्या कर सकते है?

इसलिए कहा जाता है, केवल एकमात्र भगवान से ही प्यार करना चाहिए!!

जब हम हमारे सुख के लक्ष्य पर तथा बनते बिगडते रिश्तों के कारण पर गंभीरता पूर्वक विचार करेंगे तो जीवन के कठिन तथ्य प्रकट होंगे। फिर हमारी बुद्धी एक दृढ़ निर्णय लेगी कि, "दुनिया सुख या दुःख से रहित है। कोई भी व्यक्ति, चाहे कितना भी प्रयास करे, किसी से भी असली प्यार नहीं कर सकता और जो प्यार दिखाई देता है वो सब नकली है और तभी तक रहता है जब तक कोई अनुकूल रहता है। ” एक बार जब आप अनन्त और अनंत सुख प्राप्त कर लेते हैं, तो आप दूसरों को खुश करने के बारे में सोच सकते हैं। क्योंकि आपके पास आपके साथ खुशी का अनंत भंडार हैं, जो आप उन लोगों के साझा कर सकते है जो खुशी की तलाश में हैं, लेकिन अभी तक सफल नहीं हुए हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

प्यार का विज्ञान एक बार और समझ लेते है।
आप किसी भी व्यक्ति से तभी तक प्यार करते हैं जब आपको यकीन हो कि वह आपके लिए खुशियाँ लाएगा। किसी के लिए आपका प्यार सीधे उस खुशी की मात्रा के लिए आनुपातिक है जो आपको लगता है कि आप उक्त व्यक्ति या वस्तु से प्राप्त कर सकते हैं। आप उन व्यक्तियों से द्वेष या घृणा करते हैं जो आपको लगता है कि आपकी रुचि को नुकसान पहुंचा सकते हैं और किसी के लिए आपका द्वष या आपकी घृणा सीधे उस क्षति की मात्रा के आनुपातिक है जो आपको लगता है कि उक्त व्यक्ति या वस्तु आपके लिए लाएगी। आप उन व्यक्तियों के प्रति तटस्थ होते हैं, जो न तो आपके लिए खुशी लाते है और न ही आपकी रुचि को नुकसान पहुँचाते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इस अटूट निर्णय की मदद से कि इस दुनिया में न तो खुशी है और न ही दुःख, आप किसी भी व्यक्ति या वस्तु प्रति कोई भी लगाव, सकारात्मक या नकारात्मक न होने में सफल होंगे। आप किसी भी व्यक्ति या वस्तु से प्यार या द्वेष नही करेंगे। आप विरक्त हो जायेंगे। पूरी समस्या यही है कि मन संसार में फसा है। विरक्त मन भगवान में आसानी से लग जायेगा और आप सदा के लिए मालामाल हो कर भगवान के लोक में भगवान के साथ हमेशा अनंत आनंद का रसपान करेंगे। सही रास्ते पर चलना शुरू करोगे तो एक दिन मंज़िल तक जरूर पहुँच जाओगे। इसमें कोई शक की गुंजाईश नही है।

अंतिम निष्कर्ष है, जो याज्ञवल्क्य ऋषि ने अपनी पत्नी मैत्रेयी को बताया था, "कोई भी पति अपनी पत्नी से पत्नी की खुशी के लिए प्यार नहीं करता, लेकिन अपनी आत्मा को खुशी के लिए प्यार करता है। कोई भी पत्नी पति की खुशी के लिए अपने पति से प्यार नहीं करती, लेकिन अपनी आत्मा को खुशी के लिए प्यार करती है। कोई पिता अपनी संतान की खुशी के लिए अपनी संतान से प्यार नही करता, लेकिन अपनी आत्मा से खुशी पाने के लिए प्यार करता है। कोई संतान अपने पिता से पिता की खुशी के लिए नहीं, बल्कि अपनी आत्मा से खुशी पाने के लिए प्यार करती है। कोई भी माॅ संतान की खुशी के लिए अपनी संतान से प्यार नहीं करती, लेकिन खुद की आत्मा को खुशी लाने के लिए प्यार करती है। कोई भी संतान अपनी माँ को माँ की ख़ुशी से प्यार नहीं करती, बल्कि अपनी आत्मा को ख़ुशी दिलाना चाहती है। कोई भी दोस्त अपने दोस्त की ख़ुशी के लिए दोस्त से प्यार नहीं करता, बल्कि अपनी ख़ुशी पाने के लिए प्यार करता है। संक्षेप में, कोई किसी और की खुशी के लिए किसी और से प्यार नहीं करता, लेकिन खुद की आत्मा की खुशी के लिए प्यार करता है। मैत्रेयी! इसको सुनो। इसका मनन करो। इसको हमेशा याद रखो।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

प्यार प्रेमास्पद के सुख के लिए होता है। ये हमने सिद्ध किया है कि यहा तो सब अपना सुख चाहते है। प्यार ईश्वरीय क्षेत्र में ही संभव है। ईश्वरीय क्षेत्र में अनंत सुख होता है। इसलिए भगवान और महापुरूष (संत) ही केवल औरों के सुख की सोच सकते है। अतएव भगवान और महापुरूष ही केवल औरों से प्यार करते है।

लहरें और महासागर हम सभी समुद्र पर लहरों की तरह हैं। एक पल के लिए मिलते हैं और दूसरे में प्रस्थान करते हैं। अनंत की तुलना में कुछ वर्षों की एक छोटी अवधि क्या है! लहरों और लहरों के बीच कोई संबंध नहीं है! एक लहर का संबंध महासागर के साथ है! इसी तरह हम एक दूसरे से संबंधित नहीं हैं। हमारे सभी संबंध एक सर्वोच्च व्यक्तित्व, भगवान के साथ हैं। दो अपूर्ण आत्माओं (माया के तहत आत्माओं) के बीच कोई प्यार नहीं हो सकता है। आत्मा प्यार के महासागर में है लेकिन इसके अनुभव से रहित है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

"पानी, पानी हर जगह पीने के लिए एक बूंद नहीं है!" या "पानी बीच मीन पियासी सुनी सुनी आवती हाँसी।" यह हमारी हालत है। अनंत सुख के सागर में डूबे रहने पर भी ये जीव अशंत, अतृप्त, दुःखी है। आइए हम आनंद सिंधु परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करें। दूसरों से प्यार करने की मायावी सोच से बाहर आएं। यह किसी की भी क्षमता से परे है। सच्चा प्यार? यह केवल भगवान और संतों के पास है!

आइए हम अपना लक्ष्य ठीक तरह से निश्चित करें। समस्या स्पष्ट रहें। समस्या की गलत परिभाषा ने सभी पिछले जीवन से अभी तक कहर बरकरार रखा है। एक ही गलती को बार बार दोहराया नहीं जाना चाहिए। हमे अनंत जीवन, अनंत ज्ञान एवं अनंत सुख चाहिए। ये हमारी समस्या है। इसका समाधान भगवान के मिलन से ही होगा। इसी जीवन में भगवान को मिलने का और उसके प्यार को अनुभव करने का संकल्प लें। आप जो कुछ भी है, आपके पास जो कुछ भी है, चाहे जितनी कोशिश करो फिर भी, एक दिन जब आप मर जाते हैं तो आपको सबकुछ छोड़ना होगा। सभी रिश्ते, नाते, गर्व, धन, प्रतिष्ठा, शिक्षा, कौशल, प्रसिद्धि, संबंध ... सब कुछ! अब इसे क्यों चिपकाना है? चलो इसी जीवन में हम हमारा काम बना लें!

लहरें और महासागर हम सभी समुद्र पर लहरों की तरह हैं। एक पल के लिए मिलते हैं और दूसरे में प्रस्थान करते हैं। अनंत की तुलना में कुछ वर्षों की एक छोटी अवधि क्या है! लहरों और लहरों के बीच कोई संबंध नहीं है! एक लहर का संबंध महासागर के साथ है! इसी तरह हम एक दूसरे से संबंधित नहीं हैं। हमारे सभी संबंध एक सर्वोच्च व्यक्तित्व, भगवान के साथ हैं। दो अपूर्ण आत्माओं (माया के तहत आत्माओं) के बीच कोई प्यार नहीं हो सकता है। आत्मा प्यार के महासागर में है लेकिन इसके अनुभव से रहित है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

"पानी, पानी हर जगह पीने के लिए एक बूंद नहीं है!" या "पानी बीच मीन पियासी सुनी सुनी आवती हाँसी।" यह हमारी हालत है। अनंत सुख के सागर में डूबे रहने पर भी ये जीव अशंत, अतृप्त, दुःखी है। आइए हम आनंद सिंधु परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करें। दूसरों से प्यार करने की मायावी सोच से बाहर आएं। यह किसी की भी क्षमता से परे है। सच्चा प्यार? यह केवल भगवान और संतों के पास है!

आइए हम अपना लक्ष्य ठीक तरह से निश्चित करें। समस्या स्पष्ट रहें। समस्या की गलत परिभाषा ने सभी पिछले जीवन से अभी तक कहर बरकरार रखा है। एक ही गलती को बार बार दोहराया नहीं जाना चाहिए। हमे अनंत जीवन, अनंत ज्ञान एवं अनंत सुख चाहिए। ये हमारी समस्या है। इसका समाधान भगवान के मिलन से ही होगा। इसी जीवन में भगवान को मिलने का और उसके प्यार को अनुभव करने का संकल्प लें। आप जो कुछ भी है, आपके पास जो कुछ भी है, चाहे जितनी कोशिश करो फिर भी, एक दिन जब आप मर जाते हैं

तो आपको सबकुछ छोड़ना होगा। सभी रिश्ते, नाते, गर्व, धन, प्रतिष्ठा, शिक्षा, कौशल, प्रसिद्धि, संबंध ... सब कुछ! अब इसे क्यों चिपकाना है? चलो इसी जीवन में हम हमारा काम बना लें!

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इस जीवन में लोगों का साथ वैसा ही है जैसा यात्रा में सहयात्रीओं का साथ होता है। लोग इस दुनिया में रहते हैं .. मां, पिता, भाई, बहन, पत्नी, पति, दोस्तों या कोई अन्य संबंध। ये सब उन परिचित लोगों की तरह हैं जिनके साथ हम अपनी यात्रा के दौरान यात्रा करते हैं। यात्रा के दौरान ट्रेन में कहें, हमारे डिब्बे में लोग को रहते हैं। हम समय काटने के लिए उनके साथ गपशप करते। साथ में चाय पी सकते है। साथ में खाना खा सकते है। लेकिन जिसका स्टेशन आता है वो उतर जाता हैं। साथ समाप्त हो जाता है। स्थायी संबंध नहीं हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

ऐसे ही जीवन में हमारे रिश्ते होते है। पिता, माता, बेटी, बेटा, भाई, बहन, मित्र में से जिसका मृत्यु रूपी स्टेशन आता है, उसे जाना होता है। कोई भी हमारा स्थायी साथी नहीं है। केवल एक भगवान ही हर पल हमारे साथ रहते हैं और अपनी अकारण करुणा के कारण हमारे लिए कई चीजें करते हैं। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम उनकी करुणा मेहसूस नहीं करते हैं। भगवान ही हमारा का एकमात्र सच्चा निरपेक्ष साथी है। इसलिए सभी का वह एकमात्र प्रेमास्पद है। हमें उससे उस संबंध से प्यार करना चाहिए जो हमें सबसे ज्यादा पसंद है। वह हमारा क्या नही लगता? वह हमारा पिता, मां, बेटा, बेटी, दोस्त, पति, प्रेमी सबकुछ है। लेकिन सबसे दुःखद बात यह है कि हम कभी भी मानव जीवन के इस पहलू को नहीं देखते हैं .. !!!

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जीवन धूल के कणों की तरह भी है। हवा के एक झोंके में तैरती धूल की कण, हवा की दिशा में बहती जाती हैं। हवा बंद होने के बाद, कहीं भी बस जाती है। फिर, हवा का एक और झोंका उन्हें साथ ले जाता है। धूल के कणों

के बीच कोई संबंध नहीं है। बस मौके से, वे एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं और फिर से अलग होते हैं।

इसी तरह, सब जीव इस ब्रह्मांड में एक वैश्विक धूल के रूप में तैरते रहते हैं, जो अपने कर्मों के अनुसार निर्देशित होते हैं। जीवों के बीच कोई संबंध नहीं है। बस वे कुछ अन्य जीवें के साथ किसी जीवन में बस जाते हैं और फिर अलग हो जाते है। जो लोग इसे मेहसूस करते हैं, भगवान के साथ संबंध विकसित करते हैं। फिर वो धन, शक्ति, प्रतिष्ठा, स्थिति, वासना आदि की भौतिकवादी ताकतों द्वारा निर्देशित नहीं रहते हैं। भगवान के स्मरण में पारित क्षण केवल कुछ रचनात्मक काम में पारित किए जाते हैं। बाकी का कोई मूल्य नहीं है बल्कि इसका नकारात्मक मूल्य है! नकारात्मक इसलिए कि ये क्षण आपको भगवान से दूर ले जाते हैं, जिसका मतलब है कि आप खुशी से दूर जा रहे हैं और दुःख की ओर आगे बढ़ रहे हैं। भगवान को याद कर के ही कोई जीव सुखी रह सकता है।

कोई भी उससे अधिक बेवकूफ और अजीब नही हो सकता जो भगवान की उपस्थिति को अस्वीकार करता है। भले ही वह एक महान वैज्ञानिक क्यूं न हो। वो तो ये भी नही सही सही बता पा रहा है कि "मै कौन हूँ?" इस बात को हमने विस्तार पूर्वक समझा है कि "मै कौन हूँ?" ये प्रश्न तब तक हल नही हो सकता जब तक जीव खुद को आत्मा नही मानता।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

हमारे पास जो कुछ भी है उसके लिए हमे भगवान के प्रति आभारी रहना चाहिए और जो हमारे पास नहीं है उसके लिए भी हमे भगवान के प्रति आभारी रहना चाहिए। इस तथ्य को स्वीकार करें कि भगवान हमारे लिए सब कुछ है।

अभी तक हम अपने और अपने प्रियजनों लिए काम किया है। भगवान को या भगवान के जनों को अपना मानते ही नही है और अपना नहीं मानते इसलिए उनके लिए कुछ करने की बात आती है तो हजार बहाने बनाते है। हमारे पास जो है वो सब उसी भगवान का दिया हुआ है। लेकिन भगवान को हम कुछ भी वापस नहीं देते। यह बदलना चाहिए। हमे भगवान के लिए काम करना चाहिए, न कि परिवार और दोस्तों के लिए। यह कोई तरीका नहीं है कि अपने उपकार कर्ता को भूल जाए। परिवार की ओर कर्तव्यों का पालन करना चाहिए, न कि प्यार।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जब कोई छात्र अध्ययन के लिए अपना घर छोड़ देता है तो हॉस्टल में रहता है जहां हॉस्टल वार्डन छात्र की खाना आदि सभी जरूरतों का ख्याल रखाता है। इस कारण यदि छात्र हॉस्टल वार्डन को अपना पिता मानने लगे तो

वो छात्र मूर्ख एवं कृतघ्नी है। क्योंकि उसके ठहरने के लिए, खाना आदि के लिए उसके माता-पिता द्वारा भुगतान किया जाता है। हॉस्टल वार्डन छात्र का पिता नहीं है।

इसी तरह, भगवान जो जीव का पिता हैं, जीव की कुछ परिवारों के साथ इस धरती पर रहने की व्यवस्था करता हैं ताकि उसकी जरूरतों का ध्यान रखा जा सके। जीव के कर्मों के अनुसार उसके लिए शरीर, धन, संपत्ती आदि का प्रबंध कर देता है जो उसे परिवार से मिलता है। परिवार वाले तो अपने सुख के लिए जीते है। वे भगवान द्वारा दिया गया उसके भाग्य का ही उसको देते है।यह जीव के पिता के रूप में भगवान की स्थिति को नहीं बदलता है। जीव का सच्चा घर भगवान का निवास है। जीव को अवगत होना चाहिए कि एकमात्र शुभचिंतक, सुविधाकर्ता और आत्मा का प्रदाता ईश्वर है और इसलिए आत्मा को कम से कम ईश्वर को प्रति कृतज्ञता दिखानी चाहिए।

जीवन बुलबुले की तरह है। बुलबुले का अस्तित्व कुछ पल के लिए होता है। ऐसेही जीवन है। अनंत की तुलना में जीवन काल एक पल के बराबर भी नही है।

कोई नहीं जानता कि बुलबुला कब फट जाएगा। ऐसे ही जिंदगी कब खत्म होगी किस को पता? एक सेकेंड के अंतराल के लिए भी जीवन का कोई भरोसा नहीं दे सकता। जैसे बुलबुला क्षणभंगुर होता है, वैसेही यह जीवन क्षणभंगुर है। इसकी कोई गारंटी नही दे सकता। मृत्यु कब दस्तक देगी, पता नही। मृत्यु कभी भी आपकी पूर्व अनुमती ले कर नहीं आती है। इसलिए आध्यात्मिक क्षेत्र में उधार नही करना है। करेंगे करेंगे करते करते तो अनंत जन्म बीत गये। अनंत बार भयंकर दुःख एवं यातनाएँ सहन करनी पडी। लेकिन भगवान की भक्ति में हमेशा उधार किया। अब ऐसा नहीं करना है। आध्यात्मिक मार्ग चुनकर अपने जीवन काो सफल बनाना है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जीवन यात्रा का निर्णय कैसे किया जाता है?

जैसे सूचनाओं के पैकेट इंटरनेट पर उन पर लिखे गंतव्य पते के अनुसार यात्रा करते हैं, वैसे ही आत्मा को भी मन में पैदा होने वाले कामों के अनुसार यात्रा करनी पड़ती है।

कर्मों के अनुसार, गंतव्य में परिवर्तन होता है। आत्मा को स्वर्ग जाना है कि ईश्वर के निवास स्थान है या पृथ्वी पर मानव के रूप में या अन्य जीवित प्राणी या पौधे के रूप में जन्म लेना है, इसका निर्णय हमारे कर्म करते है।

पैकेट अपनी खुद की यात्रा नहीं कर सकते हैं, उन्हें संबंधित हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर के समर्थन की आवश्यकता है और निश्चित रूप से बिजली की जरूरत है। इसी तरह भगवान की उपस्थिति कर्मों का प्रभाव देने के लिए आवश्यक है ताकि आत्मा अपने कर्मों के अनुसार मार्ग का अनुसरण करे और दुखों और सुखों का अनुभव करे, अर्थात सुख और दुख पूर्व कर्मों का प्रभाव है।

इस प्रकार, हमारे कर्मों और अनुभवों के बीच कारण और प्रभाव संबंध है जिसका नियंत्रण भगवान करते है। इसलिए, भगवान को नियंत्रक है और जीव नियंत्रित है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जो लोग मेरे पोस्ट पढ़ते हो वो इस बात पर जरूर ध्यान दें कि भगवान से प्यार अति आवश्यक है। यदि प्यार नही है, उनका रूपध्यान नही है, उनके लिए आँसु नही आते है तो सब साधन निरर्थक है। बिना रोये प्रेम पियारो मीत किसको मिला है? श्री महाराज जी कहते है,"आँसुओं के बिना कीर्तन, कीर्तन नही है। तोता रटंत है वो।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

तुलसीदास जी ने कहा है,"मिलई ना रघुपती बिनु अनुरागा"। प्यार के कई तरीके हो सकते है। वो आप पर निर्भर है।

श्रीकृष्ण, श्रीराधा का जो रूप आपको पसंद हो उस रूप में आप उनको मान सकते हो। जो कोई लडका, लडकी, हिरो, हिरॉईन का रूप आपके मन को भाता हो, वो रूप आप श्रीकृष्ण, श्रीराधा को दे सकते हो। लेकिन याद रहे कि उन व्यक्तिओं को आप भगवान नही मान रहे हो। श्रीकृष्ण, श्रीराधा उन व्यक्तिओं से अलग है। आप उन व्यक्तिओं से प्यार नही कर रहे हो। आप उस रूप वाले श्रीकृष्ण, श्रीराधा से प्यार कर रहे हो। उनको पुकार रहे हो।

अब उस रूप वाले भगवान को मन से सोचो। उनसे प्यार बढ़ाओ। संसारी प्यार की तरह मिलन की सोचो। कभी सोचो कि वो हमसे दूर है। प्यार जैसे जैसे बढ़ेगा वैसे वैसे मिलन की प्यास बढ़ेगी। मन की व्याकुलता बढ़ेगी। आँसु आएंगे। प्रेम एक दिन रंग लाएगा।

मन को जो ड्रेस पसंद हो वो उनको पहनाओ। जीन्स पहनाओ। टी शर्ट पहनाओ। कोट टाय पहनाओ। जरा

संकोच ना करो। उनको मनपसंद खाना खिलाओ। आज कल ड्रेस पहनाने के लिए ॲप आते है। उसका इस्तेमाल करके उनको हररोज नये नये ड्रेस पहेना सकते हो। वर्चुअल चाय, कॉफी, नाश्ता, खाना बनाकर उनको खिला पिला सकते हो। वर्चुअल पूजा, आरती, दर्शन इत्यादि कर सकते हो। ये सब रूपध्यान सहित होना चाहिए। भगवान सर्वव्यापक, सर्वांतर्यामी है। भगवान का स्मरण चाहे जिस प्रकार से हो - भागवत कहती है, जिस किसी प्रकार से आपका मन भगवान में लगे वही भक्ति है। तरीका आप पर निर्भर करता है। मानसिक उपासना ही भगवान को मिलाती है। भगवान बाहरी क्रिया नोट ही नही करते है। मन का भाव देखते है।

बाकी चाहे आप कितने ही ग्रंथ पढ़ो, पूजा, जप, तप, व्रत, कीर्तन करो, भगवत् विषयक ग्रुप में पोस्ट लिखो उससे काम नही बनेगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में स्पष्ट कहा है - बंधन एवं मोक्ष का कारण केवल मन है। अतएव मन की साधना ही साधना है। केवल इंद्रियों की साधना से मन शुद्ध नही होगा।

मैंने मेरी वेब साईट पर स्पष्ट लिखा है कि मेरे बहुत से पोस्टस् जगद्गुरूत्तम श्री कृपालुजी महाराज जी की फिलॉसॉफि पर आधारित है। उनका पूरा जीवन ही लोक कल्याण के लिए समर्पित था। उनकी मंगल कामना संपूर्ण विश्व के लिए थी। उसी मंगल कामना के साथ ये पोस्टस् मैं लिख रहा हूँ। राधे राधे।

कैसी भैया है ये चतुराई
सोच सोच मति भरमाई
अति चतुर तरकीब निकलाई
कैसे कटवाई अपनो पाँव भाई

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इस दुनिया में ऐसे लोग है जो बडी तरकीब लगाकर भोले भाले लोगों को ठगते है या परेशान करते है। गुनाह खुद करते है पर इल्जाम औरों के माथे चढ़ाते है। फिर सोचते है, हमारे जैसा चतुर कोई नही है।

वो ये नही जानते है कि इन बडी तरकिब का मतलब अपने पाँव पर कुल्हाडी मारना है। वो भगवान तुम्हारी हर तरकिब जानता है। वो तुम्हे छोडेगा नही। इन बडी तरकिबों का बडा दंड देगा। जब असह्य यातनाएँ सहन करनी पडेगी तब सोचोगे ,"मेरे जैसा मुर्ख कोई नही हो सकता। मैने तो अपनेही पाँव पर कुल्हाडी मार ली है।

भक्ति करते समय ये याद रहे कि भगवान को अपने बराबर या अपने से छोटा मानना है। यदि यशोदा मैया श्रीकृष्ण को भगवान मानती तो क्या उनके पीछे दंडा लेकर भागती? उसके लिए तो भगवान बस उसका लाला है। क्या सखा लोग उनको घोडा बनाते? क्या गोपियॉ उनको प्यार भरी गाली देती?

उनके रूप, गुण, लीला, गुण, धाम, संत आदि का चिंतन करना है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

भगवान की एक प्रार्थना है -

जहा जहा मेरा मन जाय
वहा वहा हे कृष्ण, तेरा ही रूप है

जहा जहा मेरा सिर झुके
वहा वहा गुरूजी,आपही के चरण है

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

कई लोगों का एक सवाल है, 'भारत दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक देश है। आपको एक ही शहर में कई मंदिर मिलेंगे। अधिकांश घरों में भगवान के लिए एक अलग कमरा या सजावटी लकड़ी का आशियाना होता है जहां मूर्तियों को रखा जाता है। कई अवसरों पर विशाल धार्मिक उत्सव किए जाते हैं। लेकिन, अत्यधिक भ्रष्टाचार भी है। अभी एक केस में कोई न्यूज चैनल देखेगा तो ऐसा लगेगा की आरोपी के पक्ष में पोलिटीशियन, सितारे, पुलिस, डॉक्टर, दुबई का अंडरवर्ल्ड सब मिलके काम कर रहे है। जाँच एजन्सी का भी कोई भरोसा नही कि वो सच बाहर लायेगी। कोर्ट मिडिया पर अंकुश लगाना चाहती है। किस कानून के तहत? पता नही। स्थिती ईतनी गंभीर हो गयी है। ये सब क्यों?'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

उत्तर ये है कि भारत में देखी गई पूजा या भक्ति जो भी है, वो मुख्य रूप से इंद्रियों की भक्ति है। लोग हाथ से भगवान की पूजा करते हैं। वे मुख से भगवान का नाम लेते है। कान द्वारा भक्तिवादी प्रवचन और भक्ति गीत सुनते हैं। पैर से धार्मिक तीर्थयात्रा करते है। न केवल हिंदु बल्कि मुसलमान या अन्य धर्मों के लोग भी इंद्रियों द्वारा सबकुछ करते हैं। इसका अर्थ है कि मन भगवान का ध्यान नहीं करता। मन भगवान को याद करने की कोशिश नहीं करता। चूंकि ईश्वर का स्मरण मन से गायब है, इसलिए ये सभी प्रयास व्यर्थ हैं। सब पापों की जड़ मन है। मन बीमार है। भगवान का स्मरण उसकी दवा है जो कोई नही कर रहा है।

भगवान कहते है कि 'मन ही बंधन (मृत्यु सहित पीड़ा) और मोक्ष (शाश्वत आनंद) का एकमात्र कारण है।' यदि

पेट में बीमारी हो और इलाज के लिए दवा आंख में डाली जाय तो मरीज को कैसे ठीक होगा? यह किसी अन्य समस्या को जन्म दे सकता है। मन के लिए ईश्वरीय दवा की आवश्यकता होती है। ईश्वर की भक्ति में इंद्रियां सिर्फ सहायक हैं। लोगों को पता नहीं है कि भगवान का रूपध्यान सबसे महत्वपूर्ण है। सभी अभ्यास, जो रूपध्यान से रहित है, वैसाही है जैसे आत्मा के बिना शरीर। एक लाश की तरह होता है। लाश कुत्तेऔर गिद्दड के लिए भोजन है, उसी तरह से भगवान से दूर मन क्रोध, यौन इच्छा, ईर्ष्या, पाखंड आदि द्वारा खाया जाता है। इस तरह की इंद्रियों वाली भक्ति या पूजा मन की समस्याओं को मिटाने में सक्षम नहीं है। चूंकि मन की बीमारी का इलाज नही हो रहा है, इसलिए बीमारी बढ़ रही है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

फिर भी, कुछ भी न करने से ये बेहतर है।इंद्रियों से भक्ति करने वालों के यदि कोई ऐसा व्यक्ति मिल जायेगा जो उन्हें इंद्रियों के साथ मन लगाने के लिए कहेगा तो उनका काम बन जायेगा। इसके अलावा, बाहरी धार्मिक वातावरण के कारण कई लोग प्रवचन आदि सुनकर सही भक्ति करने लगते है। भारत में कई लोगों ने दिव्य आनंद हासिल कर लिया है। चूंकि यह वातावरण अन्य देशों में गायब है, इसलिए वहा ऐसे लोगों का मिलना मुश्किल है जो भगवान की खोज में हैं और दिव्य खुशी प्राप्त करने में सफल हैं। इसलिए, यह कहा जाता है कि भारत में जन्म मिलना ये भगवान की बडी कृपा है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

करप्शन का प्रमुख कारण है एक शुरूआती गलती। ये गलती कि अपने को आत्मा की जगह शरीर मानना। जब शरीर माना तो शरीर के सुख के पीछे मन दौडेगा। पैसा, प्रतिष्ठा, स्त्री, पति, नातेदार इनके पीछे भागेगा। सीधे रास्ते से काम ना बना तो गलत रास्ता अपनायेगा।

जब कोई व्यक्ति इलेक्शन लड़ता है तो तमाम सारा पैसा खर्च करता है। अगर उसने एक करोड़ खर्च किया तो इलेक्शन के बाद कम से कम दस करोड़ बनाने की कोशिश करेगा। मन की वासना का कोई अंत नही है। दस करोड़ क्या दस अरब मिलने पर भी मन और चाहेगा। करप्शन कैसे रूकेगा?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

यदि किसी व्यक्ति को संपूर्ण पृथ्वी का राज्य, धन, संपत्ति, स्त्रीयां भी मिल जाए तो भी उसकी वासना वैसे ही बनी रहेगी जैसे पहले थी। तो छोटी मोटी प्राप्ती से वासना की पूर्ति कैसे होगी?

एक तो अपने को शरीर मानना ही गलत है। इसके आगे जाकर अपनी पहेचान परिवार, धर्म, जाती, भाषा, प्रांत, देश से बनाना और संबंधित लोगों को अपना मानना फिर उनके गलत, अन्यायपूर्ण व्यवहार का समर्थन करना ये बहुत बड़ी मूर्खता है। ये आपको किस नरक में डाल देगा कुछ पता है? ना किसी को अपना मानो ना पराया। तभी मूर्खता पूर्वक होने वाले पापों से और परिणामस्वरूप मिलने वाली यातनाओं से बचोगे।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

कुछ कर्मों का फल तुरन्त मिलता है। जैसे खाना खाया तो पेट भर गया। कुछ का कुछ दिनों बाद, महीनों बाद, सालों बाद मिलता है।जैसे अभी अनाज बोया तो छह महिने बाद फ़सल निकली। कुछ दवाई सालों लेने पर बीमारी ठीक हुई। ऐसेही कुछ कर्मों का फल मरने के बाद हमें भोगना पड़ेगा। एक बहुत ही सरल नियम है। कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ेगा। कोई नही छूट सकता। हमें अब जो मिल रहा है, वो जैसे हमारे पिछले कर्मों परिणाम है, वैसे ही हम अब जो कर्म करेंगे उससे हमारा भविष्य तय होगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इसलिए कर्म करते समय अत्यधिक सावधानी बरतने की जरूरत है। जैसे कोई अनजाने में जहर खाये या जानकर खाये, जहर अपना कमाल दिखाएगा। वैसे ही हमारी मान्यता जो भी हो, कर्म अपना कमाल दिखाएगा। कर्म क्या है? कर्म है मन का चिंतन।

मन की आसक्ति किसी व्यक्ति या वस्तु में बार बार सुख का चिंतन करने से होती है। मरने के बाद हमारी गति वही होगी जहा मरते समय मन की आसक्ति होगी। आसक्ति दोस्ती या दुश्मनी दोनों प्रकार से हो सकती है। इसलिए गलत लोगों से दोस्ती या प्यार करना खतरे से खाली नहीं है। आज कल कुछ लड़कियां गुनहगारों से शादी या दोस्ती करने में बहादुरी मानती है। मरने के बाद जब गुनहगार को नरक मिलेगा तो उन लड़कियों को भी नरक मिलेगा और नरक की भयानक यातनाएं सहन करनी पड़ेगी।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

यदि कोई पाप करता है और हम किसी बहाने उसे अपना समर्थन देते हैं, उसकी मदत करते है तो भी हमें दण्ड भोगना पड़ता है। अतः सही क्या, गलत क्या ये

अब जब खुशी की तलाश में हमारी मनोदशा अक्सर बदलती रहती है, तो अच्छे विचारों को तुरंत लागू करना चाहिए।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

उदाहरण के लिए, कभी-कभी आपको आध्यात्मिक संस्था को दान देने की इच्छा होती है। कभी आध्यात्मिक विषय पढ़ने का मन होता है। या कुछ अच्छा करने का विचार आता हैं। ऐसे समय आपको उन कार्यों को तुरंत करना आवश्यक है। यदि तुरंत नहीं किया जाता है, तो मन अपने मनोदशा को बदल देगा और बाद में दान आदि अच्छे कार्य नहीं होने देगा।

इसी तरह, आपको बुरे विचारों पर कभी भी तुरंत अमल नहीं करना चाहिए। दूसरों को नुकसान पहुंचाना, दूसरों को मारना, परनिंदा करना, किसीको झूठा दोषी ठहराते हुए अन्याय करना या पक्षपात करना, आदि पाप कार्यों को अन्य समय और दूसरी तारीख में ढकेल देना चाहिए। फिर से वही मनोदशा बदलने का नियम काम करता है। खराब मनोदशा बदलने पर आप पाप कार्य करने से बच जाएंगे।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

यही सलाह रावण ने मौत के बिस्तर पर लक्ष्मण को दी थी। जब रावण मर रहा था, तब भगवान राम ने अपने छोटे भाई लक्ष्मण से उससे शिक्षा लेने के लिए कहा। रावण ने सलाह दी, 'अच्छी योजनाओं को तुरंत लागू किया जाना चाहिए और बुरी योजनाओं को स्थगित कर देना चाहिए। मुझे देखो। मैंने देवी सीता को उठाने की बुरी योजना को तुरंत लागू किया और नतीजा यह है कि मैं मृत्युशैय्या पर हूं। मैंने लोगों के लाभ के लिए पृथ्वी से स्वर्ग तक एक सीढ़ी बनाने के लिए अपनी योजना में देरी

की और वो सीढ़ी कभी भी नहीं बनी। '

वेद यही बात कहता है। मत कहो, "मैं करूँगा, मैं करूँगा"। भगवान सम्बन्धी काम तुरंत शुरू करो। मनोदशा बदल जाएगी फिर भगवान सम्बन्धी कार्य नहीं सम्पन्न होगा। "मैं करूँगा, मैं करूँगा" करते करते मौत आ जाएगी। और मृत्यु के बाद आपके पास कुछ भी नही शेष रहेगा। मानव रूप के इस तरह के सुनहरे अवसर को बर्बाद करने के बाद आप बहुत पश्चाताप करेंगे। लेकिन "अब पछताए क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत।"

इसलिए जहा भी हो, जैसे भी हो; भगवान का स्मरण करना चाहिए। वहीं आपकी असली कमाई है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

वनवास के बाद पांडवों ने कुरुक्षेत्र की लड़ाई जीती और युधिष्ठिर साम्राज्य के राजा बन गए। उनके राज्य में एक गरीब ब्राह्मण था जो अपनी बेटी की शादी करना चाहता था। उसके पास पैसे कम थे। इसलिए उसने युधिष्ठिर से संपर्क किया और कुछ सोने की मांग की ताकि वह शादी का खर्चा कर सके। युधिष्ठिर की कुछ जरूरी बैठक थी। उन्होंने ब्राह्मण से कहा, 'मैं आज व्यस्त हूं। कृपया सोने को लेने के लिए कल आना।'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

भीमसेन, जो पास ही खड़े थे, उन्होंने वार्तालाप सुनने के बाद प्रधान मंत्री को बुलाया और शहर में बड़ा उत्सव मनाने का आदेश दिया। प्रधान मंत्री ने कारण पूछने की हिम्मत नहीं की। उन्होंने शहर में वैसी घोषणा कर दी। आतिशबाजी, संगीत आदि शुरू हुआ। युधिष्ठिर ने प्रधान मंत्री से पूछा, 'ये कौनसा उत्सव हैं? आज कोई त्यौहार नहीं है!' उन्हें जवाब मिला कि भीमसेन ने उत्सव का आदेश दिया है।

जब युधिष्ठिर ने भीमसेन से पूछताछ की, तो भीमसेन ने कहा, 'आपने एक महान कामयाब हासिल की है!' 'मैंने?' युधिष्ठिर ने पूछा। भीमसेन ने कहा, 'हाँ भाई! आपने मौत पर विजय प्राप्त की है।' युधिष्ठिर ने कहा,' क्या तुम पागल हो गए हो? कोई मृत्यु को जीत सकता है भला?' भीमसेन ने कहा,' मैं सही हूं भैय्या, अन्यथा आपने उस ब्राह्मण को यह नहीं कहा होता कि कल आना। इसका मतलब है कि आप निश्चित रूप से जानते हैं कि आप अगले दिन तक नहीं मरोगे और आप अपने मृत्यु के समय पर नियंत्रण रखने में सफल हुए हो! यदि नहीं, तो आपके वादे का क्या होगा, यदि आप आज मर गये? आप अच्छी तरह से जानते हैं कि जो व्यक्ति को वादा

नहीं रखता, वो भगवान द्वारा दंडनीय है!'

युधिष्ठिर ने अपनी गलती को महसूस किया। उन्होंने सोचा 'ये मोटा है, लेकिन इसकी अकल बड़ी पतली है!' उन्होंने ब्राह्मण को बुलवाया और उसे सोना दिया।

इस कहानी के दो पहलू हैं।
1. अच्छे कार्य करने में देरी न करो।
2. कल को मत गिनो। कौन जानता है? कल जीवन में हो ना हो!

वनवास के बाद पांडवों ने कुरुक्षेत्र की लड़ाई जीती और युधिष्ठिर साम्राज्य के राजा बन गए। उनके राज्य में एक गरीब ब्राह्मण था जो अपनी बेटी की शादी करना चाहता था। उसके पास पैसे कम थे। इसलिए उसने युधिष्ठिर से संपर्क किया और कुछ सोने की मांग की ताकि वह शादी का खर्चा कर सके। युधिष्ठिर की कुछ जरूरी बैठक थी। उन्होंने ब्राह्मण से कहा, 'मैं आज व्यस्त हूं। कृपया सोने को लेने के लिए कल आना।'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

भीमसेन, जो पास ही खड़े थे, उन्होंने वार्तालाप सुनने के बाद प्रधान मंत्री को बुलाया और शहर में बड़ा उत्सव मनाने का आदेश दिया। प्रधान मंत्री ने कारण पूछने की हिम्मत नहीं की। उन्होंने शहर में वैसी घोषणा कर दी। आतिशबाजी, संगीत आदि शुरू हुआ। युधिष्ठिर ने प्रधान मंत्री से पूछा, 'ये कौनसा उत्सव हैं? आज कोई त्यौहार नहीं है!' उन्हें जवाब मिला कि भीमसेन ने उत्सव का आदेश दिया है।

जब युधिष्ठिर ने भीमसेन से पूछताछ की, तो भीमसेन ने कहा, 'आपने एक महान कामयाब हासिल की है!' 'मैंने?' युधिष्ठिर ने पूछा। भीमसेन ने कहा, 'हाँ भाई! आपने मौत पर विजय प्राप्त की है।' युधिष्ठिर ने कहा,' क्या तुम पागल हो गए हो? कोई मृत्यु को जीत सकता है भला?' भीमसेन ने कहा,' मैं सही हूं भैय्या, अन्यथा आपने उस ब्राह्मण को यह नहीं कहा होता कि कल आना। इसका मतलब है कि आप निश्चित रूप से जानते हैं कि आप अगले दिन तक नहीं मरोगे और आप अपने मृत्यु के समय पर नियंत्रण रखने में सफल हुए हो! यदि नहीं, तो आपके वादे का क्या होगा, यदि आप आज मर गये? आप अच्छी तरह से जानते हैं कि जो व्यक्ति को वादा

नहीं रखता, वो भगवान द्वारा दंडनीय है!'

युधिष्ठिर ने अपनी गलती को महसूस किया। उन्होंने सोचा 'ये मोटा है, लेकिन इसकी अकल बड़ी पतली है!' उन्होंने ब्राह्मण को बुलवाया और उसे सोना दिया।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इस कहानी के दो पहलू हैं।
1. अच्छे कार्य करने में देरी न करो।
2. कल को मत गिनो। कौन जानता है? कल जीवन में हो ना हो!

अच्छे काम के लिए नियम होना चाहिए -
कल करे सो आज, आज करे सो अब
पल मह परलय होत है, फिर करेगा कब!

और बुरे काम के लिए नियम होना चाहिए -
आज करे सो कल, कल करे सो परसो
ऐसी भी क्या जल्दी है, अभी पड़े हैं बरसों

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

तो आप समझ गए होंगे कि संगत का असर केवल हमारे विचारों पर तथा इस जीवन पर ही नहीं पड़ता बल्कि हमें इस जीवन के बाद भी संगत के परिणाम भोगने पड़ते है।

लेकिन सही संगत सबसे बड़ी समस्या है। क्या आप जानते हैं कि रिमोट दबाने पर टीवी चैनल का चयन कैसे किया जाता है? आप टीवी चैनल द्वारा उत्सर्जित आवृत्ति से मेल खाने के लिए रिमोट द्वारा अपने एंटीना की आवृत्ति को बदलते हैं। जब दोनों की आवृत्ति एक हो जाती है तब उस चैनल से लहरें एंटीना द्वारा खींची जाती है और आपके टीवी स्क्रीन पर आती हैं, फिर आप वो चैनल देख सकते हैं। आवृत्तियों का मेल खाना आवाश्यक है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

इसी प्रकार प्रत्येक दिमाग की अपनी सोच और अपनी सोच की आवृत्ति है। मेरा मतलब सोचने का तरीका है। यह सोच फिर मन की स्थिति का फैसला करती है। समान मन की स्थिति के लोगों के मन की आवृत्तिया समान होती है। समान आवृत्तियों में अनुनाद होता हैं। तब दोनों व्यक्ति दूसरे से जुड़ते है। वे एक दूसरे को पसंद करते है। फिर दोस्ती, प्यार आदि होता है।

तो, आपको सही संगत की सबसे बड़ी समस्या का जवाब मिला। आप अपने मन की स्थिति को उचित बनाएं। फिर आप आध्यात्मिक व्यक्तियों के साथ स्वचालित रूप से जुड़ेंगे।

मन की स्थिति कैसे ऊपर जाएँ? पहले इसे उचित सामान दें। मन को आत्मा, भगवान के बारे में कोई ठीक

जानकारी नहीं दी गई है। पहले सिद्धांत को समझें। और, मैं शर्त लगाता हूं कि हिंदू धर्म को छोड़कर पृथ्वी पर कोई धर्म नहीं है जो प्रकृति (ये संसार), आत्मा और भगवान के बारे में गहराई से समझाता है। हम क्या चाहते है? सुख क्या होता है? वो हमे कैसे मिलेगा? आत्मा और भगवान में क्या नाता है? इत्यादि ज्ञान मन को करवाना पड़ेगा।

उचित इनपुट के बाद, दिमाग इसे प्रदान की गई जानकारी के आधार पर सोचने की अपनी प्रक्रिया शुरू करेगा। तब बुद्धि भगवान के पक्ष में फैसला कर सकती है। भगवान की निरंतर सोच आपके दिमाग के स्तर को बढ़ाएगी। आप सही लोगों से जुडेंगे। इस प्रकार थियोरी का नॉलेज एवं प्रेक्टिकल में भगवान का स्मरण, इन दो बातों से ही समस्या हल होगी।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

प्यार करने का दावा तो सब करते है
लेकिन बदले में क्या मिला ये सोचते है
जानते नही प्यार एक ही दिशा का रास्ता है
दूर दूर तक बस प्रियतम सुख नज़र आता है

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

भगवान, खुदा, गॉड को तो सब मानते है
पर उसकी प्यार की सीख़ को अनदेखा करते है
और आपस ही में लडने को बहादूरी समझते है
परमपिता के है हम सब भाई भाई ये नही जानते है

सही रास्ते पर चलना चाहिए ऐसा सब कहते है
लेकिन अपना पराया भेद में गलत का साथ देते है
खुद के साथ गलत होने पर वही नसीहत देते है
सही रास्ते पर चलना चाहिए ऐसा सब कहते है

प्यार मोहब्बत हम जिनसे करते है
उनसे सुख की आशा में रहते है
मनुष्य क्या कुछ किसी को देगा
वो तो खुद खुशी का भिखारी है

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

खुशियाँ बाँटने वाला केवल खुदा ही है
सबसे प्यार करने वाला बस एक भगवान ही है
जो प्रियतम हमसे कुछ भी नही चाहता है
ऐसे कृष्ण से प्यार करनेवाले ही बस खुशनसीब है

दिव्य अनुभव की अर्हता प्राप्त करने की शर्त शरणागती है, जिसे हिंदू और इस्लाम दोनों में स्वीकार किया जाता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

शरणागती करना यह स्वीकार करना है कि मरम्मत आत्मा की क्षमता से परे है और बागडोर भगवान को सौंप दी जाती है। यह कुछ हद तक रोगी के आत्मशरणागती के समान है। यह महसूस करते हुए कि इलाज करना हमारी क्षमता से परे है, रोगी डाक्टर जैसा कहता है वैसा करता है। दवाई जैसे खाने को कही जाती है वैसे खाता है। उसमें अपनी बुद्धी का प्रयोग नही करता। डाक्टर जो भी परहेज बताता है उस स्वीकार करता है - शब्दशः और बिना किसी प्रश्न के।

इस प्रकार आत्मशरणागती करना बिना किसी संदेह या प्रश्न के भगवान के आदेश को शब्दशः स्वीकार करना है।

भगवान के मुकाबले संत के की शरणागती करना आसान है। संत या गुरु वह व्यक्ति है जिसने दिव्य सुख प्राप्त किया है। फिर वह दूसरों को वो अनंत सुख दे सकता है जो उसने प्राप्त किया है। आप संत को देख सकते हैं लेकिन भगवान को नहीं। भगवान आपके साथ सीधे बात नहीं कर सकते, संत भगवान के साथ और आपके साथ सीधे बात कर सकते हैं। संत सिद्धांत समझाते हैं, संदेह दूर करते हैं, ईश्वर नहीं। अनगिनत आत्माओं ने संत के माध्यम से दिव्य सुख प्राप्त किया है। बस यह सुनिश्चित करना परमावश्यक कि संत वास्तविक है, न की केवल दिखावा है। ये कैसे सुनिश्चित करे, इसके बारे में आगे विचार करेंगे।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

ईश्वर के प्रति शरणागती और धर्म के प्रति शरणागती में अंतर है। ईश्वर के लिए शरणागती आपको ईश्वर के निवास में ले जाती है जबकि धर्म के प्रति शरणागती आपको स्वर्ग में ले जाती है। दिन के व्यवहार के बारे में धर्म के अनुसार कर्मकांड कर के स्वर्ग या जन्नत जाने की कोशिश करना ये मूर्ख लोगों की पसंद है। क्योंकि स्वर्ग बहुत हद तक अति विषयों के भोग करने वाली रईस जीवन शैली के समान है, जो कि ईर्ष्या, घृणा, क्रोध और इत्यादि मन की परेशानियों से भरा है।

ईश्वर और केवल ईश्वर के निरंतर स्मरण से ईश्वर की शरणागती हो सकती है। दैनिक अनुष्ठानों, कपड़ों का इससे कोई लेना-देना नहीं है। वास्तव में, कृष्ण कहते हैं, 'सभी धर्मों को खारिज करते हुए, मेरी और केवल मेरी ही शरण में आओ।'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

धर्म को आमतौर पर दो पहलुओं में विभाजित किया जाता है, एक समाज से संबंधित और दूसरा अनंत सुख प्राप्त करने से संबंधित। पहला शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए ड्रेस कोड, व्यवहार संबंधी मानदंडों से संबंधित है। अन्य एक भगवान की पूजा से संबंधित है। बाहरी गतिविधियाँ तब तक एक भौतिक कवायद होगी जब तक कि ईश्वर का स्मरण नहीं होगा।

फिर अप्रासंगिक सामाजिक मानदंडों पर टिके रहना बेवकूफी होगी। यह बोतल को संरक्षित करने और अंदर का अमृत फेक देने जैसा है जैसा कि कई बार होता है और धर्म अपना शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का उद्देश्य खो देता है। बाहरी दिखावे से कोई फर्क नहीं पड़ता है, जो मायने रखता है, वो है भगवान के साथ दिल को व्यस्त रखना।

ठंड के दिन थे। एक जंगल में कुछ बंदर ठंड से काँप रहे थे। वे एक साथ इकट्ठे हुए और विचार विनिमय के बाद फैसला किया कि इंसान जैसे आग जलाते है वैसे आग जलाना चाहिए। उन्होंने तब फैसला किया कि उन्हें लाल दिखने वाली वस्तु ढूंढनी चाहिए जो मानव आग लगने के लिए इस्तेमाल करते है। जंगल में अंगारा कहाँ मिलनेवाला था? जंगल में बंदरों को लाल लाल गुंज मिले। उन्होंने कुछ लकड़ी इकठ्ठा की और गुंज को लकड़ी पर डाल दिया और उसको हवा देने लगे ताकि आग पकड़ सके।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

एक चिड़िया पास के पेड़ पर बैठी थी। उसने उन बंदरों को बताया कि वे सही रास्ते पर नहीं है। वो गुंज है, अंगारे नही है। उससे कभी भी आग नही जलेगी। लेकिन बंदरों को गुस्सा आया कि हमारी अकल को चुनौती देनेवाली ये कौन होती है?बंदरों ने चिड़िया को बकवास बंद करने के लिए कहा।

यह देखते हुए कि बंदर इस तरह से ठंड से मर जाएंगे, चिड़िया ने फिर से बंदरों को मनाने की कोशिश की कि उन्हें अंगारा खोजने की कोशिश करनी चाहिए। बंदरों ने इस बार, चिड़िया पर हमला किया क्योंकि उनके हिसाब से उन्होंने जो सोचा था वही सही था और वे अपने जसे बढ़कर किसी को मानने के लिए तैयार नही थे।

चिड़िया बुरी तरह से घायल हो गयी थी लेकिन किसी तरह उड़ने में कामयाब रही। अहंकारी बंदरों ने अपने प्रयत्न जारी रखे और अंततः ठंड से मर गए।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

मूर्खों को कोई नही बचा सकता।

दिल को 100% शुद्ध बनाना इतना मुश्किल काम है कि अनंत जन्मों के बाद भी यह अभी भी अधूरा है।

बगैर किसी की सहायता के हमारा काम नही बन सकता। भगवान वास्तविक संत के रूप में सहायता उपलब्ध करवा देते है। ऐसी मदद के बिना हमारा अनन्त आनंद का सपना कभी पूरा नहीं होगा।

महापुरूष या संत जब संसार में रहते है तब कई सेवा के अवसर प्रदान करते हैं। सेवा तीन प्रकार से होती है - तन, मन और धन। लोग संत की सेवा कर सकते हैं जिससे आध्यात्मिक उन्नति होती हैं। संत भगवान को पाकर परिपूर्ण हो जाता है। उसे अब किसी से कुछ नही चाहिए। लेकिन औरों के कल्याण के लिए संसार में रहकर अनेक प्रकार के कार्य करता है। बाहरी सहायता की आवश्यकता न होते हुए भी संसारी व्यक्ति की तरह एक्टिंग करता है और यदि कोई वास्तव में सहायता करता है, तो संत ईश्वरीय उपकार करता है, जो उसका एकमात्र उद्देश्य है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

ऐसा ही एक उदाहरण है - एक अवसर पर, भगवान कृष्ण की उंगली कुछ कट गयी थी और उससे खून बहने लगा था। वे द्रौपदी के पास गये जो उस दृश्य को सहन नहीं कर सकी और अपनी सारी से एक टुकड़ा फाड़कर कृष्ण की उंगली पर बांध दिया। रक्तस्राव बंद हो गया। जब द्रौपदी का भरी सभा में वस्त्रहरण होने जा रहा था, तब भगवान कृष्ण ने उस टुकड़े का ऋण चुकाया और द्रौपदी के शरीर को ढकने के लिए इतना कपड़ा दिया कि जितनी सारी ख़िचती गयी उतनी ही और बढ़ती गयी। द्रौपदी को विवस्त्र नही होने दिया।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

इस प्रकार आपको को यह समझना चाहिए कि संत आपकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए ही आप से कुछ मांगता है। संत का वास्तविक होना परमावश्यक है, जबकि आज के जमाने में 99% पाखंडी ठग लोग संत का स्वांग रचाये है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

एक स्थान पर भगवान कृष्ण कहते हैं, 'मेरे लिए किए गए दुष्कर्म कर्मों में बदल जाते हैं जबकि मुझे छोड कए किए गए पुण्यकर्म भी दुष्कर्म हैं।'

जब वृंदावन की गोपी कृष्ण से मिलने मंदिर जाने के बहाने गई तो कृष्ण ने उसका स्वागत किया क्योंकि वह "सभी धर्मों को खारिज करने, मेरी और केवल मेरी शरण में आओ", की सिद्धांत के अनुसार चल रही थी।

एक वास्तविक महापुरूष के लिए काम करना वैसा ही है जैसा कि ईश्वर के लिए काम करना। यदि आपको ऐसा वास्तविक संत नहीं मिलता है, तो आप संत मिलन के लिए भगवान से प्रार्थना कर सकते हैं।

महापुरूष न केवल गंदे हृदय की शुद्धि के लिए काम करते हैं, बल्कि शुद्धिकरण के बाद हृदय को दिव्य बना देते हैं और इसे शाश्वत और अनंत आनंद से भर देते हैं। इसलिए यह कहा जाता है कि आध्यात्मिक गुरु भगवान की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

अब सवाल यह है कि एक वास्तविक संत या महापुरूष को कैसे पहचाना जाए जो हमारा मार्गदर्शन कर सके।

यह बेहद मुश्किल काम है। क्योंकि वास्तविक और नकली में कोई बाहरी अंतर नहीं है। दोनों एक ही बात करते हैं। इसके अलावा, कई बार वास्तविक संत एक मायिक व्यक्ति की तरह व्यवहार करते हैं और खुद को धन, काम, क्रोध आदि की सभी गतिविधियों में संलग्न करते हैं। इसलिए यह कार्य दोगुना जटिल हो जाता है। किसी तरह हमें असली को नकलीयों से अलग करना होगा। आईए हम कुछ गाइड लाइन पर विचार करते है।

हिंदू कहते हैं कि एक संत को सभी शास्त्रों का ज्ञान और दिव्य अनुभव होना चाहिए। यदि आप शास्त्र ज्ञान का पहला मानदंड लागू करते हैं, तो अधिकांश नकली संतों को फ़िल्टर किया जाता है। इस्लाम इस बात को नही मानता की मोहम्मद पैगंबर के कद का कोई इस दुनिया में फिर आ सकता है, इसलिए किसी भी वास्तविक संत के लिए इस्लामी दुनिया में खोज करने का कोई मतलब नहीं है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

असली महापुरूष की पहेचान के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए।

1. वह कभी वरदान या शाप नहीं देता।
2. वह कभी भी किसी भी भौतिक वस्तु जैसे पैसे, बच्चे, नौकरी आदि का वादा नहीं करता।
3. वह कभी चमत्कार नहीं करता।
4. वह किसी के कान फूँककर शिष्य नहीं बनाता ।
5. वह ईश्वर को याद करने पर जोर देगा।

6. वह परमेश्वर के बारे में आपकी सभी वास्तविक शंकाओं को दूर कर देगा।
7. वह विभिन्न युक्तियों के माध्यम से साधना में आपकी सहायता करेगा।
8. वह आपको ईश्वरप्राप्ति की ओर चलने के लिए प्रेरित करेगा।
9. उसके शब्दों में भगवत् प्रेम का वजन रहता है। इसलिए उसके शब्द आप पर जादा असर डालते है।
10. ईश्वरप्राप्ति के पहले महापुरूष आपको ईश्वरीय जगत के कुछ अनुभव भी करा सकता है, जिससे आप की साधना की स्पीड तेज होती है। लेकिन ऐसे अनुभव के लिए प्रथम भगवान के अस्तित्व को मानकर साधना करके अंतःकरण एक स्तर तक शुद्ध करना पड़ता है। ये अनुभव माईलस्टोन है जो आपको विश्वास दिलाते है कि आप सही रास्ते पर है और आप एक दिन मुकाम पर जरूर पहुँचेगे।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

महापुरूष को पहेचानने में निम्नलिखित बातों का भी खयाल रखना चाहिए।

1. वास्तविक संत के नियमित संपर्क में रहने पर आपके मन नें भगवान के लिए लगाव विकसित होगा।

2. दैनंदिन जीवन की समस्याएं आपके दिमाग को कम परेशान करेगी। उदाहरण के लिए, किसी भी चीज के नुकसान पर आप कम दुःख महसूस करोगे। जैसे पैसे का नुकसान हुआ, मान सौ रुपया कही खो गया, तो आप उतने परेशान नहीं होंगे जितने कि संत से मिलने से पहले परेशान होते थे।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

3. इस दुनिया से आपका लगाव धीरे धीरे कम होता जाएगा।

4. ईश्वरीय अनुभव पाने की आपकी प्यास बढ़ जाएगी।

यह जानना परमावश्यक है कि कौन वास्तविक है और कौन नकली है, क्योंकि संत या गुरू के माध्यम से, आप आपके इस जीवन के साथ-साथ भविष्य के जीवन को आकार देने जा रहे है।

यदि आप एक नकली पाखंडी के गुरू मान लेते हैं और नकली पाखंडी के निर्देशों के अनुसार गलत काम करते हैं, तो आपको अपने नकली गुरू के साथ नरक जाना पड़ेगा। जैसे कि आतंकवादि और उनके धार्मिक उत्तेजक नरक को प्राप्त होंगे।

आध्यात्मिक अभ्यास के नाम पर सभी तरह के संसारी

कामुक भोग को अपनाने वाले लोग भी अपने नकली गुरू के साथ नरक में जाएंगे।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

महापुरूष का मिलन भगवान की कृपा से होता है। इसलिए महापुरूष मिलन के भगवान से रो कर प्रार्थना करना ही सबसे बढ़िया मार्ग है। वे अपने आपको किसी महापुरूष से मिला देंगे।

भक्ति समझने में, करने में और प्राप्तव्य रस के दृष्टिकोण से सबसे सरल और सबसे अच्छा मार्ग है।

बहुत से लोग चिंतित रहते हैं कि हमने अब तक काफी पाप किये है। एक पापयुक्त जीवन जीने के बाद क्या रास्ता है? हर किसी के पास अनंत जन्मों का अतीत है और अनंत समय में सभी ने अनंत पाप किए हैं। फिर से पाप न करने के संकल्प से रोकर भगवान से क्षमा याचना करनी चाहिए। भगवान का स्मरण धीरे धीरे सभी अशुद्धियों को धोता है एवं मन के पूर्ण शुद्धिकरण पर जब जीव भगवान के शरणागत हो जाता है तो भगवान सभी पिछले पापों को क्षमा कर देते है। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि सभी धर्मों को छोड कर मेरी और केवल मेरी शरण में आओ। मैं तुम्हें तुम्हारे सभी पापों से मुक्त करूंगा और तुमको माया के इस जन्म मृत्यु के बंधन से भी मुक्त कर अनंत आनंद से सदा के लिए मालामाल कर दूंगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

हिंदू शास्त्रों में एक संदर्भ है, जो दिखाता है कि यहां तक कि एक वेश्याने भी भगवान के शाश्वत आनंद को प्राप्त किया है। अनेक हत्याएँ कर चूका वाल्मिक भी उसी जन्म में भगवत्प्राप्ति कर महापुरूष बना है। अतः निराश होने का कोई कारण नही है। अतीत के बारे में मत सोचो। भविष्य का निर्णय वर्तमान द्वारा किया जाता है। इससलिए वर्तमान पर ध्यान दो। बस आध्यात्मिक अभ्यास पर ध्यान केंद्रित करो। आध्यात्मिक मार्ग के साथ आगे बढ़ने पर, प्रवृत्ति बदल जाएगी।

गायन, नृत्य, नौकरी, व्यवसाय आदि जैसी कोई भी कार्रवाई करते समय, भगवान कही ना कही पास में खड़े

या बैठे है, ऐसा मेहसूस करो। तब आपको यह एहसास होगा कि भगवान आपकी हर चीज को देख रहे है। भगवान का स्मरण हमेशा बना रहेगा। सबकुछ मन के माध्यम से किया जाता है। किसी को भी अपने अभ्यास के बारे में नही बताना चाहिए। आध्यात्मिक अभ्यास गुप्त ही रखना चाहिए। यह अत्यंत आवश्यक है। नही तो लोग आपका मजाक बनाएंगे। मजाक नही भी बनायेंगे तो आपको लोगों के सामने दिखावा करने की, लोकरंजन की बीमारी लगेगी कि लोग हमे बडा भक्त माने और आप अपने अनंत सुख पाने के लक्ष्य से गिर जायेंगे।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

किसी भी तरह से मन में भगवान को लाना चाहिए। जब आप ईश्वर के लिए कोई काम करते है या मन जब ईश्वर को याद करता है, तब आपको कोई अन्य धार्मिक विधी न करने से कोई दंड नही मिलता। भक्ति अपने में परिपूर्ण है। भक्ति करने से ज्ञान एवं वैराग्य अपने आप होगा। उसके लिए अलग से साधन करने की आवश्यकता नही है।

जादातर लोगों का यह सारासार गलत मानना है कि भगवान कृष्ण ने गीता में कर्म का उपदेश दिया है। भगवान कृष्ण ने गीता में कर्मयोग का उपदेश दिया है। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को केवल युद्ध करने को नही कहा बल्कि ये कहा है कि,"मेरा स्मरण करते हुए युद्ध कर।"

क्रिया-भक्ति या कर्मयोग में जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, दिन-प्रतिदिन के कार्य करते हुए भगवान को याद करने की कोशिश की जाती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

हर समय भगवान को याद करना एक अभ्यास है। यह ऐसी ही स्थिति है जहां कोई भी वाहन चालक, जिसका दिमाग गाड़ी चलाते समय अन्य विचारों में व्यस्त है। हाथ अपना काम कर रहे हैं जबकि मन अलग-अलग विषय पर एक साथ सोचने का काम कर रहा है। मोबाईल पर भी बात हो रही है। अन्य वाहनों को भी देख रहे है। कहा जाना है ये भी याद है। वहा क्या करना है इस पर भी विचार हो रहा है।

इसी प्रकार सतर्क प्रयासों से किसी भी कार्य को करते समय मन को ईश्वर में व्यस्त रखा जा सकता है। कृष्ण अर्जुन से कहते हैं, 'मुझमें मन लगाए रखो और युद्ध लड़ो।' अर्जुन ने ऐसा ही किया। आप तीर भेजने के बारीक काम की कल्पना कर सकते हैं, ऐसा मुश्किल काम! यदि ईश्वर में मन से युद्ध लड़ना संभव है तो हम सभी गतिविधियों को करते हुए भी इसे हासिल क्यों नहीं कर सकते?

हर घंटे (सुबह 10 बजे, 11 बजे, 12 बजे ....) अपना

काम करते समय यह कल्पना करने की कोशिश करें कि भगवान आपके पास बैठे हैं या खड़े हैं। इस प्रयोजन के लिए, आप अपने मोबाइल पर कंपन (वायब्रेशन) अलार्म का उपयोग भी कर सकते हैं। एक या दो महीने के अभ्यास के बाद आपका मन भगवान को बिना किसी बाहरी सहायता के हर घंटे याद करने लगेगा। फिर इसे आधे घंटे तक कम करें। एक या दो महीने के लिए फिर से अभ्यास करें। आप पाएंगे कि भगवान आपके दिमाग में हर आधे घंटे में आते हैं। फिर 15 मिनट ... फिर 7 ... इसी तरह आप हर पल भगवान को याद करने में सफल होंगे।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

एक और तरीका है हर सांस के साथ अभ्यास करना।

साँस लेते समय साँस छोड़ते हुए 'रा' (मन में बिना आवाज़ के) और हर साँस के साथ 'राधे' का पाठ करें।

एक बात याद रखनी चाहिए कि जबर्दस्ती की गई साधना के अभाव में, मन हमेशा भौतिक सुखों का आनंद लेना चाहेगा, जिसका अर्थ है कि दुख कभी खत्म नहीं होगा। मृत्यु आदि कष्टों का कभी अंत नहीं होगा। मृत्यु ये कष्टों अंत नही है बल्कि यह नए कष्टों की शुरुआत है। इसलिए आध्यात्मिक अभ्यास अनिवार्य है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

यह जमाना पैसे का है। क्या आध्यात्मिक खुशी की तलाश में पैसा उपयोगी है? आप जवाब जानकर आश्चर्यचकित होंगे - हाँ!

पहला सवाल - पैसे के लिए आधार क्या है? आप कहेंगे .. 'नौकरी, व्यवसाय आदि'। नहीं, यह सिर्फ इस जीवन में पैसे का स्रोत है। मुद्दा यह है कि पैसे का स्रोत सभी के लिए क्यों उपलब्ध नहीं है? क्योंकि आय पिछले जीवन में आपके द्वारा किए गए दान पर निर्भर करती है। हिंदू का कहना है कि आपके आय का 10% दान किया जाना चाहिए। जो लोग इतनी राशी दान नहीं करते उन्हें अगले जीवन में उचित धन स्रोत नहीं दिए जाते, और इसलिए गरीबी का सामना करना पड़ता है। कहावत काम करती है - पैसा से पैसा बनता है। इस जीवन को पैसे सही जगह पर, सत्पात्र में दान करें और अगले जीवन में सुंदर अर्थिक स्थिती की अपेक्षा करें। लेकिन ध्यान रहे, यदि आपके पैसे का इस्तेमाल पाप कर्म के लिए हुआ तो लेने के देने पडेंगे।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

हालांकि यदि आप अपने दान से आध्यात्मिक लाभ चाहते हैं, तो आपको ऐसे वास्तविक आध्यात्मिक व्यक्ति को पैसा दान करना होगा जिसने भगवान को हासिल किया है। उसके पास अपना संगठन हो सकता है जो पैसे स्वीकार करता है और चैरिटेबल गतिविधियों जैसे कि मुफ्त वितरण, मुफ्त अस्पतालों, मुफ्त स्कूलों आदि में डालता है। ऐसे संगठन के माध्यम से दान आपको दिव्य लाभ वापस कर देगा, जबकि बिना आध्यात्मिक समर्थन की जगह किया हुआ अन्य दान आपको केवल भौतिक लाभ वापस कर देगा। ऐसा दान अनंत खुशी की तलाश करने के लक्ष्य के हिसाब से कोई मायना नही

रखता।

दान आपको नरक भी ले सकता है यदि उन लोगों को दिया जाता है जो खुद को पाप की गतिविधियों में संलग्न करते हैं। फिर से नकली पाखण्डी दंभी और उनके नकली संगठन से सावधान रहें। नकली पाखण्डी वह है जिसने भगवान को नही देखा है, भगवान वाली अनंत खुशी जिसके पास नही है फिर भी भगवत्प्राप्ति का झूठा दावा करता है लेकिन वास्तव में वह भगवान से बहुत दूर है। ये दंभी पाखण्डी लोग दूसरों को संसारी कामनापूर्ती की झूठी आशा दिखाकर ठगते है।

असली संत वह है जिसने भगवान को देखा है और भगवान वाली अनंत खुशी का अनुभव किया है। अपने पैसे से आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने के लिए आपको पैसा एक वास्तविक आध्यात्मिक व्यक्ति या संस्था को दान करने की आवश्यकता है। इस समय ऐसा आध्यात्मिक धर्मार्थ संगठन जगद्गुरू कृपालु परिषत है, जहा दान करने से आपको आध्यात्मिक लाभ मिलेगा। www.jkp.org.in वेबसाईट पर आप अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते है तथा ऑनलाइन दान भी कर सकते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

प्यार के माध्यम से या भक्ति द्वारा आध्यात्मिक अभ्यास के चार आवश्यक अंग हैं।

1. सतत 2. निष्काम 3. अनन्य 4. ईश्वर-संत समकक्ष (यदि आपको पहले निर्दिष्ट मानदंड के अनुसार वास्तविक संत मिला है तो।)

प्यार नॉन-स्टॉप होना चाहिए। एक पल के लिए भी खंडित नहीं होना चाहिए। जहां भी आप हैं, आप जो भी कर रहे हैं, आप जिस भी स्थिति में हैं, प्रेम का प्रवाह नही रूकना चाहिए। मन ही बंधन (सांसारिक पीड़ा) और स्वतंत्रता(शाश्वत आनंद) का एकमात्र कारण है। बाहरी स्थिति कोई फर्क नहीं पड़ता। उदाहरण के लिए कि आपने स्नान किया है या नहीं, भले ही आपके पास कुछ शारीरिक बीमारी या शारीरिक अशुद्धता है, फिर भी आप को भगवान को याद करना हैं। भगवान की याद आपको अंदर (मन) और बाहर (शरीर) से शुद्ध करती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

प्रारंभिक चरणों में, नॉन-स्टॉप भक्ति करना बहुत मुश्किल है। कारण ये है कि हम में भगवान के लिए प्यार की कमी है और ऐसा इसलिए है क्योंकि भगवान के गुणों पर कोई विचार-विमर्श नहीं है। आप भौतिक व्यक्ति के लिए प्यार कैसे विकसित करते हैं? सौंदर्य, नरमता, मीठी बात या किसी भी अन्य कौशल के गुणों के कारण। भगवान में हर गुणवत्ता है जिसे आप ढूंढ रहे हैं। वह इस धरती पर किसी भी व्यक्ति की सुंदरता से अनंत गुना सुंदर है। आप अपनी कल्पना के अनुसार किसी भी रूप में भगवान की कल्पना कर सकते हैं। संसारी व्यक्ति हमेशा कमीयों से भरा होता है जबकि भगवान किसी भी

कमियों से रहित होता है।

इसके अलावा भगवान बेहद दयालु, कृपालु है और आपसे बहुत प्यार करता हैं अन्यथा भगवान इस दुनिया को बनाता ही नहीं। वह आपके लिए कितनी सारी चीजें करता है ये आप नही जानते। वह आपको उसकी संतान के रूप में मानता है। ये शरीर जो आपके पास है वो उसका सृजन है। माता-पिता ने क्या किया? उन्होंने सिर्फ सेक्स का आनंद लिया। मां को यह भी पता नहीं है कि गर्भ के अंदर क्या हो रहा है। मैं ये नहीं कह रहा हूं कि आप अपने माता-पिता का अनादर करें। उन्होंने पाल पोस कर बडा किया है इसलिए माता पिता का एहसान मानना चाहिए। उनके प्रति अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। लेकिन तथ्य को महसूस करना भी जरूरी है। तभी सही निर्णय होगा। भगवान आपका असली पिता और माता है क्योंकि वह आपको शरीर सहित सबकुछ देता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

सम्मान और प्रेम पूरी तरह से अलग हैं। जैसे ही कोई भी काम करने वाला व्यक्ति अपने मालिक का सम्मान करता है लेकिन अपने परिवार से प्यार करता है, वैसे ही आप भी सबको सम्मान दें लेकिन प्यार केवल भगवान से करें।

कोई भी चीज अपनेआप नही होती। इतने नियमबद्ध विश्व का निर्माण अपनेआप नही हो सकता। पिछले जीवन के कार्यों के अनुसार ही किसी को डीएनए, आरएनए, जीन्स आदि मिलते है। भगवान के अलावा अन्य कौन यह अकाउंटेंट की अवैतनिक नौकरी कौन कर सकता है? वह अपनी करुणा के कारण करता है। अन्यथा किसीको भी कुछ भी नहीं मिलेगा! कोई जन्म नहीं, कोई सुख नहीं, कुछ भी नहीं!

यदि आप इसे सही तरीके से देखते हैं, तो वही भगवान बच्चे के लिए मां के स्तन में दूध का प्रावधान करता है और सभी सब्जियों, अनाज, गेहूं, चावल, फलों का प्रावधान करता है ताकि जीव अपने शरीर को जरूरी तत्व दे सके। इस शरीर में रहकर ही तो कोई भगवान के लिए साधन करेगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

वो ऐसा सखा है जो जीव का साथ एक पल के लिए भी नही छोडता। यदि छोड दे तो जीव की जीवन शक्ति समाप्त हो जाय। किसी भी योनी में जीव जाय, भगवान उसके साथ जाता है। जीव भगवान को छोड़कर हर किसी से प्यार करता है और इस बात के बावजूद भगवान जीव का हर पल साथ देता है, सहायता करता है कि जीव अपना अनंत आनंद का लक्ष्य हासिल करें। जीव तो भी भगवान की उपस्थिति तक स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है, फिर भी भगवान जीव का खयाल अनंत जन्म रखता आया है और आगे भी रखेगा।

भगवान की करुणा को सोचें, उसकी दयालुता को सोचें, उसका प्यार सोचें, आप की आँखों से आँसु छलक पडेंगे। आप उसे और अधिक याद करेंगे।

सतत या नित्य या अखंडित भक्ति के लिए पहले तो भगवान को अपना प्रिय मानना है। मन से सोचना है कि वो ही हमारा है। हर जन्म में वो ही हमारे कर्मों के अनुसार फल देता है और ये आशा लगाये जीव की ओर बगैर पलक भंजे देखते रहता है कि पता नही जीव कब शरणागत हो जाय। जिस क्षण जीव शरणागत होगा उसी क्षण बहुत सारे काम करने है। उसके त्रिदोष, त्रिकर्म, पंचक्लेष, पंचकोष, अनंत जन्मों के पाप पुण्य समाप्त करके उसे दिव्यानंद से मालामाल कर देना है।
अंतःकरण में दो पक्षी रहते है, एक जीव ओर एक भगवान। एक पक्षी (जीव) कर्म करता है एवं सुख दुःख का अनुभव करता है। दूसरा पक्षी (भगवान) कर्मफल देता है और जीव की ओर देखता रहता है।

मन का काम है सोचना। मन के सोचने एक तरीका होता है। मन हमेशा लिंक बनाके सोचता है। जैसे मानो आप श्रीकृष्ण की ध्यान कर रहे हो कि उनके बाल मनमोहक है, उनकी आँख बडी सुंदर है, तो मन कैसे लिंक बना सकता है देखते है। बिबी की आँख ऐसी नही है। लेकिन उस व्यक्ति की आँख पर काला चष्मा था। उस दुकान पर काला चष्मा डालकर डकैती हुअी थी। उस मुव्ही में चार लोगों ने मिलकर ऐसी डकैती डाली थी। लेकिन वो जगह बढिया थी। समुंदर के किनारे पर सुंदर घर था। मेरे घर में वाशिंग मशीन रिपेअर करवाना है.....। ये सब इतनी स्पीड से होता है कि आपको पता भी नही चलता कि मैं तो श्रीकृष्ण का ध्यान कर रहा था, ये वाशिंग मशीन कहा से दिमाख में आया?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

लिंक कैसे बनी इस पर यदि हम ध्यानपूर्वक विचार करेंगे तो मन पर कंट्रोल कर के भगवान को याद करना

आसान हो जाएगा। क्योंकि जिस लिंक से मन भगवान से दूर गया था, उसी लिंक से उल्टी दिशा में वो वापस भगवान का ध्यान करने लगेगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

इसके अलावा भगवान की याद बनाए रखने के लिए और भी तरीके है जैसे मन भगवान का ध्यान करते करते ऐसी जगह पहुँच गया जो आपको अच्छी लगती हो, तो वहाँ श्रीकृष्ण को भी अपने साथ ले जाओ, उनके साथ मन भाया प्यार का अनुहार करो। आपको ड्राइविंग अच्छी लगती है? आप मन से बढ़िया सी बढ़िया बीएमडब्लू चलाओ बगलवाली सीट पर श्रीकृष्ण को बिठा दो, उनसे बाते करो। जहा भी मन जाय वहा किसी ना किसी प्रकार से कभी श्रीकृष्ण को कभी श्रीराधा को कभी दोनों को सम्मिलित करो। कभी सोचो वो हमे बाहों में ले रहे है, हमसे प्यार भरी मिठी बातें कर रहे है। कभी सोचो वो हमसे दूर है और रो कर उनको पुकारो जैसे बच्चा मां को पुकारता है।

मन ने कुछ भी सोचा तो तुरंत सोचो कि तुम्हारे मन की बात भगवान ने जान ली क्योंकि उसी मन में तो भगवान का निवास है।

चाहे जैसे भी हो मन को हमेशा, सतत, नित्य भगवान में उलझाये रखना पडेगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

आप में से किसी के मन में आता होगा कि ये मन ही मन सोचने से क्या होना है? संसार में जो व्यक्ति मन ही से सोचता है कुछ क्रिया नही करता उसको लोग कहते है कि ये मनमोदक खाता है। कोई केवल मन से सोचेगा तो क्या उसका पेट भरेगा?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

संसार की कोई वस्तु या व्यक्ति आपके मन की बात नही जान सकता इसीलिए आपके केवल सोचने से कोई प्रतिसाद नही मिलता। संसार में किसी के व्यवहार से लोग उसके मन का अंदाजा लगाते है और कई बार धोखा खाते है। लेकिन भगवान सब जगह एवं मन में भी एकसमान रूप से व्याप्त है। ऐसा नही है कि वैष्णोदेवी, तिरूपती, काशी, वृंदावन, मक्का मदीना आदि जगह पर कोई स्पेशल भगवान है और आपके घर व्याप्त कोई साधारण भगवान है। भगवान सब जगह एक सा रहता है। इसलिए आप कही भी रहकर भगवान का स्मरण करोगे तो भगवान जान जाता है। और सोचने का वही फल देता है जो वास्तव में क्रिया करने से मिलता है।

एक बहुत गरीब आदमी था। उसको भगवान की सेवा करने की बडी इच्छा थी। लेकिन सामान लाने के लिए पैसा नही था। उसने एक बार एक बाबाजी का प्रवचन सुना जो बता रहे थे, "अरे! भगवान तो केवल मन देखते है इसलिए मन से की गयी सेवा या मानसी सेवा ही सर्वश्रेष्ठ है। वो बाहरी क्रिया देखते ही नही है। बाहरी क्रिया करते हुए भगवान का ध्यान जरूरी है लेकिन भगवान का ध्यान यदि आप कर रहे हो तो बाहरी क्रिया की जरूरत नही है। क्रिया की तो ठीक नही की तो ठीक।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

ये सुनकर वो बडा खुष हुआ। अब उसने हररोज मन से सोचना शुरू किया कि कीमती हीरों से जड़ी सोने की थाली है, उसमें सोने की कटोरी है, उसमें बढ़िया पकवान परोसे है और भगवान जी उसको खा रहे है। ऐसा क्रम कई दिन चला। एक दिन वो सोच रहा था कि कटोरी में बढ़िया खीर है। लेकिन थाली नीचे से गरम लग रही है। लगता है खीर जादा गरम है। तो देखना चाहिए और उसने अपनी उंगली कटोरी में डाली तो उंगली जल गयी। गौर फर्माइए ये सब मन का सोचना है। अरे! ये क्या मैंने तो भगवान के खाने में उंगली डाल दी। चलो, दुबारा से खीर बनाते है। फिर उसका ध्यान एकदम टूट गया। लिंक खंडित हो गयी।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

अब वो वास्तविक दुनिया में आ गया। उसने अपनी उंगली की ओर देखा। वो वास्तव में जली हुई थी। भगवान ने लक्ष्मी से कहा, आओ तुमको एक भक्त दिखाते है। उस गरीब आदमी को बुलाकर भगवान ने लक्ष्मी से कहा, पूछो इसकी उंगली कैसे जली है! उस आदमी को भगवान के दर्शन भी हो गये।

इसलिए ये हमेशा याद रखना चाहिए कि भगवान के क्षेत्र में मन से सोचना ही सबकुछ है। मन ही बंधन एवं मोक्ष का कारण है। बाहरी क्रिया अपेक्षित नही है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

भक्ति की दूसरी आवश्यकता है निष्कामता। भक्ति का मतलब है भगवान से प्यार करना। प्यार में कभी भी किसी भी तरह की शर्त या मांग नहीं रखना है। भगवान से कुछ भी मांगना नही है बल्कि उनको तन, मन , धन , प्राण देने की सोचना है। भगवान को आपसे कुछ भी नही चाहिए, लेकिन आपको शुद्ध प्रेम का अभ्यास करने की आवश्यकता है क्योंकि आप दिव्य प्रेम अमृत का स्वाद लेना चाहते हैं। आप कभी भी भगवान से मायिक या आध्यात्मिक किसी भी तरीके की मांग नहीं करेंगे। भगवान की इच्छानुरूप हमे रहना है। वे चाहे जैसा व्यवहार करे, हमें उनके सुख की ही सोचना है। श्रीकृष्ण आपके साथ या आप से दूर हो सकते हैं, वह आपसे प्यार कर सकते है या वह आपसे नफरत कर सकते है या वह दूसरों से प्यार कर सकते है, वह आप के बारे में अच्छा बोल सकते है या वह आप के बारे में बुरा बोल सकते है, वह आपको स्वीकार कर सकते है या वह आपको अस्वीकार कर सकते है, वह आपको एक समझदार व्यक्ति समझकर व्यवहार कर सकते है या वह आपको एक पागल व्यक्ति समझकर व्यवहार कर सकते है। वह आप से उदासीन रहे या आपको सुदर्शन चक्र चलाकर मारे, आपकी हमेशा यह कामना रहेगी कि मेरे प्यारे श्रीकृष्ण खुश रहना चाहिए, मेरे साथ जो भी होता हो।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

लेकिन याद रहे, किसी भी संसारी व्यक्ति के साथ इस तरह के प्यार का अभ्यास न करें। ये दिव्य प्रेम के गुण हैं और इसलिए प्रियतम पहले निर्दिष्ट मानदंड के अनुसार दिव्य व्यक्तित्व-भगवान या वास्तविक संत होना चाहिए। संसार में तो सबकुछ स्वार्थ के आधार पर ही होता है। रास्ते के रोगी भिखारी से कोई प्यार नही करता। क्योंकि

उससे कोई स्वार्थ नही सिद्ध होना है। जब तक अनंत आनंद का स्वार्थ ना सिद्ध हो, तब तक कोई भी व्यक्ति दूसरे के लिए कुछ कर ही नही सकता। ये जानकर संसार में चालाक बने रहिये। संसार में ना किसी से प्यार हो, ना किसी से द्वेष हो।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

ईश्वरीय क्षेत्र का प्यार यदि निष्काम है तो वो हर क्षण बढ़ता जायेगा। उसमें कभी ब्रेक नही लगेगा। यदि निष्काम प्रेम माधुर्य भाव युक्त है तो वो सर्वोच्च कक्षा का महारास रस मिलेगा जिसके पाने के लिए बडे बडे ज्ञानी परमहंस, ब्रम्हादिक आदि ही नही, महालक्ष्मी भी तरसती है। सकाम प्रेम स्वार्थ के आधार पर उपर नीचे होते रहता है। सकाम प्रेमी विशेष स्वार्थहानी होने पर नास्तिक बनकर भगवान को गाली भी दे सकता है। इसलिए साधक को निष्काम रहना परमावश्यक है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

हम सभी जानते हैं कि श्रीकृष्ण वृंदावन की गोपियों से प्यार करते थे, और गोपियां उनसे प्यार करती थीं। एक ईश्वर के सभी आत्माओं के साथ रिश्ते स्वाभाविक है क्योंकि एक भगवान अनंत आत्माओं के लिए अनंत रूप धारण कर सकता है। श्रीकृष्ण ने राधा समेत सभी गोपियों को छोड़ दिया और द्वारिका गए और सोलह हजार एक सौ आठ लड़कियों के साथ विवाह किया जो उनके द्वारा राक्षस के चंगुल से बचायी गयी थी। श्रीकृष्ण पूर्ण ऐषोआराम का जीवन जीते था, जबकि गोपियां गांव में साधारण जीवन जी रही थीं, श्रीकृष्ण की वापसी की प्रतीक्षा कर रही थीं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

द्वारिका में, श्रीकृष्ण ने एक बार अभिनय किया था कि उन्हें गंभीर सिरदर्द हो रहा था। सभी डॉक्टर विफल हो गए। सभी रानीयाँ बेहद चिंतित थी। नारदजी, जो उनके भक्त में से एक थे, उन्होंने श्रीकृष्ण से कहा, 'यह सिरदर्द आपकी करतूत है। केवल आप हमें इसका इलाज बता सकते हैं। '

श्रीकृष्ण मुस्कुराये और कहा,'अगर मुझे अपने सिर पर लगाने के लिए मेरे भक्त के पैरों (चरण-धूल) से धूल के कण मिलते हैं, तो मैं जल्द ही ठीक हो जाऊंगा। '

नारदजी ने सोचा, 'मैं भी तो एक भक्त हूं। लेकिन मैं इस गड़बड़ी में नहीं पडना चाहता क्योंकि एक बार मुझे बंदर का चेहरा दिया गया था। नहीं जानते कि श्रीकृष्ण के मन में क्या हैं! '

नारदजी तब रानीयों में पास गये क्योंकि किसी भी भौतिक व्यक्तित्वों को भगवान की रानी की सीट नहीं मिल सकती। वो सभी रानीयां महान संत थी। रानीयों ने जवाब दिया, श्रीकृष्ण हमारे पति हैं और शास्त्रों के अनुसार पति को चरण धूल पेश करना सबसे बड़ा पाप

है।'।
नारदजी ने कई भक्तों से चरण-धूल पाने का प्रयास किया लेकिन उनमें से सभी ने इनकार कर दिया। उसके बाद वे श्रीकृष्ण के पास वापस गये। श्रीकृष्ण ने कहा, 'आपको इस जगह में मेरी दवा नहीं मिलेगी। इसे वृंदावन में आज़माएं।'
नारदजी वृंदावन गए और वृंदावन की गोपियों को बताया, 'श्रीकृष्ण ठीक नहीं है। उनको गंभीर सिरदर्द है।
'

सभी गोपियां चिंतित हो गयी। नारदजी ने आगे कहा, 'यदि आप अपने पैरों को धूल दे सकती हैं, तो वह तेजी से ठीक हो जाऐंगे।' सभी गोपियों ने अपने पैर फैला दिये और कहा की चाहे जितनी चरण-धूल ले जाइये।
नारदजी ने पूछा, 'क्या आप परमेश्वर को पैर की धूल देने की पेशकश के नतीजे जानती हैं? नरक जाना पडता है।'
गोपियों ने कहा,' तेजी से जाओ। श्रीकृष्ण परेशानी में हैं। पहले उनको चरण-धूल दे आओ। बाद में ये व्याख्यान दो।'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

यह प्यार है जिसे निस्वार्थ प्यार कहा जाता है। प्रेमी अपनी कार्रवाई के नतीजे के बारे में चिंतित नहीं है जब तक कि उसके कार्य ईश्वर को खुश कर रहे हो। इस प्रकार प्यार निष्काम होना चाहिए। निष्काम प्रेमी नरक यातना से भी किसी भी राहत की भी मांग नहीं करता।

अगर भक्ति निष्काम है, तो प्यार सदा बढ़ता है और कभी भी कम नही होता। अन्यथा इसमें उतार-चढ़ाव होते है। मांग पूरी होने पर यह बढ़ता है और न पूरी होने पर यह घटता है। भगवान से प्यार की कमी होने पर, आप इस दुनिया के ओर अधिक आकर्षित होते हैं। आप भगवान से दूर चले जाते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

कई लोग सांसारिक हानि को भगवान का कोप मानते हैं। भगवान कभी भी, किसी के लिए भी अकल्याण का कोई कार्य नही करता। भगवान केवल कृपा करता है। हम किसी से कोप या दुश्मनी करते है, क्योंकि वो व्यक्ति हमारे सुख के मार्ग में रोडा बनता है। भगवान का सुख या भगवान की वस्तु कोई नही छीन सकता। वास्तव में जो कुछ भी जीव के पास प्रारब्ध के अनुसार है, वह उसी का दिया हुआ है। सामग्र वस्तु और संबंध अपनी मायिक प्रकृति के कारण मात्रा एवं अवधि में सीमित होते हैं। कभी ना खतम होनेवाली चीज अनंत परिमाण की होनी चाहिए। किसी भी व्यक्ति का नुकसान या लाभ उसके अपने कर्मों का नतीजा है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

हिंदू का कहना है कि नुकसान भगवान की करुणा है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने ही कार्यों फल मिलता है। इसके बारे में भगवान या अन्य कोई कुछ नहीं कर सकता। यह समझना चाहिए कि सांसारिक संबंध, धन, संपत्ती, प्रतिष्ठा स्थायी नहीं हैं। जहां जन्म है, वहां मौत होनी ही है। मृत्यु को नियंत्रित करने वाले कोई नियम नहीं हैं। युवा मर जाता रहता है जबकि बूढ़ा जीवित रहता है। मृत्यु के बाद, सभी को अपने कर्मों के अनुसार भविष्य में जीवन मिलते हैं। कई बार ऐसा होता कि जो कोठी उसने बनायी, उसी कोठी से दंडा खा कर बाहर आना

पडता है, जब वो कुत्ता बनकर उसी कोठी के अंदर घुसता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

मृत व्यक्ति को पता नहीं होता कि उसके प्रस्थान के बाद क्या होता है। इसलिए आपके दुःख का या रोने धोने का मृत व्यक्ति को कोई पता नहीं चलता। फिर शोक करने का उपयोग क्या है?दुःख उस व्यक्ति से आपके लगाव का परिणाम है। जब आप किसी के संपर्क में होते हैं तो लगाव बढ़ता है। मृत्यु के बाद यह संपर्क टूट जाता है और इसलिए बेहतर मौका है कि वैराग्य का अभ्यास किया जाय। वैराग्य आध्यात्मिक उन्नति का एक अनिवार्य हिस्सा है और इसलिए हिंदू का कहना है कि कोई भी सांसारिक नुकसान भगवान की करुणा है। सांसारिक संपत्ति मन को उलझाये रखती है और मन भगवान पर केंद्रित नहीं हो सकता। कुंती ने श्रीकृष्ण से वर मांगा, 'मुझे विपत्ती दो, संसार का अभाव दो ताकि मैं हमेशा आपके बारे में सोच सकूं।'

निष्कर्ष ये है कि हमें भगवान से कोई सांसारिक वस्तु नही मांगनी चाहिए और ना ही सांसारिक हानि पर दुःखी होना चाहिए और ना ही निराश महसूस करना चाहिए।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

आध्यात्मिक कामनाएँ या आध्यात्मिक क्षेत्र की माँगे बहुत प्रकार की होती है। जैसे -
सामीप्य मुक्ति - मैं हमेशा भगवान के साथ रहना चाहता हूँ।
साष्टि मुक्ति - मैं भगवान का ऐश्वर्य चाहता हूँ। सारूप्य मुक्ति - मैं भगवान की तरह दिखना चाहता हूँ।
सालोक्य मुक्ति - मैं हमेशा भगवान के निवास में रहना चाहता हूँ।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

सायुज्य मुक्ति - मैं भगवान के साथ एकता चाहता हूँ।

ये पांच प्रकार के मुक्ति हैं, जो अनंत क्षेत्र में स्थित हैं। इनमें से एक जो भगवान में आत्मा को विलीन करती है वह ईश्वर के साथ एकता की इच्छा है। यह सबसे खतरनाक है। इसे एकत्व मुक्ति या अद्वैत मुक्ति या कैवल्य मुक्ति या मोक्ष भी कहते है। यह निर्गुण, निराकार, बिना किसी रूप के भगवान के अनुयायियों का गंतव्य है। जैसा कि पहले की बताया गया है सायुज्य मुक्ति में केवल आत्मा रहती है। इस स्थिती में मन मृतप्राय स्थिती में रहता है। आत्मा को दिव्य शरीर नही मिलता जैसे भक्तों को मिलता है। मोक्ष में कोई भी रूप नहीं हो सकता, इसलिए किसी भी इंद्रियों का कोई भी काम नहीं हो सकता और इसलिए भगवान को नहीं देखा जा सकता, नही सुना नहीं जा सकता, नही स्पर्श किया जा सकता। सिर्फ अनंत खुशी का एहसास होता है। आत्मा का भगवान में विलय हो जाता है लेकिन दो व्यक्तित्व अभी भी मौजूद हैं, एक आत्मा और एक भगवान। आत्मा, हालांकि भगवान के भीतर लीन रहता है लेकिन भगवान से अलग रहता है। भगवान नहीं बनता जाता। आत्मा और भगवान का एकत्व अनंत आनंद के उपभोग के दृष्टि से माना गया है। आत्मा अपनी सत्ता

नही खो देता। गीता का चैलेंज है कि किसी भी सत्ता का कभी अभाव नही हो सकता। एक बार मिल जाने पर यह स्थिती आत्मा के पास हमेशा के लिए रहती है। उस मामले के लिए अनंत क्षेत्र में कोई उपलब्धि हमेशा हमेशा के लिए है। वो सुख कभी छीना नही जा सकता है, ना ही उसके ऊपर कभी दुःख का अधिकार हो सकता है।

शेष चार मुक्ति या मोक्ष भक्तों से संबंधित हैं। वे भगवान के साथ विलय से काफी बेहतर हैं। हालांकि, ये सभी मुक्ति अपनी सुख के लिए होती है ना कि भगवान के सुख के लिए। इनमें भगवान के साथ प्यार का संबंध नही है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

आध्यात्मिक कामना में अपने सुख के लिए श्रीकृष्ण के स्पर्श आदि जैसे दिव्य विषय की मांग भी शामिल है। जिस प्रकार कोई स्त्री अपने विषय भोग के लिए किसी पुरूष का संग चाहती है, उसी प्रकार सकाम प्रेमिका अपने विषय भोग के लिए भगवान का संग चाहती है।

इसका मतलब यह नहीं है कि श्रीकृष्ण को देखने के लिए किसी भी इच्छा नहीं होनी चाहिए। उनसे मिलने की, उनको गले लगाने की इच्छा तो होनी ही चाहिए। इस तरह के लालसा के बिना कोई प्यार नहीं है।

तो? इन सभी इच्छाओं को इस बात के साथ मिलकर किया जाता है कि इन सभी कार्यों से श्रीकृष्ण को खुश करना है। निष्काम भक्त भी उनके दर्शन चाहता है, लेकिन कब? जब भगवान को दर्शन देने में सुख मिले। भक्त महसूस करता है, 'मैं चाहता हूं कि कृष्ण मेरे साथ

रहें, अगर वह ऐसा करने में खुश है तो। अगर उन्हे ऐतराज है, तो वो ना आए। मैं अनंत काल तक उनका इंतजार करूंगा। मेरा प्यार हमेशा बढ़ेगा। '

इस प्रकार प्यार किसी भी सांसारिक या आध्यात्मिक कामना या मांग से मुक्त होना चाहिए। केवल भगवान के सुख की कामना ही मन में रहनी चाहिए। आध्यात्मिक दुनिया में कई गंतव्य हैं जिनमें से कुछ पर आगे चर्चा की जाएगी।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भक्ति अनन्य होनी चाहिए। भक्त को केवल ईश्वर पर निर्भर रहना है। पूरी तरह से केवल भगवान पर ही भरोसा करना है। किसी और से किसी भी व्यक्ति या वस्तु का सहारा नहीं लेना है। हमेशा केवल भगवान के सहारे रहना हैं। चूंकि ईश्वर आपको सलाह नहीं दे सकता, इसलिए आपको एक वास्तविक संत या उसके उपदेश के अनुसार चलना हैं।

लोगों की सभी प्रकार के स्वर्गीय इंद्र, कुबेर आदि देवी देवताओं की पूजा करने की आदत है। विभिन्न मंत्रों का जप करना, सभी मंदिरों से आशीर्वाद मांगना इससे अनंत आनंद वाला काम नही बनेगा बल्कि बिगड़ जायेगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान श्रीकृष्ण कहते है, जो कोई केवल मेरी ही शरण में आता है वही माया से उत्तीर्ण हो सकता है। अनन्यता परमावश्यक है। इसी अनन्यता का पाठ पढ़ाने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने इंद्र की पूजा बंद कर के दिखाया था कि अनन्य भाव से मेरी भक्ति करनी है।

भगवान के सभी पहलुओं का विस्तार अनंत है। उनके पास अनंत रूप हैं। सभी रूपों में एक ही शक्ति होती है लेकिन जितनी जरूरत है उतनी ही शक्ति प्रकट होती है। हमें एक रूप का चयन करना चाहिए और उसी की भक्ति करनी चाहिए। उदाहरण के लिए श्रीकृष्ण। अगर भगवान किसी अन्य रूप में हमारे पास आते है तो हमें उनका स्वीकार नहीं करना है।

एक बार रास का दिव्य नृत्य हो रहा था, जिसमें गोपियां, राधा और श्रीकृष्ण सम्मिलित थे। यह एक दिव्य रस से

भरा माहौल था जिसमें गोपियों को दिव्य जगत का सर्वोच्च रस मिल रहा था। भगवान श्रीकृष्ण गोपियों ने जितनी गोपियां थी उतने रूप धारण किये थे। श्रीकृष्ण गोपियों के ताल पर नृत्य कर गोपियों को रिझा रहे थे। गोपियों की सुंदरता आदि की तारीफ कर रहे थे। हर एक गोपी को यही लग रहा था कि श्रीकृष्ण केवल उसके साथ है। गोपियों ने सोचना शुरू कर दिया, 'मुझे देखो। मैं बहुत सुंदर, आकर्षक और मोहक हूं कि यहां तक कि भगवान स्वयं मेरे सौंदर्य पर मंत्रमुग्ध हो गये है। वह मेरे ताल पर नृत्य कर रहे है और मेरे प्यार में फंस गये है। '

श्रीकृष्ण जो हर किसी के मन की बात को जानते है, गोपियों का अहंकार देखकर रास से गायब हो गये। श्रीकृष्ण को खोने पर, गोपियां पूरी तरह से व्यथित थी, जैसे कि उनके जीवनकाल का पूरा खजाना खो गया हो। वे बुरी तरह से रो रही और पागल सी हो गयी थी। उन्होंने श्रीकृष्ण की प्रार्थना की और उन्हें फिर से वापस आने की विनती की। वे वृंदावन के जंगल में हर जगह श्रीकृष्ण को खोज रहीं थी। राधा भी बाद में गोपियों में शामिल हो गई।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

तब श्रीकृष्ण फिर से प्रकट हुए, अपने सामान्य रूप में नहीं बल्कि भगवान विष्णु के रूप में। सभी ऐश्वर्य के साथ चार हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म लिए। गोपियां जो अस्तव्यस्त कपड़ों में थी, उन्होंने कपडे तुरंत ठीक करने की कोशिश की और भगवान से पूछा, 'आप कौन हैं और आप हम सभी महिलाओं के बीच में क्यूं आये हैं?' उसने कहा, 'तुम मुझे दुःखी हो कर पुकार रही थी, तो मैं यहाँ हूँ! मैं भगवान विष्णु हूं।' गोपियों में से कोई भी उनके पास नहीं गया। गोपियों में से एक ने कहा,

'अगर यह व्यक्ति भगवान है तो हम परीक्षण करें'। उन्होंने कहा, 'यदि आप सही में भगवान हैं, तो कृपया हमें हमारे प्यारे श्रीकृष्ण वापस लौटा दीजिए जो हमें इस अवस्था में छोड़ गये है। हम सब उनसे प्यार करती हैं और उनके बिना नहीं रह सकती। ' श्रीकृष्ण को अपने प्यारे और सुंदर रूप में आना पडा। गोपियां आनन्दित हो गयी और रास फिर से शुरू हो गया।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

द्रौपदी की कहानी भी इस बात को दर्शाती है। जब उसका वस्त्र छीन लिया जा रहा था तो उसने पहली बार सोचा कि उसके शक्तिशाली पति उसको बचाएंगे, फिर उसने दरबार में उपस्थित मान्यवरों को मदद के लिए पुकारा, जिसके बाद उसने अपने दात से सारी दबायी यानी अपनी ताकत पर भरोसा किया, तब भी भगवान नही आये। आखिर दोनो हाथ फैला के जब उसने अनन्य भाव से केवल भगवान पर निर्भर होकर उन्हे पुकारा, तब अंबरावतार हुआ और द्रौपदी की रक्षा हुई। बगैर अनन्यता के काम नही बनेगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

जब आपको गुरु के रूप में एक वास्तविक महापुरूष मिलता है, तो आपको अपने आध्यात्मिक गुरु को ईश्वर के समान मानना चाहिए और जैसी भक्ति भगवान की करते हो ठीक वैसी ही भक्ति गुरू की भी करनी चाहिए। लेकिन ये निश्चित करना जरूरी है कि संत वास्तविक है। इसके बारे में हम पहले विवेचन कर चूके है।

हिंदू कहते हैं कि आध्यात्मिक गुरु स्वयं भगवान का दूसरा रूप है क्योंकि वास्तविक संत की क्रियाएं सीधे भगवान द्वारा संचालित होती हैं और ऐसे संत के पास भगवान की सभी शक्तियां होती हैं। भगवान और वास्तविक संत की सभी क्रियाएं दिव्य हैं। भगवान और संत अंतर्यामी होने के कारण उनकी जीव के मन तक पहुंच है और वे जीव के सभी ज्ञात और छिपे हुए लक्षणों के बारे में पूरी तरह से जानते हैं। ईश्वर और संत के कार्यों को मायिक या भौतिक दृष्टिकोण से नहीं देखा जाना चाहिए, हालांकि कोई मायिक जीव दिव्यता का अनुभव नहीं कर सकता। यह ध्यान में रखना चाहिए कि महापुरूष या संत के बाह्य भौतिक कार्यों का दिव्य अर्थ है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान का अर्थ केवल भगवान को पाने पर समझा जा सकता है। एक चार साल का लड़का सेक्स शब्द का अर्थ नहीं जानता, हालांकि वह इस शब्द को जान सकता है। निश्चित आयु के बाद ही अर्थ स्पष्ट होगा। इसी प्रकार मायिक जीव दिव्य शब्द को जान सकते हैं लेकिन दिव्य का वास्तविक अर्थ तभी स्पष्ट होगा जब मन दिव्यता को बनाए रखने में सक्षम होगा। दिव्यता एक अनुभव है और इसलिए उन मन तक सीमित है जिनके पास यह अनुभव है।

संत कहते हैं, 'ईश्वर ही आनंद है।' लेकिन वह आपको उस दिव्य आनंद का एहसास नहीं करा सकते जब तक कि मन शुद्ध एवं दिव्य न हो। इसलिए, यह तय होने के बाद कि संत वास्तविक है, उसके किसी भी कार्य पर कोई सवाल या संदेह नहीं उठाया जाना चाहिए। उसकी सभी क्रियाएं जीवों को कष्टों के खतरनाक अंधेरे से उठाने के लिए ही होती हैं। हिंदू का कहना है कि 'संत या भगवान के कार्यों की नकल नहीं की जानी चाहिए', क्योंकि ये क्रियाएं वैसी नहीं हैं जैसी वे दिखती हैं। संत या भगवान के कार्य हमेशा जीव की आंतरिक मन की स्थिति से संबंधित होते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में भी एक ही गतिविधि के अलग-अलग उद्देश्य और परिणाम हो सकते हैं। उदाहरण के लिए चाकू पेट में भोकने की क्रिया। एक हत्यारे को फांसी दी जाती है जबकि एक कुशल चिकित्सक को उसी कार्रवाई के लिए सम्मानित किया जाता है। दिव्य क्रिया जीव को भगवान की ओर ले जाने वाली है जबकि भौतिक या मायिक क्रिया जीव को भगवान से दूर ले जाने वाली है।

चूंकि संत की सभी क्रियाएं दिव्य हैं, इसलिए उन्हें ईश्वर के समान माना जाना चाहिए या दूसरे शब्दों में संत स्वयं ईश्वर हैं। अर्थात्, संत और ईश्वर की समानता अनिवार्य है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

संत और भगवान के बीच समानता का संबंध है। हिंदू के अनुसार इस संबंध के चार विरोधाभासी पहलू हैं।

1. भगवान संत से बडा है।
2. संत भगवान से बडा है।
3. संत और भगवान समान है।
4. उपरोक्त सभी गलत हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

आइए एक-एक करके जांचें।
भगवान सबसे बड़ा है। कोई भी उसके बराबर ही नही है तो उससे बडा नहीं होने का सवाल ही नही पैदा होता। इसलिए पहला विकल्प मान्य है।

भगवान हर जगह मौजूद है, हमारे अंदर भी बैठा है लेकिन हम उससे कोई लाभ नहीं ले सकते। हम उसे नहीं देख सकते। हम उसके शब्दों को नहीं सुन सकते। हम उसकी उपस्थिति महसूस नहीं कर सकते। लेकिन संत को देखा जा सकता है, उससे बात की जा सकती है। वह हमें सिद्धांत समझाता है। हमारे संदेह मिटाता है। हमारे मन की सफाई करने का काम करता है। मन शुद्ध होने के बाद मन को दिव्य बनाता है और अंत में मन को अनन्त आनंद से भरने तक का पूरा काम संत ही करता है। इसलिए जीव के मतलब के हिसाब से दूसरा विकल्प मान्य है कि संत भगवान से बडा है।
गुरू गोविंद दोऊ खडे, लागू काके पाव
बलिहारी वा गुरू की जिन गोविंद दियो मिलाय

तीसरा विकल्प इस तथ्य पर आधारित है कि शाश्वत आनंद या भगवान को प्राप्त करने पर, भगवान संत को सबकुछ दे देते है जो उनके पास है - अनंत जीवन, अनंत ज्ञान, अनंत आनंद। अतः भगवान और संत में

कोई अंतर नही रह जाता और इसलिए यह कहा गया कि दोनों समान हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

चौथा विकल्प इस बात पर आधारित है कि भगवान को प्राप्त करने पर, संत के सभी कार्यों को सीधे भगवान द्वारा नियंत्रित किया जाता है जबकि हमारे कार्यों को माया द्वारा नियंत्रित किया जाता है। इस प्रकार एक संत के लिए, प्रत्यक्ष कर्ता ईश्वर है और संत खुद नहीं है। इसका मतलब ये हुआ कि संत कुछ करता ही नही। संत के कार्य का कर्ता भगवान है। यानी संत और भगवान में कोई भेद है ही नही। जिसका अर्थ है कि कर्ता के हिसाब से दो व्यक्तित्वों का कोई सवाल नहीं है। जब दो व्यक्तित्व है ही नही तो छोटे, बडे या समान होने का कोई सवाल ही नही है। इस प्रकार चौथा विकल्प सच है। संत और भगवान एक ही हैं।

भगवान कहते है कि 'संत मै ही हूँ।' इसलिए संत के कार्य दिव्य हैं। लेकिन वास्तविक संत की प्राप्ती होना आसान नहीं है। तो क्या करना है? जो अभी तक बताया गया - निष्काम और अनन्य भाव से भगवान की क्षण क्षण सतत भक्ति करना है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

कई लोग सांसारिक वस्तुओं और संबंधों के लिए भगवान की प्रार्थना करते हैं। अपनी मांग भगवान के सामन रखते है। - मुझे एक बच्चा दे दो। किसी ऐसे व्यक्ति को बचाओ जो मर रहा हो। मुझे पैसे दो। मुझे शक्ति दो। मेरी समस्या हल करें। मेरी पीड़ा मिटा दो। मेरा बिझीनेस चलवा दो। मेरी पिक्चर हिट करवा दो। और इसी तरह अनेक मांग करते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

यह बिल्कुल भक्ति नहीं है। भक्ति का मतलब भगवान से प्रेम। ऐसे मामलों में प्रेम तो उन संसारी वस्तु या व्यक्तिओं के लिए है जो मांगी जाती है और भगवान सांसारिक इच्छा को पूरा करने के लिए सिर्फ एक साधन बन जाता है। जब इच्छा पूरी होती है ते विश्वास बढ़ता है और जब इच्छा पूरी नही होती है तो विश्वास कम हो जाता है। भगवान को मूर्ख नहीं बनाया जा सकता। भगवान किसी के लिए कर्म के परिणामों में हेरफेर नहीं करता। हिंदू कहता है 'कोई भी अपने कर्म के परिणाम से बच नहीं सकता।' यह भगवान का कानून है और वह अपना कानून किसी के लिए नहीं तोड़ता। कानून तोडने के लिए भगवान से मन्नत मांगने वाले यानी भगवान को घूस देकर अपना संसारी काम कराने की आशा रखने वाले तो घोर मूर्ख कालिदास से भी अधिक मूर्ख है।

लेकिन हमें सदा के लिए सभी पीड़ाओं से छुटकारा पाने के लिए भगवान से प्यार करने की जरूरत है और तब अंतःकरण की शुद्धि पर भगवान के शरणागत होने पर आपकी सब समस्याएँ समाप्त होगी।

यदि आप भगवान से कुछ सांसारिक मांग करते हैं, तो भी आप उसे केवल तभी प्राप्त करेंगे जब वह आपके

प्रारब्ध में हो। लेकिन आपको धोखा होगा कि भगवान ने मेरी सुन ली। यदि प्रारब्ध में नही होगा तो इच्छापूर्ति नही होगी। फिर आप कहोगे, अरे! भगवान वगैरा कुछ नही होता और आप नास्तिक बन जाओगे। प्रारब्ध के विपरीत किसी को कुछ नही मिलता। इसीलिए कुछ इच्छा पूरी होती है और कुछ नही होती।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

जो लोग सही सिद्धांत से अवगत नहीं हैं वे नकली संतों से आसानी से फंस सकते हैं जो सभी प्रकार की सांसारिक वस्तुओं का वादा करते हैं। सभी को कहेंगे - तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। सौ लोगों में से कुछ लोगों की इच्छा उनके प्रारब्ध के अनुसार पूरी होगी। वे लोग उस दम्भी का गुन गाने लगेंगे। फिर क्या है? उसकी दुकान चलने लगी। अब लोगों को ठगने का काम और जोर शोर से चलेगा। लोग ऐसे पाखण्डियों के चक्कर में क्यूं आते हैं? क्या वो ये नही जानते कि भगवान राम ने अपने पिता दशरथ तक को नहीं बचाया था?

एक बात और है कि भगवान हर जगह मौजूद है। प्रसिद्ध मंदिरों के स्थानों पर जाने की क्या आवश्यकता है? वही भगवान पास के मंदिर में मौजूद है। वही भगवान आपके दिल में मौजूद है। यदि आप इसे विश्वास नहीं करते हैं, तो आपको भगवान में कोई विश्वास नहीं है। हिंदू कहता हैं, 'जब मैं(भगवान) तुम्हारे दिल में वही रहता हूं तो तुम मुझे बाहर क्यों खोजते हो?' आपके घर पर कामधेनु (गाय जो आपकी सभी इच्छाओं को पूरा करती है) है और आप बाहर भोजन के लिए भीख मांग रहे हैं! न केवल मंदिर, मस्जिद बल्कि लोग (बड़े राजनेताओं और प्रसिद्ध हस्तियों सहित) कबरीस्तान में भी आशा पूर्ति हेतु जाते हैं जहां किसी को सालों पहले दफनाया गया

था। कितनी बड़ी मूर्खता है!

हमें सही सिद्धांत याद रखना चाहिए 'कोई भी अपनी कर्म के फलों के अलावा कुछ और नहीं प्राप्त कर सकता। कोई भी कर्म के परिणामों से बच नहीं सकता। 'अवश्यमेव भुक्तव्यम्' कर्मफल भोगना ही पडता है। ईश्वर भक्ति ही एकमात्र मार्ग है! इसे अभी करें या आज करें या इस जीवन में करें या अनंत जीवन के बाद इसे करें! करना पडेगा। 'नान्यः पंथा विद्यते यनाय' कोई अन्य मार्ग नहीं है! जब करना ही है, तो जितनी जल्दी शुरू हो सके उतना बेहतर है। अन्यथा मानसिक एवं शारीरिक मृत्यु आदि दुःखों का कभी अंत नही होगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

आइए हिंदु सिद्धांत के कुछ विरोधाभास पर विचार करते है।
जीव प्रारब्ध या भाग्य नहीं बदल सकता।
जीव को अपने कर्म का फल मिलता है।

हिंदू स्पष्ट रूप से बताता हैं कि जो भी भाग्य में है वो हो कर रहेगा। किसी भाग्य का उसके द्वारा पूर्व जीवन में किए गए कर्मों द्वारा तय किया जाता है। उसमें बदलाव नामुमकिन है। आम आदमी की बात छोडो, महापुरूषों को भी प्रारब्ध भोगना पडता है। इसलिए, नकली पाखण्डि लोग जो भाग्य बदलने का दावा करते हैं वे अपराधी हैं क्योंकि वे भोले लोगों को धोखा दे रहे हैं। शास्त्रों का कहना है कि कार्यों से परिणाम पैदा होते है, उन परिणामों से कोई नहीं बच सकता। दूसरी ओर शास्त्रों का दावा है कि इस जीवन के आपके कर्मों के परिणाम के लिए आप उत्तरदायी हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

समस्या ये है यदि भाग्य को बदला नहीं जा सकता है तो हमारे कार्यों को भाग्य से तय किया जाएगा। उस मामले में नये कर्म कैसे होंगे? यदि कोई हत्या कर दी गई थी, तो मरना ये मरने वाले व्यक्ति के भाग्य में था। फिर, हत्यारे को बाद के जीवन में और लाखो वर्ष नरक में पीड़ा के अधीन क्यों किया जाता है?

जवाब जानने के लिए, हमें यह समझने की जरूरत है कि तीन प्रकार के कर्म हैं। वे है, संचित कर्म, प्रारब्ध कर्म और क्रियमाण कर्म।

संचित कर्म जीव के पिछले अनंत मानव जन्मों के कार्य हैं।

संचित कर्मों का एक छोटा सा हिस्सा जिसका परिणाम वर्तमान जीवन में भुगवाया जाता है उसे प्रारब्ध कर्म कहते है।
क्रियमाण कर्म ऐसे कार्य होते हैं जिन्हें किसी व्यक्ति द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। क्रियमाण कर्मों का फल मिलता है। क्रियमाण कर्मों को ही जादातर कर्म के नाम से भी संबोधित करते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

हत्या के मामले पर विचार करें। जिसकी हत्या होती है उस व्यक्ति का जीवन काल केवल उसकी हत्या के समय तक था। वह उसकी नियति थी। उस व्यक्ति की हत्या नही होती तो भी उस समय उसकी मृत्यु हो जाती।

लेकिन हत्यारे जानबूझकर दूसरे के जीवन को खत्म करना चाहते थे। हत्यारों ने ये सोचा कि इसको मारना है। ये सोचना अपराध है। ये पहले भी बताया जा चुका है कि भगवान मन की मनीषा देखते है। हत्यारों कि मनीषा खराब थी। इसी प्रकार उन लोगों को भी हत्या परिणाम भोगने पडते है जो अपराधी को मदद करते है, जो अपराधी को बचाने की तिकडम भिडाते है, चाहे वो कोई भी हो - रिश्तेदार, मित्र, वकील, पुलिस, नेता, मंत्री, जज - सब के सब जब नरक जायेंगे तो एक दूसरे को दोष देते हुए लाखो वर्ष भयानक यातना भोगेंगे।....मैं तो कह रहा था ऐसा करना ठीक नही है लेकिन इसीने कहा था कि कुछ नही होता, उपर से नीचे तक अपनेही आदमी है, सब दब जायेगा। अब कौन छुडायेगा? दबाने वाले तो सब यही है..इत्यादि

एक व्यक्ति अपनी संपत्ति खो देता है। यह उसका भाग्य था। अब, वह इसके बारे में क्या सोचता है ये क्रियमाण कर्म है। क्या वह भगवान को गाली देता है? क्या वह आत्मा के लाभ के लिए भगवान के फैसले को स्वीकार करता है? क्या वह नुकसान से नाखुश है या वह खुश है कि उसका मन अब धन में नही उलझेगा और इसे अब आसानी से भगवान में लगाया जा सकता है?

एक्सिडेंट में जब कोई मरता है। तो ये देखा जाता है कि ड्रायवर की कोई गलती तो नही है? उसने शराब तो नही पी रखी है? यदि है तो ही दंड मिलता है। क्योंकि ड्रायवर को ये पता है कि ऐसा करने से गाडी से किसी की मौत हो सकती है। अब संसार में तो झूठी गवाही आदि गलत सलत काम चलता है। लेकिन भगवान खुद नोट करता है और खुद फैसला सुनाता है। वहा कोई गवाह की जरूरत नही।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

रात को बारा बजे यदि कोई बंद दुकान का ताला हाथ में लिए देख रहा हो तो उसे पुलिस पकड लेती है। उसने चोरी नही की लेकिन चोरी करने की उसकी मनीषा थी।

हम भाग्य पर प्रतिक्रिया कैसे करते हैं ये हमारे हाथ में हैं और इसलिए हमारी सोच एक क्रियमाण कार्य है। हमारे साथ अच्छा या बुरा जो कुछ भी होता है, उस पर हमें सकारात्मक होना चाहिए। जो भी सुख दुःख मिलता है, उसे भगवान की कृपा मानना चाहिए।

अतः दोनो कथन सही है।

जीव भाग्य नहीं बदल सकता।
जीव को अपने कर्म का फल मिलता है।

जीव ही भगवान हैं। (अद्वैत सिद्धांत)
जीव और भगवान भिन्न हैं। (द्वैत सिद्धांत)

भगवान और जीव में कुछ महत्वपूर्ण एकसमान विशेषताएं हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान बिना के जन्म है और वैसे ही जीव है।
भगवान अनादि है वैसे ही जीव भी अनादि है।
भगवान को नष्ट नहीं किया जा सकता वैसे ही जीव को भी नष्ट नहीं किया जा सकता।
भगवान चैतन्य है, वैसे ही जीव भी चैतन्य है।
भगवत्प्राप्ति के बाद जीव को भगवान वाला अनंत आनंद, अनंत ज्ञान, अनंत जीवन मिल जाता है जिसके कारण जीव भगवत्स्वरूप हो जाता है। इसलिए जीव ही भगवान हैं ऐसा कहा जाता है।

अब जीव और भगवान में अंतर देखिए।
भगवान के जन्म दिव्य होते है, उनको अवतार कहते है। भगवान प्रकट होते है। माँ के पेट में नही जाते है। माँ के पेट में वायु भरकर उसे वैसे ही अनुभव करा देते है, जैसे पेट में बच्चा आने पर संसारी माँ को होती है। आपको पता होगा, वसुदेव देवकी के आगे भगवान पहले शंख, चक्र, गदा, पद्म लेकर प्रकट हुए थे। इतने बडे भगवान क्या देवकी के पेट में रह सकते है? भगवान अपनी इच्छा से इस संसार में आते है और अपनी इच्छा से जाते है। भगवान के कर्म दिव्य होते है। उनको कर्म बंधन नही होता इसलिए उनका कोई प्रारब्ध भी नही होता। उनको कुछ भी पाना शेष नही है। भगवान अपने आप में परिपूर्ण है, इसलिए वे आत्माराम है। सदा आनंदमय रहते है और बाहर से संसारी व्यवहार की एक्टिंग करते

है। उनको किसी से कुछ नही चाहिए। उनके सब कर्म जीव पर कृपा करने के लिए होते है। वे अकारण करूण है। इसलिए बार बार जीवों के कल्याण के लिए अवतार लेकर इस पृथ्वी पर आते है।

जीव के जन्म का मतलब है कि जीव को नये मायिक शरीर में जबरदस्ती डालना। जीव के जन्म प्राकृत होते है। माँ के गर्भ में उल्टा टंगना पडता है। जीव के मृत्यु के समय जीव का शरीर जबरदस्ती छुडवाया जाता है। जन्म तथा मरण के समय जीव को अपार दुःख मिलता है। जिंदगी में मानसिक और शारीरिक दुःख मिलते रहते है। जीव को अपने कर्मों का फल मिलता है जिसे प्रारब्ध के रूप में भोगना पडता है। जीव अनादि काल से सुख की तलाश में है। अपने सुख के लिए ही सब कर्म करता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान मायाधीश है जबकि जीव मायाधीन है। भगवान सबकुछ जानता है, जीव भगवान के अनंत ज्ञान की तुलना में लगभग कुछ भी नहीं जानता। भगवान हर जगह मौजूद है, जीव केवल उसके शरीर में मौजूद हो सकता है। जीव नियंत्रित है जबकि भगवान नियंत्रक है। भगवान प्रकाशक है जबकि जीव उस प्रकाश से प्रकाशित है। भगवान प्रेरक हैं, जबकि जीव प्रेरित है। भगवान कार्यों के परिणाम देता है, जीव को उन परिणामों को भोगना पडता है। भगवान सर्व शक्तिमान है, जबकि जीव अल्प शक्तिमान है। भगवान के इच्छा और संकल्प स्वयंसिद्ध हैं। इसका मतलब है कि उनके सोचने से ही काम हो जाते हैं, कोई भी शारीरिक क्रियाआवश्यक नहीं हैं। जबकि जीव अपनी इच्छा के अनुसार करने के लिए बहुत अधिक संघर्ष करता है और

कई बार वह सफल नहीं होता। भगवान खुशी का अवतार है, जबकि जीव खुशी के लिए संघर्ष कर रहा है। भगवान उत्तेजक है, जबकि जीव को उत्तेजित किया जाता है। भगवान सबसे बड़े से बड़ा है तथा सबसे छोटा से छोटा भी है, जबकि जीव सूक्ष्म है और भी अनेक भेद है। जैसे किसी लक्कड पथ्थर की भगवान से तुलना नही हो सकती वैसे ही जीव की भी भगवान से तुलना नही हो सकती। अतः भगवान और जीव भिन्न हैं।

इस प्रकार,

जीव ही भगवान हैं। (अद्वैत सिद्धांत)

जीव और भगवान भिन्न हैं। (द्वैत सिद्धांत)

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

विरोधाभास: 3
भगवान निर्गुण है।
भगवान सगुण है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान माया से परे है। अन्य सभी माया द्वारा शासित हैं। माया में तीन मुख्य गुण हैं। सात्विक, राजस, तामस। सात्विक आदमी धार्मिक प्रवृत्ती का होता है। दान परोपकार आदि में रूची रखता है।
राजस आदमी जीवन के जायज सुख भोग में लिप्त रहता है ।
तामस आदमी शराब, मांस आदि का सेवन करता है तथा नाजायज सुख भोग में लिप्त रहता है । अपराधी प्रवृत्ती के लोग भी तामसी होते है।

मान लो एक आदमी के पास चार रोटी है, जो वो खाने जा रहा है और कोई भूखा आदमी आता है। तो तामस आदमी कहेगा कि मुझे भी भूख लगी है। ये चारो रोटी मेरी कमाई की है। इसे मैं खाऊंगा। राजस आदमी कहेगा कि आओ दो रोटी तुम खाओ दो रोटी मैं खाऊंगा। सात्विक आदमी कहेगा कि तुम बहुत भुखे लग रहे हो। ये चारो रोटी तुम खाओ, मैं शाम को खा लूंगा। इससे आप तामस, राजस, सात्विक प्रवृत्ती का अंदाजा लगा सकते हो।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

सभी जीवित जीव समय-समय पर इन प्रवृत्तियों से प्रभावित होते हैं। एक प्रवृत्ति जो व्यक्ति पर अधिक हावी रहती है वह एक व्यक्ति के चरित्र का फैसला करती है।

चूंकि भगवान माया से परे है। माया भगवान के पास फटक भी नही सकती। इसलिए माया के ये तीनो गुणों

से भगवान परे है। मतलब ये हुआ कि भगवान इन तीनो गुणों से रहित है। अतः भगवान निर्गुण है।

लेकिन भगवान दिव्य है और उसके पास कई दिव्य गुण हैं। उदाहरण के लिए वह सर्वज्ञानी, सर्वव्यापी, सर्वांतर्यामी, बिना शर्त कृपालु, अकारण करूण है। भगवान के पास अनंत दिव्य गुण हैं। अतः भगवान सगुण है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

इसलिए
भगवान निर्गुण है।
भगवान सगुण है।

भगवान परम स्वतंत्र है।
भगवान क्रित दास है।

भगवान सब को नियंत्रित करता है। भगवान को कोई नियंत्रित नहीं करता। भगवान जो चाहता है वह करने के लिए स्वतंत्र है, जो ना चाहे वह न करने के लिए स्वतंत्र है, जो उल्टा चाहे तो उल्टा करने के लिए स्वतंत्र है। वह जो चाहे वो करने के लिए स्वतंत्र है। उदाहरण के लिए, ईश्वर चाहे तो आँखों से देखता है, ना चाहे तो आँखों से नहीं देखता है। इतना तो हम लोग भी कर सकते है। लेकिन ईश्वर बिना आँखों के देख सकता है (उल्टा कर्म) या ईश्वर आँखों से बात कर सकता है, ईश्वर आंखों से पकड़ सकता है, ईश्वर आंखों से छू सकता है, ईश्वर आंखों से सांस ले सकता है, ईश्वर सभी इंद्रियों की सभी क्रियाओं किसी भी इंद्रिय से कर सकता है। इतनाही नही, ईश्वर बगैर इंद्रियों के भी सब इंद्रियों के कार्य कर सकता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

यह 'अलौकिक करणी' या 'ईश्वर की अकल्पनीय क्रियाएं' है। इस प्रकार ईश्वर कुछ भी करने के लिए या सब कुछ करने के लिए या कुछ भी ना अकल्पनीय तरीकों से करने के लिए स्वतंत्र है। इसलिए ईश्वर परमस्वतंत्र है।

लेकिन भगवान अपने भक्तों के गुलाम हैं। वह कहते हैं, 'यह कहा जाता है कि मैं स्वतंत्र हूं लेकिन वास्तव में मैं अपने भक्त की इच्छा के अनुसार चलता हूं।'

भगवान संतों के गुलाम हैं क्योंकि संत के पास एक शक्ति है - 'दिव्य प्रेम' जो भगवान को बंधन में बांधता है

जिसे भगवान तोड़ नहीं सकते और इसलिए अपने भक्तों की इच्छा के अनुसार व्यवहार करते हैं।

दिव्य प्रेम की साकार स्वरूपा श्रीराधा है। इसलिए भगवान श्रीकृष्ण श्रीराधा की चाकरी करते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

इस प्रकार
भगवान परम स्वतंत्र है।
भगवान क्रित दास है।

भगवान की मर्जी के बिना कुछ नहीं हो सकता
या ईश्वर जीव द्वारा कर्म कराता है।

जीव कर्म करने में स्वतंत्र है और जीव को अपने कर्म का परिणाम भुगतना पड़ता है।

कहा जाता है कि भगवान की इच्छा के बिना किसी भी पेड़ का एक पत्ता नहीं हिल सकता। इससे कई लोग यह तर्क देते हैं कि वे वही करते हैं जो भगवान उन्हें करने की इच्छा रखते हैं, क्योंकि भगवान की इच्छा के बिना कुछ नहीं हो सकता है और सभी प्रकार के गलत सलत काम करते रहते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

बहुत से लोग कहते हैं कि 'हम भगवान की ओर तब चलेंगे जब भगवान चाहेंगे कि हम उनकी ओर चलें।' और गीता को उद्धृत करते हैं, जहां श्रीकृष्ण कहते हैं, 'मैं खुद हर दिल में बसता हूं और मैं सबसे काम करवाता हूं। '

ये मुद्दा सुलझाने के लिए पहले ये समझना होगा कि कर्ता के दो प्रकार है। एक अप्रत्यक्ष कर्ता और एक प्रत्यक्ष कर्ता। पावर हाऊस हमे बिजली देता है। अब उस बिजली का प्रयोग कैसे करना है ये हमारे हाथ में है। यदि कोई पूछे कि पंखा कैसे चलता है? तो जबाब मिलेगा कि पंखा बिजली से चलता है। लेकिन क्या स्विच ऑन किए बिना पंखा चल सकता है? स्विच ऑन करने वाला प्रत्यक्ष कर्ता है और बिजली अप्रत्यक्ष कर्ता है। यदि कोई बिजली का तार पकड कर मर जाता है तो उसे बिजली जिम्मेदार नही है बल्कि पकडनेवाला जिम्मेदार है।

इसी प्रकार ईश्वर हमे चैतन्य शक्ति प्रदान करता है। अतः ईश्वर अप्रत्यक्ष कर्ता है और मन प्रत्यक्ष कर्ता है जो इस चैतन्य शक्ति का इस्तेमाल करके सोचता है। यद्यपि मन को चैतन्य शक्ति द्वारा सोचने के लिए मजबूर किया जाता है, क्या सोचना है ये मन पर निर्भर है। अर्थात, परमेश्वर की चैतन्य शक्ति को केवल मन की इच्छा के अनुसार निर्देशित किया जा सकता है। इसलिए मन कर्म का कर्ता है और कर्म फल भी भोगता है। ये चैतन्य शक्ति एक पल के लिए भी निष्क्रिय नहीं रह सकती। इसलिए मन को अनिवार्य रूप से सोचना पड़ता है और मन की यह सोच वह क्रिया है जो आगे शारीरिक क्रिया में प्रकट होती है। ईश्वर सोचने के अनुसार परिणाम देता है और इसलिए कृष्ण कहते हैं, 'मन ही बंधन और मुक्ति का एकमात्र कारण है।'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

इस प्रकार
भगवान की मर्जी के बिना कुछ नहीं हो सकता
या ईश्वर जीव द्वारा कर्म कराता है।

जीव कर्म करने में स्वतंत्र है और जीव को अपने कर्म का परिणाम भुगतना पड़ता है।

किसी भी साधना द्वारा दिव्य प्रेम अप्राप्य है।
बिना किसी साधना के दिव्य प्रेम प्राप्त नहीं किया जा सकता।

प्रथम ये समझना जरूरी है कि हम भगवान से जो प्यार करते है, उस प्यार से मिलन की तड़पन बढ़ती है। ये मायिक प्रेम है। इसके अधीन भगवान नही रहते। इससे मन शुद्ध होता है। उस शुद्ध मन को दिव्य बनाकर उस में दिव्य ईश्वरीय प्रेम डाला जाता है। इस दिव्य ईश्वरीय प्रेम के अधीन भगवान रहते है। इसी प्रेम के बल गोपियाँ भगवान को नचाती थी।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

ये ईश्वरीय प्रेम ईश्वर की एक व्यक्तिगत शक्ति है।
भगवान की कई शक्तियों में से, तीन सबसे महत्वपूर्ण हैं। जीवन(सत) , ज्ञान(चित)और आनंद(ह्लादिनी)।

ह्लादिनी का सार ईश्वरीय प्रेम है। दिव्य होने के नाते, यह अनंत परिमाण का है। यह इतना स्पष्ट है कि किसी भी चीज का आदान-प्रदान करके इसकी मांग नहीं की जा सकती है। जीव के पास सभी परिमित और भौतिक संपत्ति हैं। दिव्य प्रेम पाने के लिए क्या पेशकश की जा सकती है?

भौतिक मन द्वारा जो भी अभ्यास किया जाता है, वह असीम प्रेम नहीं ला सकता है। परिमित हमेशा परिमित तक ही जोड़ देगा। भगवान का प्रेम अपरिमित होता है। कोई भी परिमित तथा मायिक वस्तु अपरिमित तथा दिव्य वस्तु का मुल्य नही हो सकती। इसलिए भौतिक अभ्यास दिव्य प्रेम के लिए मूल्य नहीं हो सकता।

इसलिए ईश्वर प्रेम केवल ईश्वर की कृपा से ही प्राप्त किया जा सकता है और किसी भी प्रकार की साधना से दिव्य प्रेम प्राप्त नही किया जा सकता। इसलिए पहला कथन, किसी भी साधना द्वारा दिव्य प्रेम अप्राप्य है।

यदि ऐसा है तो दिव्य प्रेम किसी को भी स्वतंत्र रूप से उपलब्ध होना चाहिए लेकिन ऐसा नहीं है। आध्यात्मिक अभ्यास बहुत जरूरी है। अभ्यास दिव्य प्रेम नहीं लाएगा, लेकिन मन को शुद्ध करने के लिए अभ्यास आवश्यक है। भगवान की भक्ति के माध्यम से निरंतर आध्यात्मिक अभ्यास से ही मन को साफ किया जा सकता है। एक बार जब मन 100% शुद्ध हो जाता है, तो इसे दिव्य रूप में बदल दिया जाता है और फिर ईश्वर और संत की कृपा से दिव्य प्रेम उपलब्ध होता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

इस प्रकार
किसी भी साधना द्वारा दिव्य प्रेम अप्राप्य है।
बिना किसी साधना के दिव्य प्रेम प्राप्त नहीं किया जा सकता।

ईश्वर अकर्ता है।
ईश्वर कर्ता है।

हमें पता है कि किसी भी कार्रवाई के पीछे एकमात्र मकसद खुशी की तलाश है। ईश्वर वह सुख है जो शाश्वत और अनंत है। हर कोई उसे चाहता है। वह क्या चाहेगा? चूंकि उसके पास हासिल करने के लिए कुछ नहीं है, इसलिए वह कुछ नहीं करता। जीव सुख चाहता है और इसलिए जीव सब कुछ करता है, भगवान नहीं। इसलिए ईश्वर अकर्ता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

लेकिन भगवान में कई दिव्य गुण हैं। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण अकारण करुणा है। भगवान अकारण करुणा से अपने गर्भ से इस ब्रह्मांड का निर्माण करते हैं ताकि जीव जो अभी तक सच्चे अर्थों में खुशी प्राप्त करने में असफल रहे है उसी की तलाश करने की कोशिश करेंगे। इसलिए भगवान सृष्टीकर्ता है।

यदि असीम सुख की तलाश नहीं है तो विकल्प क्या है? भौतिक सुख की तलाश करना। भौतिक सुख अपने गुण से कभी पूरा नहीं होता। भौतिक सुख हमेशा कमी महसूस होती है। पूर्ण संतुष्टी कही नही है। कही ना कही आपको मानसिक या शारीरिक दुःखों का सामना करना पडता है। किसी भी भौतिक सुख की तलाश के लिए हर जीव को पहले के जीवन में कई कष्टों से गुजरना पड़ता है। इसका मतलब है कि खुश होने से पहले कष्ट होते हैं और फिर खुशी की तलाश की जाती है और फिर यह खुशी गायब हो जाता है और फिर से दुख मिलता है। यही कारण है कि जीव को मृत्यु और जन्मों के अनंत चक्रों से गुजरना पड़ता है।

दिव्य सुख अनंत मात्रा का होता है जो कभी खतम नही होता। जीव तो कभी मरता ही नही। अज्ञानतावश शरीर को मैं मानने के कारण हमे जन्म, मृत्यु तथा अगनित अनंत कष्ट सहन करने पडते है। दिव्य सुख का अनुभव करने के लिए जीव को दिव्य मन एवं दिव्य शरीर दिया जाता है, जिससे दिव्य भगवान के साथ वैसे ही प्यार का व्यवहार किया जाता है जैसे इस दुनिया हम अपने प्रेमी के साथ अलिंगन, नृत्य, प्यार भरी मुलाकते, बाते, हास परिहास आदि करके उनको रिझाते है, उनकी सेवा करते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

दया से युक्त होकर भगवान जीव को करोडो कल्प में एक बार मानव रूप में जीव को भेजकर असीम खुशी प्राप्त करने का मौका देता है। और फिर उसकी हर क्रिया का रिकॉर्ड रखता है और आगे चलकर हर क्रिया का परिणाम देता है।

इस प्रकार परमेश्वर दूसरों के सुख लिए कई कार्य करता है इसलिए वह कर्ता है।

ईश्वर अपने सुख के लिए कुछ भी नहीं करता इसलिए वह अकर्ता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

प्रथम भक्ति।
प्रथम वैराग्य।

एक तर्क हैं कि वैराग्य के बिना कोई भक्ति नहीं हो सकती। यह सही लगता है। हम भक्ति का अभ्यास क्यों नहीं कर रहे हैं? सीधा जवाब है कि हमारा मन इस दुनिया में फँसा हुआ हैं। माँ, बाप, भाई, बहन, स्त्री, पति, पैसा, प्रतिष्ठा इत्यादि के लिए कही प्यार कही दुश्मनी कही लोभ आदि भावनाओं से इस दुनिया में लगाव उत्पन्न होता है। इसलिए हमारा दिमाग इस दुनिया के बारे में सोचता रहता है और जाहिर है कि मन भगवान के बारे में नहीं सोच सकता। जब तक मन इस दुनिया से बाहर नही आएगा तब तक भक्ति नही हो सकती। इस प्रकार वैराग्य के बिना भक्ति संभव नहीं है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

दूसरा तर्क हैं कि भक्ति के बिना वैराग्य नहीं हो सकता। यह भी सही लगता है। हमारे पास विरक्ति क्यों नहीं है? क्योंकि हमारा मन अशुद्ध है। मन जितना अधिक अशुद्ध होगा, उतना ही अधिक इस दुनिया के लिए रूचि होगी। वैराग्य का मतलब इस दुनिया के लिए अरूचि होना। इसलिए स्वाभाविक रूप से वैराग्य नही होगा। मन कैसे शुद्ध हो? केवल भक्ति के माध्यम से। भक्ति से मन शुद्ध होगा तो इस दुनिया के लिए अरूचि होगी। इस प्रकार भक्ति के बिना वैराग्य नहीं हो सकता।

प्रथम बीज कि प्रथम पेड़ के इस पहेली को कैसे हल करें? जवाब है कि भक्ति और वैराग्य एक साथ होता है। श्रीकृष्ण ने गीता में सुझाव दिया है, ' अभ्यास के साथ वैराग्य कुंजी है।' अभ्यास ये कि भगवान में मन लगाने के लिए प्रयास करना।

एक तराजू के संतुलन पर विचार करें जो एक तरफ भारी है। एक पलड़े में वजन बहुत अधिक है। एक व्यक्ति भारी पलड़े से कुछ हिस्सा निकाल कर हल्के पलड़े में डाल देता है। भारी पलड़ा उतनी ही हद तक हल्का हो जाता है जितना हद तक हल्का पलड़ा भारी हो जाता है। इस प्रकार डिटेचमेंट को उस हद तक विकसित होती है जिस हद तक मन को भगवान में लगाया है। भक्ति प्रेम है। वैराग्य और ज्ञान भक्ति के पुत्र हैं और इसलिए वे भक्ति करने पर अपने आप हो जाएंगे। कोई अलग प्रयास की जरूरत नहीं है। भक्ति को किसी और चीज से किसी भी समर्थन की आवश्यकता नहीं है। जब प्रकाश प्रवेश करता है, अंधेरा गायब हो जाता है। दोनों घटनाएँ एक साथ होती हैं। उसी तरह, जितनी भक्ति मन में लाया उतना ही भौतिक लगाव खत्म हो गया, मतलब उतना ही वैराग्य हो गया। दोनों एक साथ होते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भौतिक शक्ति माया का भगवान के बिना अस्तित्व नही है।
भौतिक शक्ति माया भगवान के आसपास नही फटक सकती।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

माया भगवान की दैवी शक्ति है। शक्ति शक्तिमान के बिना अस्तित्व में नही रह सकती। जैसे लोहे को खींचना ये चुंबक की शक्ति है, वो बगैर चुंबक के अस्तित्व में नही रह सकती। चुंबक है तो चुंबकत्व है। इसी प्रकार भौतिक शक्ति माया का भगवान के बिना अस्तित्व नही है।

लेकिन माया तो दुःखदायिनी है। हम लोग दुःखी है क्योंकि हम माया के प्रभाव में है। माया जीवों को पीड़ित करती है। पीड़ा देना भगवान का गुणधर्म नहीं है। भगवान तो सुख स्वरूप है। उनको पाकर जीव अनंत जीवन, अनंत ज्ञान, अनंत आनंद का उपभोग करता है। माया जड़ शक्ति है जबकि भगवान चैतन्य है। ये कैसे संभव है? हमारा सिर चेतन है। उसमें मारो तो लगता है। लेकिन उससे जो बाल निकलते है वो जड़ होते है। उनको काट दो तो कोई दर्द नही होता। जब चेतन सिर से जड़ बाल का अस्तित्व है तो चेतन भगवान से जड़ माया का अस्तित्व क्यों नही हो सकता?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

हम पानी में सूरज के प्रतिबिंब देखते हैं। इस प्रतिबिंब का सूर्य के बिना अस्तित्व नहीं हो सकता। लेकिन सूर्य के गुणधर्म अपने प्रतिबिंब में मौजूद नहीं है। ऐसेही हर जगह भगवान व्याप्त होते हुए भी माया के परदे के कारण हमें भगवान के सुख का अनुभव नही हो सकता। सूर्य का प्रतिबिंब सूर्य के अंदर नही घूस सकता। सूर्य का प्रतिबिंब सूर्य से हमेशा दूर ही रहता है। इसी तरह

भौतिक शक्ति माया भगवान के बिना काम नहीं कर सकती लेकिन माया भगवान से दूर ही रहती है।
भगवान के लोक में शाश्वत और अनंत आनंद है, वहा माया प्रवेश नही कर सकती।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

इस प्रकार
भौतिक शक्ति माया का भगवान के बिना अस्तित्व नही है।
भौतिक शक्ति माया भगवान के आसपास नही फटक सकती।

भगवान को नहीं जान सकते।
भगवान को जान सकते है।

जो लोग ये सोचते हैं कि भगवान को जान सकते है, वे कुछ नहीं जानते। जो लोग सोचते हैं कि भगवान को जाना नहीं जा सकता, वे सबकुछ जानते है। मतलब भगवान को कोई नही जान सकता। क्यों? इसलिए कि भगवान दिव्य है और हमारी इंद्रिय, मन, बुद्धी प्राकृत है। अब हम जानते है कि भगवान अनंत असीम शाश्वत आनंद है, जबकि हमारी इंद्रिय, मन, बुद्धी सीमित विषय ही ग्रहण कर सकती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

आगे 'मन इंद्रियों की पहुंच से परे है। बुद्धि तक पहुंच मन से परे है। आत्मा बुद्धि की पहुंच से परे है। माया आत्मा से परे है और भगवान माया से परे है।' इस प्रकार बुद्धि भगवान तक पहुंचने में सक्षम नहीं है। और हमारे लिए ज्ञान इकट्ठा करने वाला एकमात्र उपकरण बुद्धि है। इसलिए जो कुछ बुद्धि की क्षमता से परे होगा, उसे हम नही समझ सकते। जिसका अर्थ है कि हम कभी भी भगवान के ज्ञान को प्राप्त करने में सफल नहीं हो सकते।

लेकिन अनादि काल से अनंत जीवों ने भगवान का ज्ञान प्राप्त किया है। यह कैसे संभव है? शास्त्रों का कहना है, 'केवल भगवान भगवान को देख सकते हैं। अर्थ ये कि केवल भगवान की आंखें भगवान को देख सकती हैं '। भगवान की आंख हमारी तरह माया से नही बनती। भगवान के शरीर का हरएक अंग भगवान स्वयं होते है। भगवान हरएक अंग दिव्य होता है। यानी कि भगवान के हरएक रोम में भगवान की सब शक्तियाँ विद्यमान होती

है। इसलिए श्रीकृष्ण के हरएक रोम से अनंत आनंद अनुभव में आता है। उनके भगवान में शरीर एवं शरीरी का भेद नही होता। हम लोगों का शरीर तथा आत्मा भिन्न होती है। शरीर में आत्मा रहती है। लेकिन भगवान की आत्मा और भगवान का शरीर एक होता है। उसमें भेद नही होता।

इसी तरह दिव्य कान दिव्य ईश्वर के दिव्य शब्द सुन सकते है। दिव्य नाक से भगवान की दिव्य सुगंध मिल सकती है। दिव्य त्वचा ही दिव्य भगवान को छू सकती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

जिन लोगों ने दिव्य भगवान को देखा वो इसलिए कि लिए संभव था कि भगवान ने अपनी अकारण करूणा से कृपा कर उन्हें दिव्य बुद्धि, दिव्य मन और दिव्य शरीर, दिव्य इंद्रियों से अनुग्रहित किया था। प्राकृत इंद्रिय, मन, बुद्धी से भगवान को जानना संभव नही है। लेकिन दिव्य इंद्रिय, मन, बुद्धी से भगवान को जाना जा सकता है।

इस प्रकार
भगवान को नहीं जान सकते।
भगवान को जान सकते है।

आप एक सच्चे संत के माध्यम से ही दिव्य प्रेम प्राप्त कर सकते हैं।
आपको दिव्य प्रेम तभी मिल सकता है, जब आपके पास वैराग्य हो।

ईश्वरीय प्रेम एक ऐसी चीज है जो अपने आप नही विकसित होती। ये दिव्य प्रेम भगवान की अंतरंग शक्ति है जिसके वशीभूत होकर भगवान खुद रहते है। दिव्य जगत की हरएक वस्तु चेतन होती है। इस दुनिया में आनंद, प्रेम आदि का कोई रूप या शकल नही होती। सब भावनाएँ बस एक अनुभूती होती है। लेकिन दिव्य जगत में सब चेतन होने से सबका रूप होता है। भगवान खुद दिव्यानंद की मूर्ति है। उनके शरीर का एक एक अंग दिव्यानंद से ही बना है। उनके शरीर में हमारे जैसे मायिक हड्डी, मांस, मल, मुत्र, खून आदि नही हुआ करता। तुलसीदास कहते है भगवान की देह 'चिदानंदमय' है। मतलब ये कि भगवान की आँख किससे बनी है? दिव्यानंद से। भगवान की बाल किससे बने है? दिव्यानंद से। भगवान की होठ किससे बने है? दिव्यानंद से। भगवान की हरएक इंद्रिय किससे बनी है? दिव्यानंद से। भगवान का संपूर्ण शरीर किससे बना है? दिव्यानंद से। भगवान और दिव्यानंद पर्यायवाची शब्द है। भगवान में आनंद है ऐसा कहने के लिए ठीक है लेकिन असलियत ये है कि भगवान ही आनंद है और आनंद ही भगवान है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

इसी प्रकार श्रीराधा दिव्य प्रेम की मूर्ती है। श्रीकृष्ण दिव्य प्रेम के वशीभूत होकर रहते है यानी श्रीकृष्ण श्रीराधा के वशीभूत होकर रहते है। इसी दिव्य प्रेम के कारण श्रीकृष्ण गोपियों की ओर आकर्षित होकर महारास

आदि करते है। शुद्ध अंतःकरण को दिव्य बनाने के बाद ये दिव्य प्रेम महापुरूष द्वारा अंतःकरण में डाला जाता है। जीव को अनंत प्यार एवं अनंत आनंद दोनो चाहिए इसलिए राधाकृष्ण दोनों की उपासना बतायी जाती है।

संत का चयन सबसे महत्वपूर्ण है। हम कई उदाहरणों को सुनते हैं जहां भोले लोगों को नकली संतों द्वारा धोखा दिया जाता है। इस समस्या से निपटने के लिए वास्तविक संत के बारे में शास्त्रों के अनुसार दोहरी जाँच करना चाहिए। मूर्ख लोग शास्त्र की बात नही मानते और हर भगवाधारी व्यक्ति को वास्तविक संत मान लेते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में ऐसे नकली संतों के खिलाफ कडी चेतावनी दी हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

यह ध्यान रहे कि वास्तविक संत को सब शास्त्रों का ज्ञान होना चाहिए। इस तरह के ज्ञान के बिना किसी को वास्तविक नहीं मानना चाहिए।

आप देखेंगे कि कुछ लोग वास्तविक संतों की ओर आकर्षित होते हैं और सभी नहीं। इसके पीछे का कारण शुद्ध हृदय है जिससे इस दुनिया के लिए वैराग्य होता है। अगर वैराग्य नहीं है, तो आपको ऐसी किसी भी बात सुनने के लिए दिलचस्पी नहीं होगी जो एक वास्तविक संत करेंगे, क्योंकि आपका मन सांसारिक मामलों में अधिक रुचि रखता है और ये सांसारिक मामले आपके दिमाग पर पूरी तरह से कब्जा कर लेते हैं और आध्यात्मिक विचारों के लिए कोई जगह नहीं बचती है।

इसलिए यह कहा जाता है कि
आप एक सच्चे संत के माध्यम से ही दिव्य प्रेम प्राप्त

कर सकते हैं।
आपको दिव्य प्रेम तभी मिल सकता है, जब आपके पास वैराग्य हो।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान सबसे निकट है।
भगवान सबसे दूर है।

अब तक हम ये देख चूके है कि भगवान सब जगह समान रूप से व्याप्त रहते है। सब के हृदय में भी वही भगवान का निवास है। अगर ये बात कोई मान ले तो और हर समय रियलाइज करे तो भगवत् प्राप्ती फ्री में हो जाएगी। हर वक्त जहा भी नजर जाए वहा भगवान है ये दिमाग में बैठ जाए तो कुछ साधना, आरती आदि करने की जरूरत ही नही है। ऐसा नही है कि आप मानेंगे तो वहाँ भगवान है, आप माने चाहे ना माने भगवान तो सब जगह व्याप्त है ही। जैसे किसी पागल व्यक्ति अपने ही माँ, बाप आदि को नही पहेचानता है उसी प्रकार हम संसारी वस्तुओं एवं संसारी व्यक्तिओं के पीछे पागल होने के कारण हम सर्वव्यापक भगवान को नही पहेचान रहे है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान हमारे इतने नजदीक है कि जिस प्रकार हमारा शरीर आत्मा के कारण चेतन रहता है उसी प्रकार जीव स्वयं भगवान के चैतन्य से चेतन है। मतलब जीव या आत्मा भगवान का शरीर है और भगवान हमारे आत्मा की आत्मा है। इसी कारण भगवान सब आत्माओं की आत्मा यानी परमात्मा है।

जैसे हमारे मन, इंद्रिय, शरीर आत्मा के सुख के लिए सेवा करते है, वैसे ही भगवान की सेवा करना ये आत्मा का सहज स्वभाव है। ईसलिए निष्काम प्रेम प्राप्त कर भगवान के सुख के लिए भगवान की सेवा करना ही जीव का परम चरम लक्ष्य है। आत्मा का चैतन्य भगवान के चैतन्य से है इसलिए भगवान को चेतन का चेतन

कहते है। जीव भगवान के भीतर रहता है। जर सी भी दूरी नही है। जीव सूक्ष्म है तो जीव में व्याप्त भगवान सूक्ष्मतर है। भगवान सबसे छोटे से छोटा है। भगवान सूक्ष्म इंद्रिय, मन, बुद्धी में व्याप्त होकर सब मानसिक कर्म नोट करता है एवं उसके अनुसार फल देता है। जीव कर्म करने में स्वतंत्र है लेकिन फल भोगने में परतंत्र है। कर्मों का फल भोगना ही पडता है। ईसलिए कर्म करते समय सावधान रहे। गलत कर्म से बचें प्लस भगवान में मन लगाने का अभ्यास करें। तो इस प्रकार भगवान सबसे निकट है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

लेकिन जीव अनादि काल से शाश्वत सुख पाने के लिए प्रयत्नशील है फिर भी अब तक असफल रहने से वह चौरासी लाख योनियों में जन्म मृत्यु एवं अन्य दुःखों को सहता हुआ चक्कर काट रहा है। मतलब ये कि जीव अनंत काल से भगवान (आनंद) को हर क्रिया में ढूंढ रहा है यानी भगवान की ओर चल रहा है लेकिन अभी तक भगवान के निवासस्थान अनंत जन्मों में भी नहीं पहुंचा है। इसका कारण ये है कि भगवान निकटतम होने के बावजूद हम लोग गलत रास्ते पर होने से भगवान के आसपास भी नही पहुँच सके है। इसके अलावा भगवान विरोधी धर्मों का अधिष्ठान होने से भी हमारी बुद्धी में नही आ सकता।

हमने देखा कि भगवान सबसे छोटे से छोटा है। इसके साथ भगवान सबसे बड़े से बड़ा भी है। भगवान सबसे बड़े ब्रह्मांड से बड़ा है। क्योंकि सभी ब्रम्हांडों को विश्व के अंतिम दिन महाप्रलय में नष्ट कर भगवान के महोदर में लीन किया जाता है।

इसके अलावा भगवान कानों के बिना सुनता है, वह बिना आंखों के देखता है, बिना हाथों के पकडता है, बिना मुख के खाता है, बिना नाक के सुँघता है, बिना पैरों के चलता है, बिना त्वचा के छूता है, बिना मन के सोचता है इत्यादि। इतना ही नही भगवान एक इंद्रिय के भी सारे इंद्रियों के काम करता है। जैसे भगवान आंख से देखता है, सुनता है, सुँघता है, खाता है, चलता है, पकडता है, छूता है, सोचता है इत्यादि। ये सब हमारी बुद्धी नही समझ सकती इसलिए हम भगवान को प्राप्त करने में असफल रहे है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान को पाने के लिए अनादि काल से प्रयत्नशील होने पर भी हम भगवान तक नही पहुँच सके है, इसलिए भगवान दूर से भी दूर है।

इस प्रकार

भगवान सबसे निकट है।
भगवान सबसे दूर है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान अकारण करूण है यानी बिनशर्त कृपा करते है।
भगवान की कृपा की शर्त शरणागती है।

कृपा शब्द का अर्थ है कि बगैर कोई बदले में लिए दूसरे का उपकार करना। हमारे पास जो भी शरीर आदि सब है, भगवान का ही दिया हुआ है। बदले में भगवान को हमने क्या दिया? कुछ दे भी नही सकते। इसलिए भगवान की हम पर अनंत कृपा है। उसकी कृपा का कोई ओर छोर नही है। वैसे देखा जाय तो जो भी हो रहा है, अच्छा या बुरा, भगवान की कृपा है। लेकिन कुछ मोटी कृपा देखते है। पहली कृपा उसने इस ब्रह्मांड का निर्माण हमारे लिए किया। लेकिन आप सोच सकते हैं कि हमको इससे क्या लाभ?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

दूसरी कृपा उसने हमारे लिए सभी आवश्यक वस्तुओं को उपलब्ध कराया है, ताकि हम जीवित रह सकें। तथा विश्व के प्रत्येक कण में व्याप्त हो गया ताकि ब्रह्मांड सुचारू रूप से चल सके। आप कहेंगे , 'अगर उसने ब्रह्मांड बनाया है तो उसे चलाना तो पडेगा ही।'

अगली कृपा ये की भगवान ने हमें मनुष्य जन्म दिया। वह प्रत्येक जीव के मन में एकाउंटेंट की अवैतनिक नौकरी करने के लिए बैठे - कर्मों का हिसाब रखना और उसके अनुसार फल देना। आप कहेंगे 'लेकिन हम इस कार्रवाई के कारण भी पीड़ित हैं क्योंकि पाप कर्मों का दंड भोगना पड़ता है।'

लेकिन केवल मनुष्य जन्म मिलने से क्या लाभ? हमें पता तो चले कि हम कौन है? हम क्या चाहते है? वो कैसे मिलेगा? इसलिए अगली कृपा यह है कि भगवान इस धरती पर कई बार आये और हमें समझाया कि क्या किया जाना चाहिए, जिससे हमारे कष्ट समाप्त हो और हमें परमानंद मिल जाय। यदि वह पर्याप्त नहीं था, तो उसने अपने जनों को यानी संतों को भेजा - संतों ने हमें

मानव जीवन का अर्थ समझाया। हमारे दुःखों का मूल कारण बताया कि हम अनंत सुखसागर भगवान को भुलकर इस दुःखमय संसार में वो शाश्वत सुख ढुंढ रहे है जो इस संसार में है ही नही। जैसा प्यार हम इस संसार से कर रहे है वैसा ही प्यार हमें भगवान से करना है। प्यार का तरीका एक ही है, बस संसार की जगह भगवान को अपना मानना है। आप कहते हैं, 'हमें संतों और उनके उपदेशों में कोई दिलचस्पी नहीं है'।

फिर भगवान क्या कर सकते हैं? अगर किसी एक सच्चे संत द्वारा निर्देशित मार्ग का पालन करते हैं तो दिल के पूर्ण शुद्धिकरण पर सभी पीड़ाओं और मृत्यु से छुट्टी पाकर और उसे अनंत और शाश्वत खुशी प्राप्त कर लेते। यह सबसे बड़ी कृपा है।

इस कृपा के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए हमें भगवान की शरणागती स्वीकार करनी पडेगी। इसका मतलब भगवान की कृपा का मूल्य है। जी नही। शरणागती का अभिप्राय यह है कुछ न करना। मन एक है उसे या तो जीव कंट्रोल करे या भगवान। मन पर नियंत्रण रखना जीव के बस का है ही नही तो जीव अपने मन का कंट्रोल भगवान के हाथ में देता है। जीव भगवान के शरणागत मात्र रहता है। तो भगवान मन की कमीयों को निकालकर , उसे शुद्धकर, उसे दिव्य बनाकर उसमें अनंत दिव्यानंद भरकर जीव को सदा के लिए मालामाल कर देते है।

अतः दोनो कथन सही है
भगवान अकारण करूण है यानी बिनशर्त कृपा करते है।
भगवान की कृपा की शर्त शरणागती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भागवत में सभी दिव्य रसों के रससमूह के सर्वोत्तम रस का वर्णन किया है जिसे महारास कहते है।

ईशवरीय क्षेत्र में अनंत मात्रा का पराकाष्ठा का आनंद तो निर्गुण निराकार में ब्रम्हलीन परमहंसों को ही मिल जाता है। इसके आगे सगुण साकार भगवान का अनंत मात्रा का आनंद है जिसमें रस की गुणवत्ता विशेष होती है। सगुण साकार भगवान की उपासना पाँच भावों से की जाती है जिसमें उत्तरोत्तर रसवृद्धी होती है वे है- शांत भाव -भगवान हमारे राजा हम उनकी प्रजा, दास्य भाव -भगवान हमारे स्वामी हम उनके दास, सख्य भाव -भगवान हमारे सखा हम उनके सखा , वात्सल्य भाव-भगवान हमारा पुत्र हम उनकी माँ या पिता, माधुर्य भाव-भगवान हमारे प्रियतम हम उनकी प्रेयसी।

शांत भाव रसिकों को मान्य नही है क्येंकि राजा प्रजा का नाता बहुत दूरी का है। ये योगीओं का भाव जो परमात्मा का ध्यान करते है तथा अंत में वैकुंठ लोक में चार भुजा वाले भगवान विष्णु के कवल दर्शनमात्र का सुख अनंत काल तक प्राप्त करते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

दास्य भाव का सुख हनुमान जी का है जिसमें स्वामी के सेवा का रस मिलता है। सख्य भाव में सखा लोग भगवान के साथ खेलने का, एकसाथ खाना खाने का आदि मैत्री का रस प्राप्त करते है। वात्सल्य भाव यशोदा मैय्या का है जो भगवान को उखल में बांधकर पतले दंडे से डराती है तथा उनकी बाल लीलाओं का रस प्राप्त करती है। माधुर्य भाव प्रियतम प्रेयसी का रस है। इसमें भी तीन कक्षाएँ है। साधारणी रति अपने विषय सुख के लिए श्रीकृष्ण से प्यार करती है जैसे कुब्जा। समंजसा रति कुछ श्रीकृष्ण के सुख के लिए तो कुछ अपने सुख के लिए प्यार करती है जैसे द्वारिका में श्रीकृष्ण की रानीयाँ। समर्था रति केवल श्रीकृष्ण के सुख के लिए ही प्यार करती है जैसे ब्रज की गोपियाँ।

केवल समर्था रति की ब्रज गोपियों को ही महारास का रस मिला।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

श्रीकृष्ण के अवतार काल में ब्रज में वे सब गोपी बनकर आए थे जिन्होंने पूर्व जन्मों में माधुर्य भाव से साधना कर रास में सम्मिलित होने का अधिकार प्राप्त कर लिया था। कई प्रकार की गोपियाँ थी। एक तो वे जो अनादि काल से कभी माया के प्रभाव में रही ही नही, जैसे ललिता, विशाखा आदि। दूसरे वे जो अनादि काल से माया के प्रभाव में थी लेकिन साधना कर एक दिन गोलोक गयी थी। ये दोनों प्रकार की गोपियाँ गोलोक से आयी थी। थर्ड क्लास की गोपिया वेद की ऋचाएँ थी। तथा अन्य गोपियाँ वे थी जो पहली बार रास के रस का आस्वादन करने जा रही थी। दंडकारण्य के ऋषी मुनी थे जो भगवान राम की ओर काम भाव से आकर्षित हुए थे। उन्हे भगवान राम ने कृष्णावतार में इच्छापूर्ती का वरदान दिया था। अग्निपुत्र थे। जनकपुर की सीता की सेविकाएँ थी। ये सब गोपी बन बन कर आये थे।

रास के एक साल पूर्व गोपियों ने श्रीकृष्ण को पती रूप में पाने की इच्छा से कात्यायनी व्रत रखा था। उस समय तथा चीरहरण के प्रसंग में गोपियों को श्रीकृष्ण ने ब्रम्ह रात्रियों में महारास का वरदान भी दिया था।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

यहा ये समझना महत्वपूर्ण है कि ईश्वरीय जगत की हरएक चीज चेतन होती है। वहा जड माया का प्रवेश नही है। वहा की धरती, आकाश श्रीकृष्ण खुद बने है। इसलिए वहा की धूल में भी वही आनंद मिलता है जो श्रीकृष्ण में है।

श्रीकृष्ण और उनकी सहयोगी गोपियों द्वारा इस पृथ्वी पर इस दिव्य महारास का प्रदर्शन इसलिए किया गया की माया के प्रभाव में रहने वाले जीवों के मन में ये विश्वास पैदा हो कि भगवान हमसे भी प्यार करेंगे तथा हम भी एक दिन रास रस का आस्वादन कर सकेंगे।

एक साल बाद वो रात्रियाँ श्रीकृष्ण के सामने प्रकट हो गयी और

याद दिलाया कि आपने गोपियों को एक साल पूर्व रास का वरदान दिया था। ये रात्रियाँ ब्रम्हा के एक दिन के बराबर थी। जिसकी कालावधी चार अरब साल से भी अधिक होती है। श्रीकृष्ण ने कहा हा दिया तो था। तब श्रीकृष्ण ने सर्व प्रथम मन बनाया और सोचने लगे कि अब रास का प्रबंध कैसे हो?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

एक ब्रम्हरात्र की कालगणना कैसे होती है?

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं, 'इस दुनिया के अंत में सभी जीवित प्राणी मेरे भीतर समा जाते हैं। मैं उन्हें अगली दुनिया (कल्प) में बाहर निकालता हूं। ' जिसका अर्थ है कि कोई नया सृजन नहीं है। प्रलय के पहले जिस अवस्था में जो जीव थे, उसी अवस्था में उन जीवों को प्रलय बाद नया जीवन मिलता है।

श्रीकृष्ण विश्व व्यवस्था के जीवनकाल को एक कल्प के बराबर बताते हैं। यह क्या है? एक चक्रीय समय में चार युग हैं। उन्हें सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग है। कलियुग के बाद फिर से सतयुग आता है और चक्र दोहराता है। कलियुग का समय अवधि 4,32,000 साल है। द्वापरयुग जो कलियुग से पहले है कलियुग का दोगुना यानी 8,64,000 साल है। त्रेतायुग कलियुग का तीनगुना यानी 12,96,000 साल तथा सतयुग कलियुग का चारगुना यानी 17,28,000 साल है। इन चार युगों की अवधि कुल 43,20,000 साल बनती हैं। चार युगों के इस चक्र को एक महायुग कहा जाता है। 71 महायुग का एक मन्वंतर बनाता हैं । संधीकाल को लेकर 14 ऐसे मन्वंतर ब्रह्मा का 1 दिन हैं जो 4,32,00,00,000 साल है जिसे एक कल्प कहते है। इतनीही बडी ब्रम्हा की एक रात है। दिन और रात मिलाकर हुए 8,64,00,00,000 साल। इस दिन रात के हिसाब से ब्रह्मा का जीवन काल 100 साल है। यानी 8,64,00,00,000×360×100 =31,10,40,00,00,00,000 साल। 31 नील 10 खरब, 40 अरब साल।

अब 7 वे मन्वंतर के 28 वे महायुग का कलियुग चल रहा है। इसका मतलब विश्व की आयु करीब 1,97,12,21,117years साल है - 2 अरब साल।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

एक कल्प के बाद के विनाश को प्रलय कहा जाता है। तथा इस

ब्रह्मा के जीवन काल की समाप्ती पर होने वाले प्रलय को महाप्रलय (कुल विनाश) कहा जाता है। महाप्रलय के बाद, अकेले भगवान अस्तित्व में रहते हैं और सब जीव भगवान के अंदर या भगवान के पेट में सूक्ष्म रूप में रहते है।

ये समय अनुमान वास्तव में बहुत बड़े हैं लेकिन वे अनंत की तुलना में कुछ भी नहीं हैं। फिर सौ साल के मानव जीवन के बारे में क्या बात करनी है? यह बहुत ही छोटा है। यदि मानव जीवन मायिक इंद्रिय सुख, कुटुंब पालन, पैसा, प्रतिष्ठा, सत्ता के लिए व्यतित किया तो कई कल्प तक पुनः मानव जन्म नही मिलने वाला। इसलिए इस मनुष्य जन्म में अपना कर्तव्य पालन करते हुए भगवत् विषय में समय व्यतीत करना चाहिए। अनन्त आनंद प्राप्त करके मौत और अन्य पीड़ाओं से छुटकारा पाने के अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना चाहिए।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

रास शुरू करने के लिए श्रीकृष्ण ने रास की अधिष्ठात्रि देवी श्रीराधा की प्रार्थना की। राधा के लिए भागवत में इस जगह पर योगमाया शब्द आया है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

शरद ऋतु की पूर्णिमा को वृंदावन के सेवाकुंज में रास का आयोजन हुआ। उपवन में छे ऋतुओं के फुल खिल गये। उन फुलों की खुशबू से सारा आसमंत महक उठा। बारा घंटे की रात में जीवों की क्या तृप्ती होगी? इसलिए जैसा पहले बताया गया रास एक ब्रम्हरात्री यानी चार अरब बत्तीस करोड वर्ष तक चला। इतने लंबे समय तक योगमाया ने जो रास में सम्मिलित होने के अधिकारी नही थे उन सबको गहरी नींद में सुला दिया। इतना ही नही योगमाया ने जो गोपियाँ रास में गयी थी उनकी जगह पर वैसेही शकल एवं शरीर का देह बनाकर लेटा दिया।

अब सवाल था कि गोपियों को कैसे बुलाया जाए? फिर से योगमाया की मदद से श्रीकृष्ण ने ऐसी दिव्य आवृत्ति की मुरली छेडी जिसे केवल उन गोपियों का अंत:करण पकड पाया जो उस ध्वनी को पकडने में सक्षम था। मतलब ये कि वो मुरली धुनी केवल उनको सुनाई पडी जो रास के अधिकारी जीव थे। ये मुरली ध्वनी कैलाश तक गयी जहा शंकरजी को उनकी समाधी में घुसकर रास संदेश दिया लेकिन पास के नंद, यशोदा, गोप आदि लोगों को नही सुनाई दी। वे अपना सोते रहे। आपको पता होगा कि शांत, दास्य, सख्य, वात्सल्य भाव के लोगों को रास नही मिला। माधुर्य भाव में भी मथुरा कि कुब्जा या द्वारिका की रानीयाँ आदि को रास नही मिला क्योंकि उनका प्रेम स्वसुख कामना मिश्रीत था। रास उनको मिला जिनका प्रेम स्वसुख कामना लेश शून्य था यानी जो श्रीकृष्ण से समर्था रति का निष्काम प्रेम करती थी।

रास दिव्य रसों का समूह है। दिव्य शब्द महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सुन्दर गायन, वादन, संगीत, लयबद्ध नृत्य, वन विहार, जल

विहार जो रास में हुआ उसे शाश्वत और अनंत आनंद के चरित्र प्रदान करता है। यह इस दुनिया में किए गए नृत्य के समान दिखता है लेकिन भौतिक सुखों से अंत में पीड़ा होती है जबकि दिव्य सुख आपको अधिक दिव्य सुख देता है। दिव्य आनंद ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

श्रीकृष्ण ने मुरली की तान छेडी। जिस कोई गोपी ने मुरली की धुनी सुनी उसका चित्त श्रीकृष्ण ने उस मुरली की धुनी से चुराया। गोपियाँ भागी। ये हमारा मन कौन ले जा रहा है? उसी तरफ भागी जिस तरफ उनका मन जा रहा था - श्रीकृष्ण की ओर।

ऐसा नही हुआ कि किसी गोपी दूसरी से कहा - अरी! चल। रास होने जा रहा है। बस सब गोपियाँ समाधि की अवस्था में पहुच गयी। किसी को किसी का होश नही रहा। कुछ गोपिया तो जैसी थी, जो पहनी थी, जिस अवस्था में थी वैसीही निकल पडी।

कुछ अन्य गोपियों ने सोचा ऐसी ही निकल पडेंगे तो लोग क्या सोचेंगे? इसलिए उन्होने अपने आभुषण आदि ठीक कर जाने की सोचा। इनके मन में लोगों के बारे में विचार आया। इनकी समाधि कुछ निम्न कक्षा की थी। गोपियों की समाधी में कई स्तर थे। हर गोपी अपनी अपनी समाधि की अवस्था में निकल पडी। कुछ गोपियों के पतियों ने रोका तो उन गोपिया अपने शरीर से बाहर आकर चल पडी। मायाबद्ध जीव कर्म बंधन होने के कारण अपने शरीर से मनचाहे तरीके से शरीर के अंदर बाहर नही आ जा सकते। भगवत् प्राप्ती के बाद जीव सब बंधनों से मुक्त हो जाता है। इसलिए स्वच्छंद बनकर जब चाहे जहा विहार कर सकता है।

जिन गोपियोंने श्रृंगार करना चाहा वे भी ठीक तरीके से नही कर पायी क्योंकि उनका मन श्रीकृष्ण के विचारों में तल्लीन था। उन्होंने गहने आदि गलत स्थानों में पहन लिया। नाक में कुंडल, कलाई में हार, माथे पर बिंदी की जगह काजल - इसी तरीके का अजब श्रृंगार हो गया।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

खैर सब गोपियाँ जंगल में रात के रास के स्थान पर पहुँच गयी।

महारास ये दिव्य जगत का सर्वोच्च कोटि का रस है। प्रथम हम मायिक सुख के स्तर के बारे में विचार करते है।

पृथ्वी पर भी लोगों के कई स्तर देखने को मिलते है। किस व्यक्ति को सबसे सुखी कहा जा सकता है? हिंदू परिभाषित करता है कि इस तरह के राजा का सुख सबसे ऊपर है, जो पूरी धरती का एकमात्र शासक हो, प्रजा जिसके अनुकूल हो, जो युवा हो, शक्तिशाली हो, सुन्दर हो, स्वस्थ हो, बुद्धिमान हो, सभी गुण उसमें विद्यमान हो। ऐसे राजा के सुख को भौतिक आनंद की सीमा माना जाता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

हिंदू का कहना है कि इस तरह के हजारों राजाओं का सुख स्वर्ग के पदानुक्रम में सबसे कम सुख: मानव गंर्धव लोक (स्वर्ग का पहला स्तर) के सुख के बराबर है। इस तरह के हजारों मानव गंधर्व लोक का सुख देव गंधर्व लोक के सुख के बराबर है। ऐसे हजारों देव गंधर्व लोक का सुख एक पितृ लोक के सुख के बराबर है। इस तरह के हजारों पितृ लोक का सुख एक कर्म देव के सुख के बराबर है। इस तरह के हजारों कर्म देव लोक का सुख एक अजनाज देव लोक के सुख के बराबर है। इस तरह के हजारों अजनाज देव लोक का सुख एक देव लोक के सुख के बराबर है। ऐसे हजारों देव लोकों का सुख एक इंद्र के सुख के बराबर है। इस तरह के हजारों इंद्र का सुख एक ब्रृहस्पति के सुख के बराबर है। ऐसे हजारों ब्रृहस्पति का सुख एक प्रजापति के सुख के बराबर है। ऐसे हजारों प्रजापति का सुख के एक ब्रम्हलोक के सुख के बराबर है।

लेकिन ब्रम्हलोक तक माया का साम्राज्य है। ब्रम्हलोक तक जाकर वापस आना पडता है और वो भी कुत्ता बिल्ली आदि हीनतर योनियों में डाल दिया जाता है। जब स्वर्ग सम्राट इंद्र को कुत्ता बिल्ली आदि बन के एक एक रोटी के लिए दर दर घुमना पडता होगा तो कैसे लगता होगा? फिर यह ध्यान में रखना

चाहिए कि ब्रम्हलोक तक मन की आंतरिक समस्याएं हल नहीं होती। वहा के लोग भी काम, क्रोध, लोभ, इर्षा, द्वेष आदि मानसिक रोगों से अशांत एवं अतृप्त रहते है। इसलिए माया के अंडर के सब लोगों का अंदर से एक सा हाल होता है। यहा एक भिखारी हो या राजा हो या ब्रह्मलोक निवासी हो सब अपने से आगे वाले को देखकर एकसमान रूप से अशांत एवं अतृप्त है। सबको शाश्वत सुख की तलाश हैं। सभी अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग, पृथ्वी और नरक के माध्यम से ऊपर और नीचे घूमते रहते हैं।

लोग जादातर समझते है कि सब आध्यात्मिक रास्ते ईश्वरीय जगत में एक ही गंतव्य की ओर ले जाते है। लेकिन ये सही नही है।

ईश्वरीय जगत का आनंद सब जगह अनंत मात्रा का है लेकिन रस की गुणवत्ता में बहुत अंतर है। अनंत दायरे में व्यक्तिगत गंतव्य अलग है। इसलिए आध्यात्मिक खुशी के कई स्तर हैं। आइए अब आध्यात्मिक खुशी के स्तर देखते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

मायिक जगत से दिव्य जगत में जाने पर सबसे पहले गिरीजा नदी लगती है। उसके बाद परमव्योम लोक है जहा ब्रम्हद्रव में परमहंस लोग लीन रहते है। इसे सायुज्य या कैवल्य या एकत्व मुक्ति कहते है। ये दिव्य जगत का सबसे निम्न कक्षा का आनंद है। फिर सगुण साकार भगवान का आनंद है। इसमें भक्तों की चार मुक्तियाँ है - साष्टी, सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य। सब भगवान के अंश अवतारों के लोक है जहा उनके भक्त जाते है। वैकुंठ लोक है जहा शांत भाव के उपासक चार भुजा वाले भगवान विष्णु का दर्शन करते रहते है।

शांत भाव से अधिक रस दास्य भाव में है। उससे अधिक रस सख्य भाव में है। उससे अधिक रस वात्सल्य भाव में है। उससे अधिक रस माधुर्य भाव में है। माधुर्य भाव में भी साधारणी रति से अधिक रस समंजसा रति वालों को मिलता है तथा सबसे अधिक रस समर्था रति वालों को मिलता है।

जैसे कोई ऑफिसर अपने ऑफिस में कुर्सी पर बैठा हो तो वो ऐश्वर्य रस है। वहा उसका बच्चा जाय तो दूरी महसूस करता है। लेकिन वही ऑफिसर जब घर में पिता बनकर अपने बच्चे को गोद में लेकर प्यार, लाड दुलार करता है, उसके साथ तोतली भाषा में बात करता है तो बच्चे को सुख मिलता है। ये माधुर्य रस है। वैकुंठ में सबसे अधिक ऐश्वर्य है। वहा ऐश्वर्य ही ऐश्वर्य है।

माधुर्य है ही नही। वैकुंठ से अधिक रस द्वारिका में है जहा ऐश्वर्य और माधुर्य दोनो है। वैकुंठ से अधिक रस द्वारिका में है जहा ऐश्वर्य वैकुंठ से कम और माधुर्य अधिक है। इससे अधिक रस ब्रज में है जहा ऐश्वर्य है ही नही। ब्रज में श्रीकृष्ण को कोई भगवान जानकर प्यार नही करता था। उनके लिए वो अपना कन्हैया था - किसी का स्वामी, किसी का सखा, किसी का पुत्र तो किसी का प्रियतम।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

जब श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत अपनी करंगुली के नाखुन पर उठाया था तो सखा लोगो ने कहा था - देखो कन्हैया को! इस परिस्थिती में भी इसको मजाक सूझ रहा है। पहाड के नीचे करंगुली लगाये है! पहाड गिर जायेगा तो? आओ हम सब लठीया लगाते है ताकि पहाड नीचे ना गिरे।

यशोदा मैया को जब विराट रूप दिखाया था तो मैया को लगा जरूर था कि मेरे लाला के पास कोई दैवी शक्ति है। उसकी नजर बदलने लगी। तब श्रीकृष्ण ने तुरंत वैष्णवी माया से मैया से मोहित किया तो मैया फिर से सोचने लगी - अरे! ये मेरा लाला है। ब्रज में जितने भी ऐश्वर्य के काम हुए, राक्षसों का वध आदि, उसके लिए मैया सोचती थी कि ये भगवान विष्णु की कृपा से सब हो रहा है। मतलब ये कि ऐश्वर्य चोरी चोरी सेवा करता था। माधुर्य पर ऐश्वर्य हावी नही था।

ब्रज से भी अधिक रस कुंज में है। उससे अधिक निकुंज में, उससे अधिक निभृत निकुंज में है। तो महारास का रस जीवों के लिए सर्वोच्च कक्षा का रस है जो माधुर्य भाव के निष्काम प्रेमियों को मिलता है।

तो श्रीकृष्ण ने बांसुरी बजायी, और गोपियाँ भागी। सबने वर्तमान काम को अचानक छोड़ दिया और कृष्ण प्रेम की समाधि में चल पड़ी। उनके पतियों ने पाया कि उनकी पत्नियां गहरी नींद में उन्ही के बगल में सो रही थी। बांसुरी भी दिव्य थी। इसकी धुन केवल उन लोगों द्वारा सुनाई गई जो दिव्य रास के अधिकारी थे। बाकी पुरुष, बच्चे, यशोदा मैया आदि ने बांसुरी सुनी ही नही।

लेकिन वही धुन हिमालय पर्वत तक पहुंच गई। वृंदावन से सैकड़ों मील दूर, जहां भगवान शंकर समाधी में लीन थे। रास का रस वो भला कैसे छोडते? वो भी मौके पर पहुंचे गये। रास के स्थान पर पहुंचने पर, उन्हे रोका गया।
एक गोपी ने प उनसे पूछाूछा, 'तुम कौन हो?'
'मैं शंकर हूं।' शंकर जी ने जवाब दिया।
'कौन से शंकर?'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

'मतलब'
'हाँ! अनंत ब्रह्मांड है और प्रत्येक ब्रह्मांड में एक ब्रह्मा, एक विष्णु और एक शंकर हैं। आप कहाँ से हैं?'
'ओ! मैं चार मुख वाले ब्रह्मा के ब्रह्मांड से हूं।'
'लेकिन इस नृत्य पार्टी में केवल महिलाओं को अनुमति है। '
अब श्याम रस तो पाना है। चाहे जैसे मिले! शंकरजी ने खुद को एक नारी में बदल दिया और अंदर चले गये। पार्वती पहले से ही वहां मौजूद थी। वह अपने पति को नारी रूप में देखकर मुस्कुरा दी कि बडे पुरूष बनते थे। आज स्त्री बनना पडा।

शंकरजी वैष्णवों में टॉप करते है। जब रामावतार हुआ था तो शंकरजी ने हनुमान जी रूप में अवतार लिया था और श्रीराम के भक्तों में उनकी तुलना में कोई नही था। जब कृष्णावतार हुआ तब भी श्रीकृष्ण के बाल रूप के दर्शन के गोकुल गये। लेकिन यशोदा मैया ने उनका वेष देखकर कहा - मैं लाला को बाहर नही लाउंगी, तुम्हारा भयानक भेष देखकर मेरा लाला डर जायेगा। तब शंकरजी ने यमुना के किनारे जाकर रोना शुरू किया तो इधर

लाला भी जोर से रोने लगा। मैया को किसी ने कहा - लगता वो जोगी कुछ टोना कर गया है, अब वही लाला का रोना बंद कर सकता है। तब मैया ने शंकरजी को ढूंढ कर ले आयी। जब नजर से नजर मिली तब लाला का रोना बंद हुआ।

शंकरजी गोपी तनु धारण कर ब्रज में श्रीकृष्ण के दर्शन के लिए अक्सर जाया करते थे। और महारास में तो पहुँच ही गये।

रास का वर्णन जिस भागवत में है वो शुकदेव ने राजा परीक्षित को बताया था। एक बार राजा परीक्षित जंगल में शिकार करने गये थे। उनको प्यास लगी थी। वहा एक कुटी के सामने शमिक ऋषि समाधि में बैठे थे। समाधि में इंद्रियां काम नही करती। इसलिए जब परीक्षित ने उनसे पानी मांगा तो उनको नही सुनाई दिया। परीक्षित को गुस्सा आया और उन्होंने ऋषि के गले में पास ही में पडा मरा हुआ साप डाल दिया। शमिक ऋषि का पुत्र शृंगी ऋषि जब बाहर से आये तो उन्होंने अपने तपोबल से जान लिया कि ये काम राजा का है और परीक्षित को शाप दिया कि सात दिन में उसकी मृत्यु साप के काटने से होगी। शमिक ऋषि को समाधि खुलने के बाद इस घटना क्रम की जानकारी हुई। उन्होने शृंगी ऋषि से कहा इतनी छोटी गलती के लिए इतना बडा दंड नही देना चाहिये था।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

परीक्षित को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने शुकदेव से सात दिन में कल्याण का मार्ग पूछा तब शुकदेव ने परीक्षित को भागवत सुनाया था। शुकदेव के बारे में बाद में विस्तार पूर्वक बताया जाएगा।

तो जब शुकदेव ने परीक्षित को ये बताया कि कुछ गोपियाँ श्रीकृष्ण से जार भाव से प्यार करती थी। जार भाव उसे कहते है जब कोई स्त्री घर में पति होते हुए भी परपुरूष से चोरी चोरी प्यार करती है। जो शादीसुदा गोपियाँ थी वो श्रीकृष्ण से इसी भाव से प्यार करती थी। उनके लिए शुकदेव ने कहा कि कहाँ व्याभिचारी दुष्टा गोपियाँ और कहाँ ब्रम्ह श्रीकृष्ण - कोई तुलना ही नही हो सकती - लेकिन इन गोपियों की चरण धूली छोटे मोटे की बात छोडो ब्रम्हा, विष्णु, शंकर चाहते है।

जार प्रेम की बात सुनते ही परीक्षित का माथा ठनका। उन्होने शुकदेव से पूछा कि इसका मतलब गोपियाँ श्रीकृष्ण को परपुरूष समझकर प्यार करती थी। वो श्रीकृष्ण को भगवान नही

जानती थी। फिर उनका उद्धार कैसे हुआ? उनको तो नरक मिलना चाहिये था। उनको गोलोक कैसे मिला?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

प्रथम समझ लेते है कि ये शंका करनेवाले परीक्षित कौन थे? महाभारत के युद्ध में पांडव कुल का समूल नाश करने के लिए ब्रम्हास्त्र का प्रयोग किया गया था। उस समय परीक्षित गर्भ में थे। जब ब्रम्हास्त्र गर्भ में परीक्षित को मारने गया तो भगवान श्रीकृष्ण ने उनको ब्रम्हास्त्र से बचाया था। परीक्षित का जब जन्म हुआ तो सब ओर देखकर परीक्षण कर रहे थे कि जिसको मैंने गर्भ में देखा था वे (श्रीकृष्ण) कहाँ है? वे तो बडे ही प्यारे थे, यहा तो उसके मुकाबले का कोई नही है, ये सब गंदे लोग दिख रहे है। इसलिए उनका नाम परीक्षित पड गया। मतलब ये कि परीक्षित को गर्भ में ही भगवत् प्राप्ती हो गयी थी। फिर वे क्यूं शंका कर रहे थे?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

ये सब हम जैसे लोगों के कल्याण के लिए किया जाता है। संसारी लोग भगवान की करूणा एवं दिव्यता को नही महसूस कर सकते। उनको भगवान और महापुरूष के आचरण संसारी व्यक्ति जैसे ही लगते है। इसलिए उनके मन में मायिक शंका उत्पन्न होती है। उन शंकाओं का समाधान करने के लिए एक महापुरूष शंका का अभिनय करता है तो दूसरा उसका समाधान करता है जिससे मायिक जनों का शंका निरसन हो और वो भगवान की ओर चले।

ऐसा ही सवाल पहले भी परीक्षित ने उठाया था। अघासुर राक्षस एक गुफा का रूप लेकर श्रीकृष्ण के सखाओं को खा गया था। श्रीकृष्ण उसके मुँह में चले गये और लंबे होते गये। अघासुर का मुँह फट गया जिससे उसकी मृत्यु हो गयी। भगवान ने सब सखाओं को मरने से बचाया था। उस अघासुर को भगवान ने अपना लोक दिया था। तब भी परीक्षित ने पूछा था कि अघासुर को गोलोक कैसे मिला जब उसकी मनीषा श्रीकृष्ण और सखाओं को मारने की थी?

शुकदेव ने जबाब दिया था कि अघासुर ने शत्रुता से भगवान

चिंतन कर अपने मन को भगवान में एक कर दिया था। मन से भगवान का चिंतन कर जीव भगवत्प्राप्ति कर लेता है। यहा तो भगवान खुद उसके मुँह में चले गये थे। किसी भी भाव से - काम से, क्रोध से, भय से, द्वेष से, ईर्ष्या से यदि भगवान में मन का एकत्व हो तो भगवान का लोक मिल जाता है।

अब भी शुकदेव ने वही बात दोहरायी और कहा कि यहा तो गोपियाँ श्रीकृष्ण से प्यार करती थी। जब शत्रुता भगवान से करनेवाले को गोलोक मिलता है तो प्यार करनेवाली गोपियों को गोलोक मिला इसमें क्या आश्चर्य है? वस्तु ज्ञान की अपेक्षा नही रखती वो अपना फल देती है। जैसे कोई जहर जान के खाये या अनजाने में खाये तो मरेगा। जहर अपना कमाल दिखाएगा। ऐसे ही श्रीकृष्ण शुद्ध व्यक्तित्व है। उनमें चाहे जिस भाव से मन का एकत्व हो जाय तो जीव का अंत:करण शुद्ध हो जाता है तथा उसको भगवान का लोक मिलता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

वस्तु बुद्धी की अपेक्षा नही रखती। वो अपना फल देती है ये सिद्धांत ठीक से समझना जरूरी है।

एक अपढ़ गंवार दवाई के बारे कुछ नही जानता जबकि एक डाक्टर उस दवाई का फार्म्युला आदि जानता है। दोनो बीमार होने पर उसी दवाई से ठीक हो जाते है। मतलब दवाई नामक वस्तु ने अपना काम जानने वाले पर या ना जानने वाले समान प्रकार से किया।

इसी प्रकार मन बीमार है। उसको दवाई की आवश्यकता है। वो कैसे मिलेगी? मन का काम है लगाव करना। मन का लगाव चार प्रकार से किया जा सकता है।
भगवान के अवतार काल में दो प्रकार से -
1 भगवान को भगवान जानकर जैसे देवकी को पता था कि उसका पुत्र श्रीकृष्ण भगवान है क्योंकि भगवान ने बालक बनने से पहले देवकी को अपना चार भुजा वाला रूप दिखाया था। वो गोलोक गयी क्योंकि उसका लगाव शुद्ध व्यक्तित्व में हुआ था इसलिए शुद्ध वस्तु ने शुद्ध फल दिया।

2. भगवान को भगवान न जानकर जैसे यशोदा मैया नही जानती थी की उसका पुत्र श्रीकृष्ण भगवान है। उसने श्रीकृष्ण को केवल अपना पुत्र मानकर प्यार किया था। वो भी गोलोक गयी क्योंकि उसका लगाव शुद्ध व्यक्तित्व में हुआ था इसलिए शुद्ध वस्तु ने शुद्ध फल दिया।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान का अवतार काल न हो तो दो प्रकार से -
3 संसार में भगवान की भावना से जैसे लोग मूर्तिपूजा आदि करते है। मूर्ति तो पत्थर की होती है। लेकिन चिंतन अब यहा भगवान का हो रहा है।भगवान अपनी सर्वज्ञता तथा सर्वव्यापकता के कारण आपकी भावना जानते है। मीराबाई, धन्ना जाट आदि गोलोक गये क्योंकि उनका लगाव शुद्ध व्यक्तित्व

में हुआ था इसलिए शुद्ध वस्तु ने शुद्ध फल दिया।

4 संसार में संसार की भावना से जैसे आमतौर से लोग संसारी वस्तु में लगाव करते है। माँ, बाप, भाई, बहन आदि में संसारी व्यक्ति जानकर प्यार या दुश्मनी करते है। ऐसे लोगों को गोलोक नही मिलता क्योंकि इनका लगाव अशुद्ध व्यक्तित्व में हुआ था इसलिए अशुद्ध वस्तु ने अशुद्ध फल दिया तथा ये सब चौरासी लाख में घुमते रहते है।

तो शुकदेव के समझाने पर परीक्षित का शंका निरसन हो गया और रास के बारे में बताना शुरू किया।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

गोपियाँ श्रीकृष्ण के बुलाने पर जंगल में पहुँच गयी। श्रीकृष्ण ने ही तो उनके मन को चुराकर उन्हे वहा आने को विवश किया था।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

श्रीकृष्ण ने ऐसा दिखावा किया गोपियों के रात में जंगल में आने से वे आश्चर्य में पड गये थे। खुद ने ही गोपियों को वरदान दिया था। उस वरदान के अनुसार योगमाया की सहायता से रास का प्रबंध किया। मुरली की तान से गोपियों को बुलाया और जब गोपियाँ वहा गयी तो उनसे कहा,

"आइए! आइए! लेकिन ये बताइए कि इतनी रात में आप इस जंगल में क्यों आयी हो? क्या ब्रज में कोई संकट आया है? मैंने बहुत बार आपकी रक्षा की है। ऐसी कोई बात हो तो बताओ। अच्छा! पूर्णिमा की इस खूबसूरत रोशनी को देखने के लिए और इन खूबसूरत खिलने वाले फूलों को देखने के लिए आप यहा आयी हो! ये बडा ही आश्चर्य है कि छे ऋतुओं के फुल एकसाथ खिले है! यह अत्यंतही सुंदर और सुहावना दृष्य है! एक अलग ही खुशी का एहसास मन मे भर जाता है! लेकिन यह लंबे समय तक यहां रहना अच्छा नहीं है। क्योंकि आप यहाँ अचानक आपके परिवार को छोड के आयी हो। वे आपकी राह देख रहे होंगे। बच्चे आपके लिए रो रहे होंगे। आपको घर वापस जाकर अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। आप मुझे भगवान मानकर यहाँ आयी हो? तो सुनो। मेरे से दूर रहकर मेरे नाम, गुण, लीला आदि का संकीर्तन करना अधिक लाभदायक होता है। पास रहने से प्रेमास्पद में दोष दिखाई देने से नामपराध होता है। ओ! मैंने बांसुरी की तान छेडी तो आपको लगा कि मैंने यहाँ आने का निमंत्रण दिया। ऐसी कोई बात नही है। बांसुरी बजाना मेरा शौक है। निमंत्रण के बिना किसी के स्थान पर होना अच्छा नहीं है। अब जब आपने इस पूर्णिमा की रात की सुंदरता देखी है और आप सुनिश्चित हैं कि मैंने आपको नही बुलाया है, तो आपके घर वापस जाएं और अपने परिवार के सदस्यों की सेवा करें। "

भगवान श्रीकृष्ण ने गोपियों को जो कहा था कि दूर रहकर प्यार बढता है इसका प्रमाण ये है कि जब श्रीकृष्ण ब्रज छोडकर गये तो जिन गोपियों को सौ साल का विरह दिया उनका प्यार प्रतिक्षण बढता गया। और द्वारिका में जिन रानियों को नित्य सहवास दिया उनका प्यार सदा के लिए उसी लेवल पर रहा।

शुकदेव ने भी परीक्षित को यानी हम सबको उपदेश दिया कि श्रीकृष्ण के नाम, रूप, लीला, गुण आदि का श्रवण, कीर्तन एवं स्मरण ही साधना है। स्मरण परमावश्यक है लेकिन श्रवण और कीर्तन या संकीर्तन स्मरण में सहायक है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

जप आदि और भी साधनाएँ है लेकिन संकीर्तन की विशेषता ये है कि प्रारंभ में आमतौर पर भगवान में मन इतना आसानी से नही लगता। उसके लिए अभ्यास की जरूरत है। लेकिन साधक का मन ढोलक, मंजिरा, हारमोनियम साथ होनेवाले गायन की लय ताल में लग जाता है। धीरे धीरे वो अपने मन को भगवान में लगाने की कोशिश करता है। संकीर्तन सुनने वाले का भी लाभ होता है। गौरांग महाप्रभु कहते है संकीर्तन करने वाला अपने साथ औरों का भी लाभ कराता है सुनने वाला चाहे पशु पक्षी क्यूं न हो। जब कीर्तन में कोई पद गाते है तो मन को लीला के अनुसार रूपध्यान करने में आसानी होती है। जैसे श्रीकृष्ण आंगन के कीचड में खेल रहे है, यशोदा मैया उनको डाट रही है इस तरह का पद गाते है तो वो दृष्य आखों के सामने आ जाता है। हो गया भगवान का स्मरण। ये सब सुविधा आसन लगाकर केवल ध्यान (मेडिटेशन) या जप में नही है। फिर इन साधनाओं में बाहर का थोडा भी डिस्टर्बन्स बाधा डालता है। कीर्तन में वाद्यों का आवाज ही इतना होता है की बाहर का कोई भी डिस्टर्बन्स हो आप अपना कीर्तन में मस्त रहते है।

इसलिए श्रीकृष्ण गोपियों को जो उपदेश दिया -भगवान के नाम, रूप, लीला, गुण का गान यानी संकीर्तन - यही साधना है। श्रवण

तत्वज्ञान का करना पडता है जिससे हमें थियोरी समझ में आती है और इन साधनों से स्मरण करने में आसानी होती है। स्मरण तो प्रमुख है ही।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

तो ये तय हो गया कि कलियुग में श्रवण, कीर्तन और स्मरण यही तीन साधन करने से जीव अपना कल्याण कर लेता है। जगद्गुरू श्री कृपालुजी महाराज यही तीन साधना बताते है लेकिन साथ में ये भी कहते है कि- येनकेन प्रकारेण मनः कृष्णे निवेशयेत- यानी भगवान में मन को लगाना ही साधना है। श्रवण कान का विषय है। कीर्तन रसना का विषय है। स्मरण मन का विषय है। मन ही बंधन एवं मोक्ष का कारण है। जिस किस तरीके से मन भगवान में लगे आप लगाइए। तरीका आप पर निर्भर है।

रास में आगे क्या हुआ ये अगले पोस्ट में।

श्रीकृष्ण ने आगे कहा, "देखो, आपको अपने पति के अलावा किसी अन्य व्यक्ति के साथ अवैध संबंध नहीं रखना चाहिए। ऐसे मामलों में आपको नरक में जाना पड़ सकता है! आपको केवल अपने पति से प्यार करना चाहिए। एक महिला, जो अपने पति की पूजा करती है और उसके प्रति वफादार रहती है, स्वर्ग में जगह लेती है और अन्य लोग उसकी पूजा करते हैं! पति चाहे लंगडा, लुला, मुर्ख कैसा भी हो उसे नही छोडना चाहिए बशर्ते कि वो पापी ना हो।"

गोपियाँ श्रीकृष्ण द्वारा दिए गए व्याख्यान को धैर्यपूर्वक सुन रही थे। गोपियाँ अभी भी अपनी जगह पर चिपकी थी। वापस नहीं जा रही थी।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

एक कहानी है जो एक पतिव्रता महिला अपने पति के लिए कुल निष्ठा होने से पाई शक्ति को दर्शाती है। एक महिला थी जो पूरी तरह से अपने पति को समर्पित थी। उसके मन पति के बारे में कभी भी कोई नकारात्मक विचार नहीं आया था और पति के भाव से उसका मन किसी तीसरे व्यक्ति में आकर्षित भी नही हुआ था। उसने कभी अपने पति की अवज्ञा नहीं की, हमेशा पति इच्छा के अनुसार काम किया और उसे अपने जीवन में हमेशा उसे खुश करने की कोशिश की। वह एक बार किसी चीज को मुसल से कूट रही थी। जब वह अपने काम में व्यस्त थी, तब उसके पति ने एक गिलास पानी माँगा। उस समय मुसल हवा में था। बिना किसी देरी के अपने पति की सेवा करने के लिए वह तुरंत उठ गई और उसे एक गिलास पानी लाया। इस बीच, अपने पतिव्रता होने के कारण, मुसल हवा में बना रहा!

तो श्रीकृष्ण गोपियों को बताते हैं, "पतिव्रता महिलाओं की हर जगह पूजा की जाती है और उन्हे अंत में स्वर्ग मिलता है। इसलिए आप सब तुरंत वापस जाओ।"

गोपियाँ अबतक चुप थी। श्रीकृष्ण के लेक्चर को बडे दुःखी हो कर सुन रही थी। लेकिन कुछ नही बोल रही थी। जान रही थी कि उनको रास के लिए बुलाने के बावजूद श्रीकृष्ण जानबुझ कर सबकुछ कर रहे थे। यह एक आम अनुभव है कि यदि पत्नी और पति दोनों एक-दूसरे पर चिल्लाते हैं तो स्थिति बदतर हो जाती है। यह सलाह दी जाती है कि यदि दोनों में से एक आपे के बाहर हो जाता है तो दूसरे को शांत रहना चाहिए ताकि स्थिति नियंत्रण में रह सकें।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

जब श्रीकृष्ण बोलना बंद कर दिया, तो गोपियों ने आखिरकार एक उचित जवाब दिया।
पहली बात ये कि श्रीकृष्ण सभी जीवों के साथ सदा के लिए एकमात्र सच्चे साथी हैं। जहा भी जीव जाय श्रीकृष्ण सदा उसके साथ रहते है। जीव श्रीकृष्ण से अपनी सारी ऊर्जा प्राप्त करती है उससे मन और शरीर कार्य करते है। श्रीकृष्ण गोपियों के पति के पति भी हैं, क्योंकि हर जीव श्रीकृष्णके पर वैसेही निर्भर रहता है जैसे पत्नी अपने पति पर निर्भर रहती है। श्रीकृष्ण ब्रह्मांड में एकमात्र पुरूष हैं, जबकि सभी जीव में सच्चे अर्थ में स्त्री होती है। श्रीकृष्णने जिन संबंधों की बात की थी, वह शरीर से संबंधित थी। श्रीकृष्ण हर जीव के एकमात्र रिश्तेदार हैं। श्रीकृष्ण हर जगह पर विद्यमान रहते हैं, जीव के अंतःकरण में भी रहते है। जीव जो भी सोचता है श्रीकृष्ण उसे जान लेते है। उनसे कोई भी बात छिपी नही है। इसलिए श्रीकृष्ण किसी के लिए परपुरूष नहीं है। बल्कि हर जीव का असली नातेदार श्रीकृष्ण ही है। तमेव माता...श्रीकृष्ण से ही जीव के सब नाते है। माँ, बाप, पति, भाई, बहन, पुत्र, मित्र आदि जीव के सब नाते श्रीकृष्ण से ही है।

दूसरी बात यह है कि श्रीकृष्ण का प्रवचन उन लोगों के लिए है जो स्वर्ग में रूचि रखते हैं और गोपियों को स्वर्ग या किसी भी अलौकिक शक्ति में रुचि नहीं थी। वे नरक में जाने के बारे में चिंतित नहीं थी। उनका एकमात्र उद्देश्य श्रीकृष्ण को खुश रखना

था।

तीसरी बात ये कि श्रीकृष्ण ने कहा था कि पति का परित्याग नही करना चाहिए बशर्ते कि पति पातकी न हो। जो लोग श्रीकृष्ण को यानी अपने उपकार कर्ता को अपने प्रियतम को भूले हैं, वे अपराध कर रहे हैं! फिर जो पति अपनी स्त्री को भगवान के पास क्या, भगवान की ओर भी जाने से रोकता हो वो तो पापी है ही। पाप के कारण ही तो जीव ना खुद भगवान की ओर चलता है और ना ही दूसरे को चलने देता है। ब्रज में एक भी पति ऐसा नही था कि जिसने अपनी पत्नी को रास में जाने की अनुमती दी थी। ऐसे पति को छोडना पाप नही है।

आखरी बात यह है कि गोपियाँ श्रीकृष्ण की इच्छा के अनुसार वापस जा सकती थी क्यों कि गोपियाँ श्रीकृष्ण को खुश देखना चाहती थी। लेकिन इंद्रियां अपने मन के निर्देश के अनुसार काम करती हैं। श्रीकृष्णने अपने सुंदरता, मीठे शब्दों और बांसुरी की सुखद धुन के साथ गोपियों का मन तो चुरा लिया था। तो गोपियों को अपना मन वापस मिलता तो वो अपने पाँव को घर लौटने की ऑर्डर देती।

ये सब सुनकर श्रीकृष्ण चुप हो गये।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

एक कहानी और कि एक पति पत्नी का जोडा था। दोनों का आपस में बहुत प्यार था। पति को किसी काम से कुछ दिन गाँव जाना था। पत्नी नही जाने दे रही थी। कह रही थी - मैं क्या करूंगी? मेरे दिन कैसे बितेंगे? पति ने काफी समझाया और कहा कि देखो, ये मेरी तस्वीर है। इसको देखोगी तो लगेगा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। जब तक मैं लौट के ना आऊँ तुम इसी तस्वीर को खिलाना आदि सेवा करना। तुम्हारा समय भी कटेगा और अकेलापन भी महेसूस नही होगा। पत्नी मान गयी।
कुछ दिन बाद पति लौटा। उसने दरवाजा खटखटाया और कहा - अरी! दरवाजा खोल। मैं तेरा पति आया हूँ। तो स्त्री ने कहा - मैं दरवाजा नही खोलती। मेरा पति मेरे पास है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

वो मूर्ख स्त्री अपने पति से प्यार करने के बजाय पति के तस्वीर से ही प्यार करती थी। ठीक उसी प्रकार इस दुनिया में पति का रिश्ता या सब रिश्ते नकली है। सब स्वार्थ पर आधारित है। यहा तक की अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए बेटा बाप को, पति पत्नी को, भाई भाई को या किसी भी नातेदार को गोली मार देता है। और श्रीकृष्ण का जीव के साथ ऐसा नाता है कि जीव भले ही भगवान को न मानता हो या भगवान को गाली देता हो फिर भी भगवान जीव को अपना बेटा मानते हुए उसके जीवन का प्रबंध उसी तरह करते जैसे भगवान को माननेवाले का करते है। भगवान ऐसा नही करते कि ये जीव मुझे गाली देता है तो इसके लिए मेरी दुनिया का पानी जहर हो जाए। सोचते है आज नही तो कल कभी ना कभी ये सही रास्ते पर आयेगा। इस दुनिया का बाप तो अपने को गाली देने वाले बेटे को घर से बाहर निकाल दे। बाप की मर्जी के खिलाफ काम करो तो बाप अपनी संपत्ति से उसका नाम हटा दे। लेकिन वो बाप बस प्यार ही करता है, जीव भले ही नफरत करे। जो पूतना स्तन में जहर लगाकर श्रीकृष्ण को मारने गयी उसको अपना लोक देकर अनंत काल के लिए दिव्यानंद दिया। क्यूं? तो कहते है कि उसने मेरे मुँह में अपना स्तन दिया तो वो मेरी माँ बन गयी।

कहने का तात्पर्य ये कि इस दुनिया के नाते उसी तस्वीर की तरह तभी तक मान्य है जब तक असली नातेदार भगवान का मिलन नही होता। इसलिए जब असली पति मिल गया तो गोपियाँ नकली पति की सेवा क्यूं करती? पति भी तब तक दारूण दुःख भोगता रहेगा जब तक वो अंतःकरण शुद्धी की साधना कर भगवानवाला दिव्यानंद नही प्राप्त कर लेता।

तो सभी प्रकार से ये सिद्ध हुआ कि श्रीकृष्ण किसी के लिए भी परपुरूष नही है बल्कि परमपुरूष है जो सबके अपने है। वो तो राह देख रहे है कि कब जीव सही बात समझकर मेरी ओर आए और मैं उसको मालामाल कर दूँ। हठी जीव ये मान ले तो उसका काम बन जाए।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

यद्यपि गोपियाँ श्रीकृष्ण के साथ बहस कर रही थी, लेकिन उनका मन दुःख से भर गया था। बात करते समय उनके नेत्रों में आँसू से भरे थे और वे लंबी लंबी सांसों की आह भर रही थी। दिल का दर्द चेहरे पर दिखाई दे रहा था। लगातार रोने के साथ आंखें लाल हो गईं थी।

उन्होंने अत्यंत भावुक होकर श्रीकृष्ण से कहा, "हम जानती है कि तुम केवल नंदनंदन नही हो बल्कि सबके हृदय में रहने वाले, सबके मन की बात जानने वाले सर्व शक्तिमान परमात्मा हो। आपके क्रूर शब्द हमारे दिल पर आघात करते है, आपका अंतःकरण बडा ही कोमल है। आपको ऐसे कठोर शब्दों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। हम आपको अपने जीवन से अधिक प्यार करती हैं। उसी प्यार के कारण सब रिश्ते नातों को छोड़कर हम आपके पास आयी है। आपका तो कानून है कि जो जीव जिस भाव से मुझे प्यार करता मैं भी उस भाव के अनुसार उतना ही प्यार उस जीव से करता हूँ। इसलिए हमारे साथ इस तरह क्रूरता पूर्वक व्यवहार करना आपको शोभा नही देता। हम जानती हैं कि आप अपनी इच्छा के अनुसार व्यवहार करने के लिए स्वतंत्र हैं और आप पर किसी नियंत्रण नही हो सकता। हम ये भी मानती है कि हमारा आप पर कोई अधिकार नहीं है। लेकिन आप भक्तों की इच्छाओं को पूरा करते हैं, इसलिए इस प्रकार कठोरता पूर्वक हमारा त्याग मत करो। उदारता पूर्वक हमारा स्वीकार करो।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

आपकी प्यारी मुस्कान, आकर्षक आंखें, प्यारी नज़र, मनभावन मुरली की ध्वनी इन सब ने हमारे दिल में रास की इच्छा को उजागर किया है। कृपया हमें अपने लाल होठों का रस पिला कर । यदि आप हमें अस्वीकार करते हैं, तो हम निश्चित रूप से आपके अलगाव की जलती हुई आग से मर जाएंगे। आपने हमें अपनी सेवा के इस संतुष्टिदायक अनुभव का वरदान दिया था। इस रास का रस देवी लक्ष्मी भी उपलब्ध नहीं है जो आपकी

शाश्वत पत्नी है। अब जब वो रास का अवसर आ गया है, तो आप हमें दुःख और निराशा के महासागर में डुबो रहे हो। आपका सुंदर चेहरे पर आकर्षक बाल की घुंगराली लट लहरा रही हैं, जिसने हमारे मन को मंत्रमुग्ध कर लिया है। लाल होंठ, असीम सुंदरता और आकर्षक मुस्कुराहट देखकर, कौन है जो आपको प्यार नही करेगा? पूरे ब्रह्मांड में ऐसी कोई स्त्री नहीं है जो आपके दिव्य चिन्मय, सुन्दर, मोहक और आकर्षक रूप को देखकर हर रिश्ता, हर प्रतिबंध, हर धार्मिक और सामाजिक मर्यादा पर लात ना मार दे। यह आपका सिद्धांत है कि आपकी शरण में आनेवाले का आप भजन करते है। आप उसे अपना लेते है। इसलिए कृपया हमें भी स्वीकार करें जिन्होंने आपके कमल चरणों की शरण ली है।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

श्रीकृष्ण मुस्कुराये। मतलब ये कि मैं तो परीक्षा ले रहा था कि गोपियों को मेरे अलावा स्वर्ग आदि की कामना तो नही? लेकिन गोपियों का प्रेम परम निष्काम था। वैसे तो श्रीकृष्ण की भी गोपियों के साथ रास करने की इच्छा हो रही थी। सारा संसार श्रीकृष्ण के अधीन रहता है और श्रीकृष्ण दिव्य प्रेम के अधीन रहते है, जो गोपियों के पास था। उसी प्रेम कारण ही तो आत्माराम श्रीकृष्ण गोपीराम बन गया।

श्रीकृष्ण एवं गोपियाँ सभी यमुना नदी के तट पर आए। दिव्य चिन्मय रास रस आत्मा और परमात्मा के मिलन का परम रस है। वैसे तो ब्रम्ह के लिए वेद में पहले ही कहा गया है "रसोवैसः" मतलब ब्रम्ह ही रस है या ब्रम्ह ही आनंद है। आनंद माने अनंत और शाश्वत सुख जो निर्गुण निराकार ब्रम्ह के उपासक परमहंसों को मिलता है। सगुण साकार भगवान का दर्शन सुख भी इस आनंद का अनंत गुना है। लेकिन निष्काम माधुर्य भाव के प्रेमी केवल दर्शन से भी संतुष्ट नही। तो उनके लिए रास का आयोजन हुआ जिसके लिए वेदों ने कहा "रसतमः परमः"। संस्कृत में तर प्रत्यय का अर्थ है अधिक तम प्रत्यय का अर्थ है सर्वाधिक। जैसे गुह्य माने गुप्त, गुह्यतर माने अधिक गुप्त, गुह्यतम माने सबसे अधिक गुप्त। रसतमः मतलब ही सर्वोच्च रस उसके आगे और एक शब्द जोड दिया परमः माने अंतिम रस। रास का मतलब है रसों का समूह जो जीवों को मिलने वाला सर्वोच्च एवं अंतिम आध्यात्मिक रस है- जिसके परे कोई रस नही।

नारदजी को किसी ने किस का ज्ञान सर्वोपरी है? उन्होंने जबाब दिया था गोपीजन वल्लभ। फिर एक प्रश्न निष्काम प्रेम कैसा होना चाहिए? उन्होंने फिर से वही जबाब दोहराया "यथा ब्रज गोपिकानाम"।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

यमुना नदी का परम सौभाग्य था जो रास उसके किनारे हो रहा था जिसका वो अवलोकन कर रही थी। तट पर रेत सुंदर चमक के साथ चमक रही थी! गायन और संगीत चालू था। गोपियाँ और श्रीकृष्ण एक दूसरे के साथ गले में, कमर में हाथ डाले नृत्य कर रहे थे। श्रीकृष्ण गोपियों की सराहना कर रहे थे। गोपियाँ अपरिमित दिव्य चिन्मय खुशी का अनुभव कर रही थी जिससे ज्ञानी कहलवाने वाले परमहंस भी अन्जान थे। इस रास रस के लिए लक्ष्मी बडी तपस्या की, लेकिन वृंदावन में प्रवेश नहीं तक नही कर सकी। कभी श्रीकृष्ण तो कभी गोपी एक दूसरे के लिए विभिन्न गाने गा रहे थे। नृत्य कदम कैसे लयबद्ध और निर्दोष थे!

जैसे कि वे सभी गायन और नृत्य की कला में विशेषज्ञ हैं। पूरे वातावरण पर पूर्णिमा की अल्हादक प्रकाश से साथ जादूभरा हो गया था! सुगंध से भरी सौम्य हवा कितनी मनभावन थी!

गोपियाँ परम सुखद प्रेमरस में इतनी डूब गयी थी कि उनके कोई और नजर ही नही आया। प्रत्येक गोपी को लगा कि श्रीकृष्ण सब गोपियों को छोडकर केवल उसके पास आये है। इससे गोपियों को अहंकार हो गया। प्रत्येक गोपी ने सोचा, 'मुझे देखो! मैं कितना सुंदर और आकर्षक हूं! स्वयं भगवान श्रीकृष्ण मेरे दिवाने होकर मेरे पीछे घूम रहे हैं! मुझ में कोई विशेष बात है जो श्रीकृष्ण मुझे सबसे ज्यादा प्यार करते है! '

जब श्रीकृष्ण ने देखा कि गोपियों को अहंकार हो गया, तो उन्होंने उस अहंकार को निकालने का फैसला किया क्योंकि अहंकार आनंद को बढ़ने की अनुमति नहीं देता। श्रीकृष्ण एक गोपी (राधा) को लेकर रास से गायब हो गये !! प्रथम ग्रासे मक्षिका पातः। इस प्रकार रास अभी शुरू हुआ था और उसमें रूकावट आ गयी। रास बंद हो गया।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

गोपियाँ श्रीकृष्ण के विरह में पागल सी हो रही थी। उनको ऐसा लग रहा था कि जैसे उनके जीवन की पूरी कमाई किसी ने अचानक खो दी हो। गोपियों का जीवन ही श्रीकृष्ण थे! उन्होंने मानो अपना जीवन ही खो दिया। वे विरह समाधी में पहुँच गयी और श्रीकृष्ण के याद करते करते खुद को ही शश्रीकृष्ण मानने लगी। श्रीकृष्ण की लीलाओं को सोच कर वे खुद वैसी लीलाएँ करने लगी।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

एक श्रीकृष्ण और अन्य पुतना बन गयी और पूतना वध की लीला करने लगी। श्रीकृष्ण बन गयी वो कहने लगी मैं यहां सभी राक्षसों को मारने के लिए यहां हूं। एक ने बांसुरी बजाना शुरू किया और उसकी तारिफ करने लगी! इस तरह उन्होंने दिव्य नशे में श्रीकृष्ण की नकल करी। ये एक्टिंग नही बल्कि समाधि की अवस्था है जहा जीव अपने को भगवान मानने लगता है।

कुछ होश में आयी तो वे अपने खोए हुए खजाने की यानी श्रीकृष्ण की खोज करने लगी। वे पेड़ों, फूलों, पक्षियों और यहां तक कि धूलिकणों को भी श्रीकृष्ण का पता पूछने लगी। वे श्रीकृष्ण की तलाश में जंगल में गयी, जहां उनको श्रीकृष्ण के चरण चिन्ह और साथ में एक अन्य गोपी (राधा) के चरण चिन्ह दिखाई पड़े। तो सभी कहने लगी, 'यह गोपी सबसे भाग्यशाली है जो श्रीकृष्ण हमें छोड़ कर इसको अपने साथ ले गये। इसने बडा भारी तप किया होगा। थोडी आगे गयी तो देखा कि केवल एक ही व्यक्ति के चरण चिन्ह थे। ते आपस में बात करने लगी, 'अब इस जगह को देखो! केवल एक व्यक्ति के चरण चिन्ह हैं! ऐसा लगता है कि श्रीकृष्ण ने उसे कंधे पर ले लिया है और आगे चला गये है। उस गोपी के भाग्य का वर्णन कौन कर सकता है?'

कुछ और आगे जाने के बाद गोपियों ने सोचा कि यदि हम आगे तो श्रीकृष्ण इस रात के अंधेरे में घने जंगल में और आगे जायेंगे तो हमारे प्रियतम को और कष्ट होगा। इसलिए वे सब लौटी तो

रास्ते में उन्होंने पाया कि वो गोपी(राधा) जो श्रीकृष्ण के साथ गयी थी वो बेहोश पड़ी थी! उन्होंने उसके चेहरे पर कुछ पानी छिड़क दिया। तब राधा होश में आयी और कहा, "जब श्रीकृष्ण ने मुझे उनके साथ ले गये तो मेरी खुशी की कोई सीमा नहीं थी। एक जगह पर मैंने कहा, 'ओ! श्रीकृष्ण मैं घूमने से बहुत थक गयी हूं और मुझ से और आगे नहीं चला जायेगा! मुझे कंधों पर बिठाकर आप मुझे जहा लेना चाहते हो वहा ले चलो। ' यह सुनकर श्रीकृष्ण मुझे कंधे पर बिठाने के लिए खुद बैठ गये। जैसे ही मैं कंधों पर बैठने लगी तो श्रीकृष्ण उस जगह से गायब हो गये! मैं बेहोश होकर गिर पडी। मैं भी आपकी तरह दुःखी हूँ।

अब श्रीकृष्ण कहां मिलेंगे! उसे वापस कैसे प्राप्त करें! मैं उनके बिना जीवित नही रह पाऊंगी।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

गोपियों ने कहा 'ओ! कृष्ण ओ!प्रियतम! आपके आने के कारण ब्रज का महत्व वैकुंठ (भगवान विष्णु का दिव्य निवास) से भी अधिक हो गया है। यहां तक कि देवी लक्ष्मी भी ब्रज में प्रवेश चाहती है। लेकिन हम गोपियों की स्थिति देखें जो आपको अपने प्राण से अधिक प्यार करती है! आपके विरह में हम जंगल में हर जगह आपको ढूंढ रही हैं! आपके कमलदल के समान आंखों ने हमको घायल कर दिया है जैसे व्याध के तीर से हिरनी घायल हो जाती हैं। क्या कोई केवल हथियार से मारता है? आँखों से नहीं? आपने हमें कई राक्षसों से बचाया है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

हम जानते हैं कि आप सिर्फ यशोदा के पुत्र नहीं हैं बल्कि आप वही हैं जो सबके हृदय में रहते हैं और आप पृथ्वी की रक्षा के लिए यहां आये हैं। फिर आप हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे है? आप अपने भक्तों की सभी इच्छाएँ पूरी करते हैं, तो आप अपनी मनभावन छबि को क्यों नहीं प्रकट करते हैं? आप हमें अपना दर्शन क्यों नही देते हैं? हम आपके लिए समर्पित हैं और आपके बिना नहीं रह सकती! हम अपने आप को आप पर न्यौछावर किया हैं। आप हमारे एकमात्र स्वामी हैं! विरह के इस दावानल को केवल आपके प्यारे मुखकमल के दर्शन से ही बुझाया जा सकता है! आपके मृदु और मीठे बोल सबको आपकी ओर आकर्षित कर लेते है!

आपके दिव्य लीलाओं की कहानियां वास्तविक जीवन अमृत हैं! ये लीला गुण नामावली सुनने वालों के पापों को भस्म कर देती है और यातनामय तप्त जीवन से छुटकारा देकर शीतलता प्रदान करती हैं। निश्चित रूप से जो इन लीला कथामृत को वितरीत करता है वह इस दुनिया का सबसे बड़ा दानी है!

ओ! प्यारे प्रियतम! वे दिन थे जब आपकी नज़र, आपके इशारे हमें अपरिमित खुशी का एहसास दिलाते थे! और अब आप हमारे व्याकुल विनतियों की ओर ध्यान नहीं दे रहे हो! हमें याद है

जब आप नंगे पाँव गायों को चराने के लिए जंगल में जाया करते थे, तो हम हमेशा सोचती थी कि इतने बडे जंगल में भरे पत्थर और काँटे आपके कोमल चरणों में चूभते होंगे तो आपको कितनी वेदना होती होगी।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

आपकी अनुपस्थिति में एक पल हमारे लिए युग की तरह लगता था। और जब आप शाम को वापस आते थे तो आपको फिर से देखकर हमें बहुत ही खुशी होती थी। उस अवसर पर आपके दर्शन में पलक गिरने के कारण आनेवाली बाधा भी हमारे लिए असह्य होती थी! हम कहती थे कि ब्रह्मा कितना मूर्ख है जिसने इन पलकों को बनाया है!

गोपियाँ श्रीकृष्ण के लिए कहती है - हे! विश्वासघाती! हम आपकी हर चाल को जानती हैं। आपने बांसुरी बजायी और हमें यहाँ आमंत्रित किया और अब आप इस अंधेरी रात में इस जंगल में हमें छोड़कर चले गए हैं! आप कैसे दयालु हैं? जब आप हमसे एकांत में मिलते थे तो आप अति मधुर स्वर में बात करते थे, जिससे आपके साथ मधुर मिलन की इच्छा पैदा हेती थी। और अब हमें यहाँ बुलाने के बाद, तुम चले गए! हम विलाप कर रही हैं! आपके लाल होंठों का अमृत विरह के सभी दुखों को दूर करता है! कृपया हमारे पास आइये और उस अमृत को हमें फिर से दीजिये! कृपया हमें अपनी दर्शन की दवा दीजिये जो विरह की आग के सभी दर्द से छुटकारा दिलाएगी! कृपया इस संकट से बाहर आने के लिए कोई उपाय सुझाइए!

जब आप गोचारण में बिताए लंबे दिन के बाद हमारे साथ पुनर्मिलन करते थे, तो असहनीय विरहाग्नी के दर्द से राहत पाने के लिए हम आपके चरण कमल को अपने कठोर स्तनों धीरे से लगाती थी, इस डर से कि हमारे कठोर स्तन आपके नाजुक कोमल चरणों को चुभें नहीं!

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

यह प्रेम की ऊँचाई है। स्थिति देखें। यह असीम खुशी और ऐसे विरह के दर्द की बात है जिसका थोड़ा अंश किसी भी मायिक जीव को मार देगा। राधा के विरह का टेंपरेचर इतना होता है उस विरह कि लौव से अनंत ब्रम्ह जलकर खाक हो जायेंगे। जो आग होती है, उसके उपर धुँआ होता है। उस धुँए के उपर एक हलकी लकीर होती है जिसे लौव कहते है। इस असह्य विरह दुःख में भी गोपियाँ अपना सुख नही चाहती हैं और सोच रही हैं कि 'हमारे प्रियतम को कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए!'

यदि आप इसकी तुलना सांसारिक प्रेम से करते हैं, जहाँ प्रेम हमेशा अपने स्वार्थ के लिए होता है, वहाँ जब प्रेम बढ़ता है तो प्रियतम की स्थिति का कोई विचार नहीं किया जाता। अधिक

प्यार, अधिक जोर से आलिंगन किया जाता है! और ये केवल अपने सुख के लिए किया जाता है! अगर माँ को चार दिनों के बाद अपना खोया हुआ बच्चा मिल जाता है, तो वह उसे इतना कसकर गले लगा लेती है कि बिचारे कोमल और नाजुक बच्चे का दम घुट जाए! लेकिन माँ गले लगकर अपना सुख बटोरने में व्यस्त है! कोई भी कल्पना भी नहीं कर सकता है कि गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति निष्काम प्रेम कैसा था! यही कारण है कि गोपियों का प्रेम आध्यात्मिक दुनिया में सबसे शीर्ष स्थान पर है और इस प्रेम के कारण, गोपियाँ आध्यात्मिक क्षेत्र में सबसे शीर्ष संत हैं! अन्य सभी संतों के प्यार में कुछ ना कुछ अपने सुख की कामना है, जबकि गोपी प्रेम इतना शुद्ध और इतना निष्काम है कि गोपी प्रेम में स्वसुख वासना लेश मात्र भी नहीं है।

इसलिए यदि आप आध्यात्मिक लक्ष्य निर्धारित करना चाहते हैं, तो इसे सबसे उँचा होने दें। हमे गोपी प्रेम का ही लक्ष्य बनाना चाहिए।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

श्रीकृष्ण को प्रकट करने का एक अति सरल मार्ग है बच्चे के भाँती रो कर पुकारना। एक दूध पिते बच्चे के रोने पर जैसे उसकी दौड के आती है वैसे ही जीव जब अपनी सब चातुरी छोडकर भोले बालक की तरह रोता है तो उसकी असली माँ भगवान दौड के गले लगाती है।

छोटा बच्चा कितना भोला होता है! यदि माँ बच्चे को बताती है कि पडोसन आवे तो बताना कि माँ घर में नही है तो पडोसिन आने पर बच्चा कहता है - माँ तो घर में है लेकिन माँ ने कहा है कि पडोसन आवे तो बताना कि माँ घर में नही है। तब पडोसन के जाने पर माँ बच्चे को एक झापड़ लगाती है और पहला झूठ का पाठ पढ़ाती है कि इतना ही बोलना होता है कि माँ घर में नही है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

तब से लेकर बड़े होने तक हम जितनी चारसोबीसी, दिखावा, तिकडम सीखी है वो संसार में चल सकती है लेकिन भगवान के सामने नही। भगवान कहते है - मोहि कपट छल छिद्र न भावा। संसार में चालाकी से काम लेना पडता है लेकिन भगवान को तो सरल निष्कपट हृदय ही पसंद है।

जब अवतार लेने के लिए ब्रम्हादिकों ने भगवान को बुलाना चाहा तो इस बात पर विचार किया गया कि क्या करने से भगवान प्रकट होंगे? तब सर्वानुमते यही तय हुआ था कि रोकर संकिर्तन करना ही सबसे सरल मार्ग है और वैसा किया। तब भगवान ने प्रकट होकर कृष्णावतार का वरदान दिया था। भगवान का एक विक पॉईंट है - अपने प्रेमी के निष्काम आँसू जिससे भगवान दौडकर आते है।

तो गोपियों ने वही किया था। श्रीकृष्ण को बुलाने के लिए करूण क्रंदन कर के भगवान को पुकारा था। इसे गोपी गीत कहते है। अभी तक आपको जो बताया गया वही गोपियों ने ताल सुर के

साथ रोकर अत्यंत करूण स्वर से गाया था।

तो श्रीकृष्ण से रहा नही गया। उनका हृदय दया से भर गया और श्रीकृष्ण फिर से प्रकट हुए, अपने सामान्य रूप में नहीं बल्कि भगवान विष्णु के रूप में। सभी ऐश्वर्य के साथ चार हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म लिए। गोपियां जो अस्तव्यस्त कपड़ों में थी, उन्होंने कपडे तुरंत ठीक करने की कोशिश की और भगवान से पूछा, 'आप कौन हैं और आप हम सभी महिलाओं के बीच में क्यूं आये हैं?'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान ने कहा, 'तुम मुझे दुःखी हो कर पुकार रही थी, तो मैं यहाँ हूँ! मैं भगवान विष्णु हूं।' गोपियों में से कोई भी उनके पास नहीं गयी। गोपियों में से एक ने कहा, 'यह व्यक्ति भगवान है या नही अभी पता चल जायेगा।'

उन्होंने कहा, 'यदि आप सही में भगवान हैं, तो कृपया हमें हमारे प्यारे श्रीकृष्ण वापस लौटा दीजिए जो हमें इस अवस्था में छोड़ गये है। हम सब उनसे प्यार करती हैं और उनके बिना नहीं रह सकती। '

श्रीकृष्ण को अपने प्यारे और सुंदर रूप में आना पडा। गोपियां आनन्दित हो गयी और रास फिर से शुरू हो गया।

श्रीकृष्ण और गोपियाँ तब यमुना के तट पर गयी, जहां नदी ने रास के लिए एक सुंदर मंच स्थापित किया था। गोपियों ने श्रीकृष्ण से बात करना शुरू कर दिया। वे नाराजगी जताना चाहती थी कि श्रीकृष्ण ने उन्हें बीच में ही बिना कारण के छोड़ दिया था। गोपियाँ चाहती थी कि श्रीकृष्ण बिना किसी कारण के उन्हे छोड़ने की गलती स्वीकार करें।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

इस बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने श्रीकृष्ण से पूछा, 'कुछ लोग केवल उन लोगों से प्यार करते हैं जो उन्हें प्यार करते हैं, जबकि कुछ लोग उन लोगों से भी प्यार करते हैं जो उन्हें प्यार नहीं करते हैं। लेकिन अभी भी उन लोगों की एक और वर्ग है जो इन दोनों प्रकार के लोगों से प्यार नहीं करते हैं। ओ! प्यारे प्रियतम, आपको सबसे ज्यादा क्या पसंद है? ' अब इसके अलावा किसी वर्ग के लोग संसार में हो ही नही सकते और श्रीकृष्ण इसमें से कुछ भी चुनते है तो ये सिद्ध हो जाता है श्रीकृष्ण को अपने प्राण से भी अधिक प्यार करनेवाली गोपियों को आमंत्रित करने के बाद रास के बीच में ही उनको छोड कर इस प्रकार दुःखी करके नही जाना चाहिए था।

श्रीकृष्ण गोपियों का मतलब समझ गये। उन्होंने जवाब दिया,"जो केवल अपने से प्यार करने वाले से ही प्यार करते हैं, वे अपने स्वार्थी उद्देश्यों के लिए सबकुछ कर रहे हैं। वे न तो अच्छे दिल हैं और न ही वे धार्मिक हैं। उनका प्यार केवल अपने सुख के लिए ही होता है। स्वार्थ के अलावा उनके पास कोई अन्य उद्देश्य नहीं है। ओ!! सुंदरीयों! वे लोग जो अपने से प्यार न करने वाले से भी प्यार करते हैं वे परोपकारी होते है। उदाहरण के लिए दयालु लोग, सौम्य स्वभाव वाले लोग, पिता और मां। उनका दिल दयालुता से भरा होता है। दूसरों की मदद करने की उनकी इच्छा होती है। वास्तव में बोलते हुए, उनके कार्य दोष रहित, सत्य से भरे हुए और पवित्र होते हैं।

ऐसे कुछ लोग हैं जो अपने से प्यार करने वाले से भी प्यार नही करते तो जो उनसे प्यार न करने वालों से प्यार करने का कोई प्रश्न ही नही हैं। मतलब इस प्रकार के लोग किसी से भी प्यार नही करते।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

श्रीकृष्ण ने जारी रखा "ये चार तरह के लोग हैं। सबसे पहले वे लोग हैं जो दिव्य आत्म समाधी में लीन रहते हैं। उनकी इंद्रियाँ संसार का विषय ग्रहण नही कर सकती। वे कुछ और देखते ही नहीं। दूसरे वे लोग हैं जो दूसरों को देखते तो हैं लेकिन अनन्त आनंद का अपना लक्ष्य हासिल कर चुके हैं और इसलिए उन्हें दूसरों में कोई रूचि नहीं है। तीसरे वे हैं जो जानते नहीं कि कोई उन्हें प्यार करता है या नहीं। चौथे लोग गुरूद्रोही एवं गद्दार हैं जो एहसान फरामोश होकर अपने पर उपकार करने वाले लोगों को भूल जाते है या अपने पर उपकार करने वाले लोगों की हानी करते हैं।"

"प्रिय गोपियों, जो मुझसे प्यार करते हैं उन लोगों से मैं वैसा व्यवहार नहीं करता जैसा मुझे करना चाहिए।"

ये अत्यंत आवश्यक है कि इस बात को हम समझे। भगवान और महापुरूष के वाक्य, क्रिया, मुद्रा को सरस्वती, बृहस्पती भी नही जानत सकते तो इस मृत्युलोक के लोगों की क्या गिनती? वे प्यार किसीसे करते है लेकिन दिखाई कुछ और पडता है। उनके व्यवहार से उनके प्यार का अंदाजा नही लगाना चाहिए।

प्राय: जब जीव भक्ति करने लगता है तो सोचता है कि भगवान हमसे कितना प्यार करते है! भगवान का कानून है कि जो जीव उनसे जिस भाव से जितना प्रेम करेगा उस भाव के अनुसार उतना प्रेम उनको उस जीव से करना पडेगा। उसीसे समझ लेना चाहिए कि जितना प्यार हम उनसे करते है उतना प्यार वो कर रहे है। बिल्कुल नपा तुला। वहा ये नही देखना है कि संसारी लाभ या हानी हो रही है। वो तो अपने कर्मों के अनुसार होती रहेगी। उस हिसाब से तो हानी होने पर आप नास्तिक हो जायेंगे। जिस कर्म बंधन के कारण हमे दु:ख मिल रहा है उनको मिटाने के लिए ही तो जीव साधना कर रहा है। अंत:करण शुद्ध होने पर ही सब दु:ख मिटेंगे एवं दिव्यानंद मिलेगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

फिर भागवत ये भी कहती है कि भगवान जिस पर कृपा करते है उसका संसार छीन लेते हैं। संसार माने धन, प्रतिष्ठा, नातेदार आदि। क्योंकि इसी में तो मनुष्य उलझे हुए है जिसके कारण वे भगवान की ओर नही चल रहे है। जिनको आप अपने मानते हो वही तो आपकी आध्यात्मिक उन्नती में रोडा बने है क्योंकि जिस मन से भक्ति करनी है वे आपका मन आपके अपने लोगों में ही फँसा हुआ है।

जिन गोपियों को श्रीकृष्ण सबसे अधिक प्यार करते थे (क्योंकि गोपियाँ श्रीकृष्ण से सब महापुरूषों में सबसे अधिक प्यार करती

थी।) उनको तो सौ साल का विरह दिया और जो रानियाँ श्रीकृष्ण से 'कुछ तेरा कुछ मेरा' यानी कुछ अपना सुख भी चाहती थी उनको सहवास देकर बडे प्यार का व्यवहार किया। उसका भी कारण था कि गोपी विरह का दुःसह दुःख यदि रानियों को देते तो उनका प्यार नही टिक पाता जबकि उसी विरह के कारण गोपियों का प्यार प्रतिक्षण बढ़ता गया।

श्रीकृष्ण ने कहा, "मैं ऐसा इसलिए करता हूं ताकि उनका मन हमेशा मेरे में व्यस्त रहे क्योंकि मैं ही तो सुख हूँ। जब एक अमीर व्यक्ति अचानक अपनी संपत्ति खो देता है, तो वह लगातार अपनी खोई हुई धन के बारे में सोचता है और इसे बुरी तरह से वापस चाहता है। वैसे ही इस अनादि काल दुःखी जीव, उसको मैं अनंत सुख का धन मिल गया। जब इसे मेरे प्रस्थान पर वो खो देता है तो वह लगातार मेरे ही बारे में सोचता है और उस सुख को वापस चाहता है तो मेरे प्रति प्रेम बढ़ता है। प्रेम बढ़ने से मेरे वापस मिलने पर सुख में भी वृद्धी होती है। इसलिए आपका प्रेम बढ़ाने के लिए आप सब से अप्रत्यक्ष रूप से प्यार करते हुए भी मैंने खुद को छुपाया। मैं कही गया नही था बस आलक्षित होकर आप सब को देख रहा था।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

इसलिए आपको मेरे प्यार में गलती नहीं निकालनी चाहिए। तुम मेरे लिए सभी प्रिय हो और मैं तुम्हारे लिए प्रिय हूँ। प्रिय गोपियों! आपने परिवार और घर के बेड़ियों को काट दिया है जो महान योगी और तपस्वी के लिए भी संभव नहीं है। मेरे साथ आपका मिलन दिव्य, आत्मिक , शुद्ध और दोष रहित है। अगर मैं, अमर शरीर के माध्यम से, अनंत समय के लिए आपकी सेवा करता हूं, तो मैं भी आपके प्यार, सेवा और बलिदान ऋण चुका नहीं पाऊंगा। आप मुझे अपने कोमल स्वभाव से ऋण से मुक्त सकती हैं, लेकिन मैं हमेशा के लिए आपके लिए ऋणी रहूंगा। "

श्रीकृष्ण का उत्तर सुनकर गोपियों का श्रीकृष्ण के प्यार का

अब गोपियाँ और श्रीकृष्ण यमुना के तटों की चमकदार रेत पर गए। श्रीकृष्ण कई रूप धारण किए। इस प्रकार हर गोपी के साथ एक श्रीकृष्ण थे। हर गोपी को पहले जैसा ही लगा कि श्रीकृष्ण केवल उसके पास ही है। वे सभी परम सुख का अनुभव कर रही थी। रास की यह दिव्य खुशी भी देवी लक्ष्मी के लिए अनुपलब्ध है जो भगवान विष्णु की शाश्वत पत्नी है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

नृत्य शुरू हुआ। अपनी पत्नियों के साथ सभी स्वर्ग के देवता दिव्य नृत्य देखने के लिए उत्साहित थे। उन्होंने आकाश से फूलों की वृष्टी की। गोपियाँ श्रीकृष्ण के साथ अद्वितीय सुन्दर संगीत की धुनों की धुन पर नृत्य कर रहा थी उनके पायल, करधनी और चूड़ियों से एक सुरीला एवं मधुर संगीत की धुनी सब को मदमस्त कर रही थी। ये धुनी का संगीत तथा वाद्यों का संगीत मिलकर सभी एक और सुंदर संगीत बन गया था। गोपियाँ और श्रीकृष्ण गर्दन, आंखों, हाथों और पैरों मनभावन हावभाव के साथ शानदार ढंग से सुंदर कमनीय मुद्राओं केसाथ नृत्य कर रहे थे, कभी तेज़ तो कभी धीमे। गोपियाँ खूबसूरती से गा रहे थी। कभी-कभी गोपियाँ श्रीकृष्ण के लिए गाती थी तो कभी श्रीकृष्ण गोपियों के लिए गाते थे। आनंद रस की कोई सीमा नहीं थी। वातावरण पर दिव्य उत्साह छा गया था। गोपियों ईश्वरीय सुख का मधुप पान कर मदमत्त हो रही थी। बिजली सी गोपियों के बीच श्रीकृष्ण हल्के में नीले रंग की बादल की तरह सुशोभित हो रहे थे। हर गोपी ने हमेशा यही महसूस किया कि श्रीकृष्ण केवल उसके साथ थे और किसी और के साथ नहीं। नृत्य ब्रह्मा की एक रात तक जारी रहा। (4,29,40,80,000 वर्ष) इस अवधि के दौरान पूरे ब्रह्मांड को श्रीकृष्ण के योगमया की दिव्य शक्ति से सुला दिया था। नृत्य के बाद श्रीकृष्ण यमुना के पानी में गोपियों के साथ गए और सभी ने उन सभी खेलों का आनंद लिया जिसमें श्रीकृष्ण और गोपी ने एक-दूसरे को हाथ से पानी फेंक।

परमहंस शुकदेव रास का वर्णन कर रहे थे जैसा कि पहले कभी

नहीं किया गया था। लेकिन परीक्षित ने, जो इस वर्णन को सुन रहा था, एक प्रश्न पूछा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

"श्रीकृष्ण खुद भगवान थे। वह धर्म की रक्षा और पुनर्स्थापना करने के लिए पृथ्वी पर आये थे। फिर यह कैसे है कि श्रीकृष्ण ने दूसरों की पत्नियों के साथ नृत्य किया जो धार्मिक सिद्धांतों के खिलाफ है? श्रीकृष्ण आत्माराम है मसलब अकेले ही अनंत सुख का अनुभव करते है। उनको औरों से किसी भी तरह का आनंद नहीं चाहिए। फिर उन्होंने परस्त्रियों के साथ नृत्य क्यों किया? "

शुकदेव एहसास हुआ कि परीक्षित बस मुक्ति चाहते है। वह ईश्वर के कार्यों से जुड़ी दिव्यता को समझने में सक्षम नहीं होंगे और वह आगे के इस दिव्य खेल को सुनने के लिए योग्य नहीं है। उन्होंने अचानक रास के विवरण को समाप्त कर दिया। लेकिन इससे पहले उन्होंने परीक्षित के सवाल का जवाब दिया।

शुक देव ने कहा, "भगवान और संतों जैसे सक्षम व्यक्ति कभी-कभी धर्म के विपरित काम करते हुए देखे जाते है लेकिन यह उन परम उज्वल लोगों में कोई दोष नहीं लाता है। वे काम केवल जीव कल्याण के लिए ही हेते है। भलेही अल्पज्ञ जीव इसे ना समझ पाए। उदाहरण के लिए देखें, आग सबकुछ खाती है लेकिन आग अशुद्धता को भस्म कर देती है उससे अशुद्ध नहीं हो जाती। अक्षम मायिक व्यक्तियों को जिनके पास ऐसी (आध्यात्मिक) शक्ति नहीं है, कभी भी मन से भी इस तरह के कार्यों का अनुकरण करने के बारे में नही सोचना चाहिए, तो उन कार्यों का शारीरिक अनुकरण कल्पना से परे है। अगर कोई मूर्खता से ऐसा करता है, तो उसका विनाश निश्चित है। भगवान शंकर ने बेहद खतरनाक हलाहल जहर निगल लिया था। वे तो नीलकंठ से सुशोभित हो गये। लेकिन अगर कोई और ऐसा करता है, तो वह तुरंत राख में परिवर्तित हो जाएगा!

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

ईश्वरीय कार्य जो दिव्य है, उन्हे भरे और बुरे जैसे भौतिक विशेषणों द्वारा वर्णित नही किया जा सकता। ईश्वरीय कार्य पाप और पुण्य से परे होता है। जिन भगवान की के चरणधूल पाकर भक्त दिव्य अनन्त आनंद से अनुग्रहित हो जाते है, जिनका ध्यान करके योगी अपने स्वरूप में स्थित होकर दिव्य अनन्त आनंद का अनुभव करते है, जिनके बारे में सोचकर कि उनके दिव्य रूप में स्थापित होने के बारे में सोचकर दिव्य अनन्त ब्रम्हानंद का आस्वादन करते है और ये तीनो मायिक इंद्रिय सुख को विष्ठा समान त्याग देते है, वो भगवान खुद काम , क्रोध के कार्य में कैसे लिप्त हो सकता है?। जब भगवान को पानेवाला ही कर्म बंधन से मुक्त होकर स्वच्छंद विहार करता है , तो फिर भगवान कार्यों के कारण कोई भी बंधन के बारे में सोच सकता है? भगवान और संत लोगों के कार्य मायिक लोगों को दुःखार्णव से बाहर निकालने के लिए ही होते है। (उन्हें दिव्य दुनिया की खुशी के बारे में बताकर मायिक लोगों के सुधार के लिए)। जो गोपियाँ और उनके पतियों सहित हर दिल में रहता है, जो सब कुछ देखता है

जो हर किसी को कार्य करने की शक्ति देकर प्रेरित करता है और जो सब जीवों के एकमात्र है, वो भगवान किसी के लिए पराया कैसे हो सकता है? ईश्वर सभी जीवों को अनुग्रहित करने के लिए अपने भक्तों के साथ दिव्य लीलाएँ करता है, जिनको ताकि सुनकर जीव शाश्वत, अनंत, नितनवायमानऔर नित्य वर्धमान दिव्य आनंद प्राप्त कर सकें।

ब्रज के पुरुषों ने श्रीकृष्ण के बारे में किसी भी गलत के बारे में कभी सोचा नहीं था क्योंकि उन्हें हमेशा एहसास हुआ कि उनकी पत्नियां उनके साथ हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

शुकदेव ने कहा, "गोपियों को अपने घर लौटने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन श्रीकृष्ण के आदेश से वे घर गए थे क्योंकि वे अपनी हर कार्य से श्रीकृष्ण को खुश करना चाहती थी।" इस प्रकार शुक देव ने रास के विवरण को समाप्त कर दिया।

ये मुद्दा जो परीक्षित ने उठाया है उसे अधिक गहराई से निपटने की जरूरत है। यह वह जगह है जहां अधिकांश भौतिकवादी व्यक्ति गलती करते हैं और भौतिकवादी इच्छाओं को भगवान पर लाद देते हैं। भगवान यदि हमारे जैसा ही हो तो उसे पाने की जरूरत ही क्या है? फिर तो भगवान वैसा ही होगा जैसे हमारे माँ, बहन, भाई, स्त्री, पति है। उनका अनुभव तो हमारे पास विद्यमान है। उसके लिए भगवत्प्राप्ती आदि के परिश्रम करने की क्या आवश्यकता है? जो लोग भगवान पर काम, क्रोध जैसे मानवी दोषारोपण करते है वो भगवान किसे कहते है जानते ही नही। भगवान का मतलब ही है की वो इन सब दोषों से रहित है। भगवान के स्मरण करने मात्र से जीव इन दोषों से परे हो जाता है तो स्वयं भगवान में मायिक दोषों की कल्पना करना नितांत पागलपन है।

हम जानते हैं कि जब पुलिस अपराधी को मार देती है, तो उसे पुरस्कृत किया जाता है। लेकिन जब कोई गुनाहगार अन्य व्यक्ति को मारता है, तो उसे फांसी हो जाती है। हत्या की क्रिया समान है लेकिन मकसद और क्रिया के परिणामों में महद अंतर है। एक अन्य लोगों के लाभ के लिए है एक है जबकि दूसरी स्वार्थी मकसद के साथ है। इस प्रकार अपराध शारीरिक क्रिया नहीं है। अपराध मकसद या मनीषा होती है।

एक कुशल सर्जन रोगी को ठीक करने के लिए पेट में चाकू डालता है। उसका मकसद रोगी को राहत देना है। यदि आपराधी दावा करता है कि उसने पीड़ित के पेट में चाकू को भोंक दिया है इसलिए उसकी कार्रवाई को सर्जन के बराबर माना जाना चाहिए और इसलिए उन्हें क्षमा ही कयूं बल्कि पुरस्कार मिलना चाहिए तो अदालत मकसद की ओर निर्देश करते हुए सजा फर्माती है।

डॉक्टर मरीज की बीमारी ठीक करने के लिए उचित मात्रा में जहर को दवाई के रूप में प्रशासित कर सकता हैं लेकिन

हत्यारा, जो दूसरों को जहर दे कर मारता है, समान क्रिया के आधार पर सजा से बच नहीं सकता।

भगवान और संत के सभी कार्यों को अनिवार्य रूप से आत्मा के लाभ के लिए हैं। कारण? उनके पास कुछ हासिल करने के लिए कुछ शेष नहीं है क्योंकि भगवान तो खुशी का ही दूसरा नाम है। मतलब भगवान ही वो अनंत मात्रा का सुख है जो हर किसी की मांग है। संत वह व्यक्ति होते हैं जिन्होंने इस खुशी को हासिल किया है। दूसरे शब्दों में उनके उनके साथ भगवान है। वास्तव में, उन्हें अन्य आत्माओं की समस्याओं को देखने के लिए इस खुशी को दबाना पड़ता है। वे सर्जन की तरह हैं जो दूसरों के दिमाग की स्थिति देखते हैं और संबंधित व्यक्ति के दिमाग को शुद्ध करने के लिए उचित कार्रवाई करते हैं। इस प्रकार उनके सभी कार्य दूसरों को खुश करने की इच्छा से प्रेरित होते हैं। इसके अलावा, क्योंकि उनके पास ईश्वर की दिव्य शक्ति के माध्यम से प्राप्त एकदम सही ज्ञान है, उनके काम में कोई गलती नहीं हो सकती है। वे कभी गलत नहीं हो सकते।